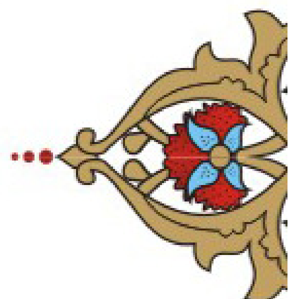
मज़हबे इस्लाम और

अल्लाह से मोहब्बत

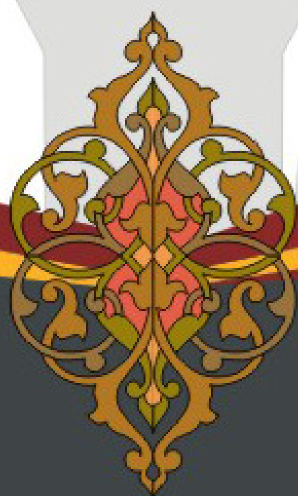
लेखक

शेख़े आज़म नाएफुल अबु ग़ज़ाला



अनुवादक

मुफ़्ति दिलशाद अहमद क़ादरी



इस्लाम और अल्लाह से मुहब्बत

लेखक (अरबी)

शेख़ हाज़िम नाइफ़ अबू ग़ज़ाला

अनुवादक

मुफ़्ती दिलशाद अहमद क़ादरी

प्रकाशक

ताजुल फ़हूल एकेडमी, बदायूँ

सिलसिला नं० 119

किताब	:	इस्लाम और अल्लाह से मुहब्बत
ेलेखक (अरबी)	:	शेख़ हाज़िम नाइफ़ अब ग़ज़ाला
अनुवादक (हिन्दी)	:	मुफ़्ती दिलशाद अहमद क़ादरी, ख़ादिम मदरसा आलिया क़ादरिया, बदायूँ
प्रथम संस्करण (हिन्दी)	:	1437 हि0/2015
प्रकाशक	:	ताजुल फ़हूल अकेडमी, मोहल्ला मौल्वी टोला, बदायूँ, (यू.पी.)
वितरण कर्ता	:	जामे नूर, देहली-6 ख़्वाजा बुक डिपो, देहली-6

फ़ेहरिस्त

इन्तिसाब

मैं अपनी इस किताब को

अपने पीरो–मुर्शिद

हज़रत शेख़ अब्दुल हमीद मुहम्मद सालिमुल क़ादरी बदायूनी

के

नाम

मन्सूब करता हूँ।

दिलशाद अहमद क़ादरी

ख़ादिमे मदरसा आलिया क़ादरिया,

बदायूँ

ज़रूरी बातें

शहीदे बग़दाद हज़रत शेख़ अल्लामा
उसैदुल हक़ क़ादरी मुहद्दिस बदायूनी

आलिमे रब्बानी आरिफ़ बिल्लाह शेख़े तरीक़त हज़रत हाज़िम नाइफ़ अबू ग़ज़ाला मद्दाज़िल्लहुल आली की किताब "अलमुहब्बतुल इलाहिया फ़िल इस्लाम" का हिंदी तर्जुमा "इस्लाम और अल्लाह से मुहब्बत" अहले ज़ौक़ की ख़िदमत में पेश करते हुए ताजुल फ़हूल एकेडमी बेहद ख़ुशी महसूस कर रही है।

किताब के लेखक हज़रत शेख़ हाज़िम अबू ग़ज़ाला नस्बन हुसैनी हैं। मज़हबे फ़िक़ही के ऐतबार से इमामे आज़म अबू हनीफ़ा के मुक़ल्लिद हैं। अक़ीदे में अशअ़री निसबत के हामिल हैं। मशरबन क़ादरी व शाज़ली हैं।

1932 ई. में आपकी विलादत हुई। दमिश्क में इल्म हासिल किया। मिस्र में भी कुछ तालीम हासिल की। आरिफ़ बिल्लाह शेख़ मुहम्मद हाशमी तलमसानी से ख़ास इल्मी फ़ायदा हासिल किया। मशहूर सूफ़ी, आरिफ़ और शेख़े तरीक़त हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर ईसा अल-हलबी (लेखक- हक़ाइक़ अ़न तसव्वुफ़) से तसव्वुफ़ व सुलूक की तालीम हासिल की और इजाज़तो-ख़िलाफ़त से नवाज़े गए।

उरदन (जार्डन) के दारुल हकूमत (राजधानी) में दारुल क़ुरआन के नाम से मस्जिद क़ायम की। वहीं आपकी ख़ानक़ाह भी है जहाँ से तबलीग़ो-इरशाद और तज़किया-ओ-तसफ़िया का सिलसिला जारी है। मजालिसे ज़िक्रो-फ़िक्र, दर्सो-तदरीस, तसनीफ़ो-तालीफ़, मुरीदीन व सालिकीन की रूहानी व अख़लाक़ी तरबियत आपके यहाँ होती रहती है। हर रोज़ रोज़ा रखते हैं, तहज्जुदगुज़ार हैं।

उरदन के अलावा ईराक़, नाईजीरिया और जुनूबी (दक्षिण) अफ़्रीक़ा में आपके बेशुमार शागिर्द और मुरीद व अक़ीदतमन्द मौजूद हैं। उनकी तालीमो-तरबियत के लिए आप उन मुल्कों का दौरा भी फ़रमाते हैं। इल्मे-कलाम, अक़ाइद, फ़िक़्क़ह, तजवीदो-तफ़सीर वग़ैरह में आपकी चालीस से ज़्यादा किताबें हैं।

एक मरतबा राक़िमुलहुरूफ़ (हज़रत शेख़ उसैदुलहक़ क़ादरी मुहद्दिस बदायूनी) को भी दारुल क़ुरआन, अम्मान में आपकी मजलिसे-ज़िक्र में हाज़िरी का मौक़ा नसीब हुआ है। इस मुबारक मजलिस में जो रूहानी कैफ़ो-सुरूर हासिल हुआ उसका इज़हार अलफ़ाज़ में मुमकिन नहीं है।

मेरे शेख़ और वालिदे मोहतरम हज़रत शेख़ अब्दुल हमीद मुहम्मद सालिम क़ादरी मद्दाज़िल्लहुल आली से शेख़ हाज़िम के निहायत गहरे ताल्लुक़ात, मुहब्बतो-उल्फ़त है। दोनों बुज़ुर्गों के दरम्यान जो अदब-ओ-एहतराम के मनाज़िर देखने में आते हैं उनको देखकर फ़ारसी का फ़िक़रा "वली रा वली मी शनासद" (यानी वली ही वली को पहचानता है) याद आ जाता है।

शेख़ अबू ग़ज़ाला की शख़्सियत बदायूँ वालों के लिए तआर्रुफ़ की मोहताज नहीं है। अक्टूबर 1998 ई. में ख़ानक़ाहे क़ादरिया के ज़ेरे एहतमाम बदायूँ में हज़रत ताजुल फ़हूल का उर्से सदसाला आलमी पैमाने पर मनाया गया था। जिसमें दीगर अरब के उलमा व मशाइख़ के अलावा शेख़ हाज़िम अबू ग़ज़ाला, अपने शागिर्द और ख़लीफ़ा हज़रत शेख़ सुआलेह आन्दी के साथ तशरीफ़ लाए थे।

रात की कान्फ़्रेंस में आपने तज़किया-ए-नफ़्स पर बेहद पुरमग़ज़ और जामे ख़िताब फ़रमाया था। इसके अलावा जामा मस्जिद शम्सी बदायूँ में ख़ुतब-ए-जुमा और नमाज़े जुमा की इमामत फ़रमाई थी।

ज़ेरे नज़र किताब "अलमुहब्बतुल इलाहिया फ़िल इस्लाम" (इस्लाम और अल्लाह से मुहब्बत) आपकी एक शाहकार तसनीफ़ (किताब) है।

आपने अपने क़लम से मुन्दर्जा ज़ैल (निम्नलिखित) अलफ़ाज़ तहरीर फ़रमा कर यह किताब हज़रत शेख़ हुज़ूर ताजदारे अहले सुन्नत मद्दाज़िल्लहुल आली की ख़िदमत में पेश की थी।

किताब अपने मौज़ू और उम्दा उसलूब दोनों एतबार से मौज़ू (इस्लाम और अल्लाह से मुहब्बत) का हक़ अदा कर रही है।

मुझे इस किताब के जिस पहलू ने सबसे ज़्यादा मुतास्सिर किया वह इसके लेखक का आरिफ़ाना और दाइयाना उसलूब है जिससे यह अन्दाज़ा करना मुश्किल नहीं कि किताब के लेखक सिर्फ़ साहिबे-क़ाल (तक़रीर वाले) ही नहीं बल्कि साहिबे हाल (शरीअतो-तरीक़त पर चलने वाले) भी हैं और उनके सीने में मुहब्बते इलाही का एक दरिया बह रहा है।

चन्द साल पहले जब मैंने इस किताब का मुताल्आ (अध्ययन) किया था उसी वक़्त यह ख़्याल पैदा हुआ था कि इस किताब का उर्दू तर्जुमा होना चाहिए। मैं ख़ुद ही इसका तर्जुमा करने का इरादा रखता था मगर कुछ दूसरी इल्मी और तसनीफ़ी मसरूफ़ियात के सबब इस इरादे को अमली जामा नहीं पहना सका। मैंने अपनी इस ख़्वाहिश का इज़हार अज़ीज़ी मौलाना दिलशाद क़ादरी (मुदर्रिस मदरसा आलिया क़ादरिया, बदायूँ) से किया। उन्होंने यह ज़िम्मेदारी क़ुबूल की और बड़ी मेहनत, महारत और ख़ुशउसलूबी के साथ किताब का तर्जुमा मुकम्मल किया।

किताब पर इशाअ्त की सन दर्ज नहीं है। दूसरी मर्तबा यह किताब दारुल इमाम अल-नववी अम्मान से 1411 हि./1991 ई. में शाया हुई है। किताब की यही इशाअ्त तर्जुमा निगार के पेशे नज़र थी।

आज का इन्सान दुनियादारी, ख़्वाहिशाते नफ़सानी और माद्दा-परस्ती में ऐसा गिरफ़्तार हो गया है कि उसने अपनी मुहब्बत का क़िब्ला अपने महबूबे हक़ीक़ी से फेर कर दुनिया और एहले दुनिया की तरफ़ दुरुस्त कर लिया है, ऐसे हालात में ज़रूरी है कि एक बार फिर उसके तारीक

सीने में उसके महबूबे हक़ीक़ी की शम्मा-ए-मुहब्बत फ़रोज़ाँ करने की कोशिशें की जायें, "भटके हुए आहू (हिरन)" को "सूये ह़रम" (मक़ाम की तरफ़) ले चलने की ज़िम्मेदारी माज़ी (पिछले दौर) में भी ख़ानक़ाहों ने ब-हुस्नो ख़ूबी अंजाम दी है और आज भी ये काम ख़ानक़ाहों के ज़रिये अहसन तरीक़े से अंजाम पा सकता है, बशर्ते कि अरबाबे ख़ानक़ाह अपनी इस ज़िम्मेदारी का एहसास करते हुए ख़ुद को इस अज़ीम और अहम मन्सब के लिये तय्यार करें।

बिफ़ज़्लिही तआला ख़ुद्दामे ख़ानक़ाहे क़ादरिया को अपनी इस ज़िम्मेदारी का एहसास है, जिसके नतीजे में ख़ानक़ाह क़ादरिया तहरीरो-तक़रीर, दर्सो-तदरीस और नशरो-इशाअ़त के अपने मुख़्तलिफ़ वसाइल के साथ इस मैदान में सरगर्मे अमल है। ज़ेरे नज़र किताब का तर्जुमा और इशाअ़त ख़ानक़ाहे क़ादरिया बदायूँ की जानिब से की जाने वाली इन्हीं मुख़्लिसाना कोशिशों का एक हिस्सा है।

मुझे उम्मीद है कि ये किताब अवामो-ख़वास दोनों के लिये मुफ़ीद साबित होगी, इसके ज़रिये से दिलों में मुहब्बते हक़ीक़ी के चिराग़ रौशन होंगे, अगर सीने में एक मर्तबा इश्क़ की चिंगारी भड़क उठी तो उसको शोला-ए-जव्वाला बनते देर नहीं लगती।



मुहब्बत का मतलब

मुहब्बत उस मुबारक हालतो–कैफ़ियत का नाम है जिसकी शहादत ख़ुद ख़ालिक़े कायनात ने दी और इस बात से आगाह फ़रमाया कि वह (अल्लाह तआला) अपने बन्दे से मुहब्बत करता है, लिहाज़ा अल्लाह की एक सिफ़त अपने बन्दे से मुहब्बत करना भी है और बन्दा भी अपने रब से मुहब्बत करे उसके दिल में भी यह बात डाली गयी है।

उलामा–ए–किराम फ़रमाते हैं कि मुहब्बत 'इरादत' को कहते हैं, ख़ुदा अपने बन्दे से मुहब्बत करता है इससे मुराद ये है कि उसने अपने बन्दे पर ख़ास इनआम–ओ–इकराम फ़रमाने का इरादा किया है, जैसा कि अल्लाह की रहमत से मुराद इनआम का इरादा फ़रमाना है, लेकिन रहमत इरादे की बनिस्बत ख़ास है ओर मुहब्बत रहमत से ज़्यादा ख़ास है (इस लिये कि सिर्फ़ इरादा आम है जो इनआम–ओ–इकराम और सवाबो–सज़ा सबको शामिल है और रहमत इरादे की तरफ़ नज़र करते हुए ख़ास है, क्योंकि रहमत सिर्फ़ इनआम–ओ–इकराम के इरादे को कहते हैं, फिर मुहब्बत रहमत से ज़्यादा ख़ास है क्योंकि मुहब्बत को एक मख़सूस इनआम के इरादे से ताबीर किया जाता है।)

अब अल्लाह का ये इरादा करना कि बन्दे को वो सवाब और इनआम अता फ़रमायेगा तो इस इरादे को रहमत समझा जायेगा और अल्लाह का ये इरादा करना कि वह बन्दे पर नज़दीकी और इनायात के ज़रिये ख़ास इनआम फ़रमाये तो इस इरादे को मुहब्बत से ताबीर किया जायेगा। 'इरादा' अल्लाह तआला की एक सिफ़त है लेकिन इस तारीफ़ और ताल्लुक़ात के सबब उसके नाम अलग– अलग हो जाते हैं। जब इस सिफ़त का ताल्लुक़ उक़ूबत (सज़ा) से होता है तो उसका नाम ग़ज़ब

रखा जाता है और इस सिफ़त का ताल्लुक़ आम नेअ्मतों से होता है तो उसे रहमत के नाम से जाना जाता है और जब इस सिफ़त का ताल्लुक़ ख़ास इनआम से होता है तो इसका नाम मुहब्बत रखा जाता है।

मुहब्बत का लुग़त में मतलब (अर्थ)

उर्दू लुग़त में मुहब्बत शब्द "हुब्ब" चाहत की सफ़ाई और निखार का नाम है, इसलिये कि अहले अरब दांतों की सफ़ाई और इसकी तरो-ताज़गी को "हुब्बुल असनान" कहते हैं। हांडी, देगची वग़ैरा में इन्तिहाई जोशो-उबाल के वक़्त पानी के ऊपर जो चीज़ आ जाती है उसे हुबाब कहते हैं। इस अर्थ की वजह से मुहब्बत (प्रेम) दिल के उस जोश और बेक़रारी को कहेंगे जो प्यास और महबूब से लिक़ा (मिलन) के वक़्त बेचैनी की हालत महसूस होती है।

"हुब्ब" के ताल्लुक़ से एक क़ौल ये भी नक़ल किया गया है "हुब्ब" लुज़ूमो-सिबात से जुड़ा है। जब ऊँट ज़मीन से इस तरह चिमट जाये कि वो खड़ा न हो तो इस हालत को "अहब्बल-बई़रु" से ताबीर किया जाता है। "हुब्ब" को लुज़ूमो-सिबात से जुड़ा मानने की सूरत में मुहिब (प्रेमी) उसको कहेंगे जिसके दिल से महबूब का ज़िक्र जुदा न हो, वो हमेशा महबूब की याद में तड़पता रहता है।

एक कथन के अनुसार "हुब्ब" 'ह़ब' से बना है और ह़ब ह़ब्बा की जमा है और ह़ब्बतुल-क़ल्ब उस चीज़ को कहा जाता है जिससे दिल का क़िवाम हो, इस अर्थ के अनुसार इस कैफ़ियत (दशा) का नाम "हुब्ब" इसके ज़रूरत के नाम पर रखा गया है। कहा गया है कि "हुब्ब" उन चार लकड़ियों को कहते हैं जिन पर घड़ा रखा जाता है। इस अर्थ के अनुसार मुहब्बत का नाम "हुब्ब" इसलिये रखा गया है कि मुहब्बत करने वाला महबूब की ओर से हर इज़्ज़तो-ज़िल्लत बरदाश्त करता है, जिस तरह चार लकड़ियों से घड़ा रखने के लिये घड़ौंची बनाई जाती है जो घड़े का भार बरदाश्त करती हैं।

"हुब्ब" के ताल्लुक़ से एक कथन ये बयान किया जाता है "हुब्ब" 'हिब्ब' से निकला है और हिब्ब उस घड़े को कहते हैं जिसमें पानी भरा हुआ हो और वो घड़ा अपने अन्दर भरी हुई चीज़ के अलावा ग़ैर की गुंजाइश न रखता हो, ठीक इसी तरह मुहिब्ब (प्रेमी) का दिल जब मुहब्बत से भर जाता है तो इस दिल में महबूब (प्रिय) के सिवा किसी के लिये गुंजाइश नहीं होती है।

"हुब्ब" बुग़्ज़ की ज़िद है, जब 'उहिब्बहु' (मैं फ़लाँ से मुहब्बत करता हूँ) जुमला बोला जाता है तो मुहब्बत करने वाले को "मुहिब्ब" और जिससे मुहब्बत की जाये उसे "महबूब" कहते हैं। "हुब्ब" को अगर 'हिब' पढ़ा जाये तो इसका इस्तेमाल हबीब और महबूब दोनों माअ्ना में हुआ है।

सय्यदना ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु को 'हिब्बु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम' पुकारा जाता है यानी हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम के महबूब।

फ़रानहवी कहते हैं कि हबीब कभी "रफ़ीक़" के माअ्ना (अर्थ) में भी आता है। "हुब्बिबा इलैहिल अम्र" उस वक़्त बोला जाता है जबकि कोई शख़्स किसी अम्र (अमल) को अज़ीज़ो-महबूब रखे। "वहुम य-त-हाब्बूना" के माअ्ना हैं कि वो आपस में मुहब्बत करते हैं।

मुहब्बत का इस्तिलाही मफ़हूम-

इस्तिलाह में "हुब्ब" आपस में मुहब्बत, लुत्फ़ो-महेरबानी, ईसारो-क़ुर्बानी के अलावा ईमानो-अमल को कहा जाता है।

मुहब्बत के दर्जात (श्रेणियाँ)-

शेख़ इब्ने क़य्यिम अल-जोज़िया ने अपनी किताब "अलजवाबुल काफ़ी लिमन सअ्ल अ्निद्दवाउशशाफ़ी" में मुहब्बत के दर्जात बयान किये हैं, जो निम्न हैं:-

1. अत्ताब्बुद- ताअ्ब्बुद उस मुहब्बत को कहा जाता है जो महबूब के

वास्ते आजिज़ी-ओ-इन्किसारी और ताबेदारी के साथ हो। जब कोई मनुष्य किसी से मुहब्बत करता है और उसका आज्ञाकारी हो जाता है तो उसका हृदय अपने प्रिय का दास हो जाता है। 'ताबुद' मुहब्बत (प्रेम) के दरजातो-मरातिब (श्रेणियों व पदों) में सब से अन्तिम स्थान है और उसे 'ततीम' भी कहा जाता है। इसलिये कि ये मुहब्बत का सबसे पहला स्थान व इलाक़ा है। मुहिब्ब (प्रेमी) और महबूब (प्रिय) को ताल्लुक़ को "अलाक़ा" कहते हैं।

2. अस्सबाबा- मुहब्बत के दूसरे स्थान पर सबाबा है। महबूब की ओर से दिल के माइल (आकर्षित) होने की वजह से मुहब्बत का नाम सबाबा रखा गया है। शायर कहता है-

अर्थ (1)- सोज़िशे इश्क़ का गिरफ़्तार दीवाना शिकायत करते हुए कहता है काश मैं इन (दुखों, तकलीफ़ों) को अकेला सहन करता जो आशिक़ों (प्रेमियों) ने उठाये हैं।

अर्थ (2)- तो मुहब्बत की तमाम लज़्ज़तें (स्वाद) केवल मेरे ही हृदय के वास्ते होतीं, काश लज़्ज़तों को न मुझसे पहले कोई मुहिब्ब (प्रेमी) पाता और न मेरे बाद।

3. अल-ग़राम- उस प्रेम व समर्पण को कहते हैं जो मुहिब्ब (प्रेमी) के हृदय में बैठ जाये कि वो फिर उससे जुदा न हो। ग़राम से ग़रीम (ऋण देने वाला) बना है, इसलिये कि ग़रीम अपने क़र्ज़दार (ऋणी) से चिमट जाता है यानी लगातार क़र्ज़ की अदायगी के लिये तक़ाज़े करता है।

4. अल-इश्क़- मुहब्बतो वारफ़्तगी (प्रेम व समर्पण) की अति अधिकता को इश्क़ कहा जाता है। लिहाज़ा अल्लाह इस सिफ़त के साथ मुत्तसिफ़ नहीं है और न ही अल्लाह के हक़ में इस शब्द का इतलाक़ किया जाता है।

5. अश्शौक़- महबूब की ओर दिल के आकर्षण और झुकाव को शौक़

से मौसूम (सम्बोधित) करते हैं। शौक़ मुहब्बतो-उल्फ़त से पैदा होता है। इस शब्द का इतलाक़ (बोलना) अल्लाह तआला के हक़ में भी शरीअ़त में आया है। इमाम अहमद बिन हम्बल ने अपनी मुसनद में हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से नक़ल किया है कि वो अपनी नमाज़ में इसी तरह दुआ करते थे जिस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे और हुज़ूर अलैहिस्सलाम दर्ज ज़ैल (निम्नलिखित) कल्मात दुआ में पढ़तेः-

अर्थः- ऐ अल्लाह! मैं तेरे फ़ज़्लो-करम वाले वजह करीम की जानिब देखने की लज़्ज़त का सवाल करता हूँ और मैं तुझ से तेरी मुलाक़ात के शौक़ को माँगता हूँ और तेरी लिक़ा (दीदार, दर्शन) ऐसी हालत में हो जिस में किसी नुक़सान वाले, गुमराह फ़ितने का ख़ौफ़ न हो।

हदीस में हैः-

मेरी मुलाक़ात के लिये सालिहीन का शौक़ तवील हो गया और मैं भी उनसे मुलाक़ात का बेहद शौक़ रखता हूँ।

6. **अत्ततय्युम-** ये मुहब्बत के दर्जों में सब से आख़िरी स्थान रखता है। जब मुहिब्ब (प्रेमी) महबूब (प्रिय) का ग़ुलामो-ख़ादिम (सेवक, दास) हो जाये तो इस हालत को "ततय्युम" कहते हैं। जब कोई किसी का दास बन जाये तो 'तयम्महुल-हुब्ब' (प्रेम ने उसे दास बना दिया) वाक्य बोला जाता है। "ततय्युम" से 'तयम्मुल्लाह' (अल्लाह का बन्दा व ख़ादिम) निकला है। "ततय्युम" की हक़ीक़त महबूब के लिये आजिज़ी व इन्किसारी और ताबेदारी है। इस से अहले अरब "तरीक़े मअ़बद" कहते हैं अर्थात वो रास्ता जिसे क़दमों ने पामाल (ध्वस्त) कर दिया हो, इसलिये बन्दा वो है जिसे महबूब की मुहब्बत (प्रिय के प्रेम) ने अपना ताबेदार और फ़रमाँबरदार (आज्ञाकारी) बना लिया हो। यही कारण है कि बन्दे के तमाम अहवालो-मक़ामात (हालात) में सबसे अशरफ़ो-अफ़ज़ल

(बंलन्द-बहतर) मक़ामे उबूदियत (बन्दगी) है, इससे अशरफ़ कोई मन्ज़िल नहीं। लिहाज़ा अल्लाह तआला ने अपने सबसे महबूबो-मुकर्रम रसूल को उनके सबसे आ़ला मक़ाम (उच्च स्थान) यानी मेअ्राज के ज़िक्र में "सिफ़ते उबूदियत" के साथ ज़िक्र फ़रमाया है। आपके इस मक़ाम का ज़िक्र सूरह-ए-इसरा में है, अल्लाह तआला फ़रमाता हैः-

अर्थः- पाक है वो ज़ात जिसने रात के कुछ हिस्से में अपने बन्दे को मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा तक सैर कराई। (अल-इसराः 1)

और अल्लाह ने इस सिफ़त (विशेषता) को दावत इलल्लाह के मक़ाम में ज़िक्र फ़रमाया है। बारी तआला इरशाद फ़रमाता हैः-

अर्थः- और जब अल्लाह के बन्दे (मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह की इबादत के लिये खड़े हुए तो वो (यानी जिन्न) उन पर हुजूम दर हुजूम जमा हो गये। (अल-जिन्न : 19)

दूसरी जगह अल्लाह तआला ने फ़रमाया-

अर्थः- अगर तुम इस चीज़ में शक करते हो जो हमने अपने बन्दे पर उतारी है (यानी कि क़ुरआन) तो तुम एक सूरत ही इसकी जैसी ले आओ। (अल-बक़राः 23)

मक़ामे अब्दियत मुहब्बत के मक़ामात में सबसे मुकम्मल और ईमान के हक़ीक़तों में सबसे बरतर (ऊँचा) है।

7. अल-ख़ुल्ला- ख़ुल्लत मुहब्बत के कमालो-इन्तिहा का वो मक़ाम है जहाँ पहुँचकर मुहिब्ब के दिल में महबूब के सिवा किसी के लिये कोई गुंजाइश बाक़ी नहीं रहती है। ख़ुलत ऐसा मन्सब है जो किसी भी ऐतबार से शिरकत (साझे) को क़ुबूल नहीं करता है। ये मन्सब अल्लाह के दो ख़लील (मित्र) हज़रत इब्राहीम और हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिये मख़्सूस (विशेष) है जैसा कि रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस मक़ाम का इज़हार फ़रमायाः-

> "अल्लाह ने मुझे अपना ख़लील (दोस्त) बनाया जिस तरह इब्राहीम को ख़लील बनाया। (इबने माजह)"

सहीहैन में हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमायाः-

> "अगर मैं अहले ज़मीन में से किसी को अपना ख़लील (मित्र) बनाता तो अबूबक्र को बनाता, लेकिन तुम्हारे साहब (हुज़ूर पुरनूर अलैहित्तहिय्यतु वत्तस्लीम) अल्लाह के ख़लील हैं। (बुख़ारी, मुस्लिम)।"



दूसरी शरीअ़तों में अल्लाह से मुहब्बत

इस्लाम और अल्लाह से मुहब्बत-

इस्लाम में अल्लाह से मुहब्बत रब और बन्दे के उस ताल्लुक़ का नाम है जो दिल की बसीरत (रौशनी) और रूह (आत्मा) के इत्तिसाल (मिलन) के साथ हो न कि महज़ अक़ली मोशगाफ़ियों (बातों) और कलामी बहस की बुनियाद पर, क्योंकि इल्मे-कलाम की ये अक़्ली बहसें (वाद-संवाद) ख़ुश्क व दक़ीक़ असबाक़ (मुश्किल सबक़) के इर्द-गिर्द घूमती रहती हैं जिनसे न तो मुहब्बते इलाही पैदा होती है और न अल्लाह की मआ़र्फ़त हासिल होती है। ये अक़्ली बहसें न शौक़ के जज़्बे को उभारती हैं और न अख़लाक़ को संवारती हैं।

शेख़ सय्यदी मुह़ी उद्दीन इब्ने अरबी "तर्जुमानुल अशवाक़" में फ़रमाते हैं-

> यहाँ इस दीन (इस्लाम) से ज़्यादा मुकम्मल कोई दीन नहीं जिसकी बुनियाद ही हर उस शख़्स के लिये मुहब्बत और शौक़ पर क़ाइम है जो इस दीन पर अमल पैरा हो, ये वस्फ़ उम्मते मुहम्मदिया अ़ला साहिबहुस्सलातु वस्सलाम के साथ मख़सूस है, इसलिये कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मक़ामे मुहब्बत जुमला अंबिया से ज़्यादा हासिल है, इसके अलावा आपको दीगर अंबिया के मुक़ामात भी हासिल हैं मसलन आप सफ़ी, नजी, ख़लील वग़ैरा भी हैं, अल्लाह ने हुज़ूर को अपना मुह़िब्बो-महबूब बनाकर तमाम अंबिया पर फ़ौक़ियत (बुलन्दी) अता की है। हुज़ूर के वारिसीन भी आपके तरीक़े पर चलते हैं।

इमामुल मुहिब्बीन सय्यदी इब्नुल फ़ारिज़ रह० फ़रमाते हैं-

अर्थः- मुहब्बत के सिलसिले में मेरा मज़हब मालूम किया जाता है,

मुहब्बत में मेरा मज़हब वो है कि जिससे एक दिन भी अगर मैं ग़मगीन और रंजीदा हो जाऊँ तो मैं अपनी क़ौम से जुदा हो जाऊँगा।

अर्थः- अगर मेरे दिल में भूले से भी तेरे सिवा किसी का ख़याल आ जाए तो मैं बे दीन हो जाऊँगा।

डॉ० मुस्तफ़ा हलमी इब्नुल फ़ारिज़ के कलाम पर रौशनी डालते हुए फ़रमाते हैंः-

> जब हम इब्नुल फ़ारिज़ और इब्ने अरबी अलैहिर्रहमा के मुहब्बत को दीन बनाने के मुताल्लिक़ ग़ौरो-फ़िक्र करते हैं कि उन्होंने दीने मुहब्बत को दीने इस्लाम का दूसरा नाम माना है या इस्लाम से ऐसा दीन हासिल किया है जिसके सुतून मुहब्बत और वो मआना हैं जिन पर मुहब्बत मुश्तमिल है यानी यक़ीन और ताबेदारी (आज्ञाकारी), महबूब से इरादतो अक़ीदत रखना, तो मालूम हुआ कि ये तमाम वो मआना हैं जिसमें मुहब्बत और इस्लाम यकसाँ तौर पर शरीक हैं।
>
> *(किताब इब्नुल फ़ारिज़ वल-हुब्बुल इलाही, डॉ० मुस्तफ़ा हिलमी)*

शेख़ मुही उद्दीन इब्ने अरबी के कलाम में यह बात मौजूद है कि मक़ामे मुहब्बत सिर्फ़ मुसलमानों की ख़ुसूसियत है और इस ख़ुसूसियत का मरजा-ए-मुक़ाम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। इसलिये कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम को तमाम अंबिया पर जो मुमताज़ मक़ाम हासिल है वो मक़ामे मुहब्बत है। लिहाज़ा हुज़ूर अलैहिस्सलाम सफ़ी, नजी, ख़लील जुमला औसाफ़ के साथ मुत्तसिफ़ हैं।

ईसाइयत और यहूदियत में मुहब्बते इलाही का तसव्वुरः-

मज़हबे मसीहियत (ईसाइयत) अक्सर मुहब्बत के सिलसिले में गुफ़्तगू करता है मगर वो इस्लामी मुहब्बते इलाही से नाआशना (अपरिचित) है, इसने इस मुहब्बत का ज़ाइक़ा भी नहीं चखा बल्कि वो उस मुहब्बत सल्बिया को जानता है जो गोशानशीनी (एकान्तावास) और

अलैहिदगी (जुदाई) की तालीम (शिक्षा) देती है। मुहब्बत-ए-सल्बिया का ना तो ज़िन्दगी से कोई सम्बन्ध है और न कायनात (ब्रह्माण्ड) से, और न कोई ऐसा वास्ता है जो इस मुहब्बत को मआ़रिफ़े-दीनिया से हमआशना (परिचित) कर दे। ये मुहब्बत तो सरासर गोशानशीनी और रहबानियत है।

उमैलुलवदफ़ीज कहते हैं किः-

> हज़रत मसीह अल्लाह और मज़हबे मसीहियत के मानने वाले के बीच हाइल रहते हैं बल्कि हज़रत मसीह अल्लाह को मानने वालों को अहले मसीहियत से रोके रखते हैं, मैं हज़रत मसीह की उस शख़्सियत से वाक़िफ़ हो चुका हूँ जो अल्लाह और मसीहियों के बीच है (यानी अहले मसीहियत हज़रत मसीह को अल्लाह का बेटा मानते हैं) लिहाज़ा उनके ख़याल में दो शख़्सियतों का इम्तिज़ाज (मिश्रण) है, इस इम्तिज़ाज ने जज़्बात को तक़्सीम करके बेचैन कर दिया (दीदारे इलाही) के शौक़ को पारा-पारा (छिन्न-भिन्न) कर दिया।

मज़हबे यहूदियत भी बज़ाहिर तौहीदो-वहदानियत पर ज़ोर देता है, लेकिन वो भी मुहब्बते इलाही की उस लज़्ज़त को नहीं जानता है जो रब और बन्दे के पाकीज़ा ताल्लुक़ (पवित्र सम्बन्ध) और लिक़ाए परवर्दिगार (दीदारे इलाही) पर क़ाइम है जैसा कि वुदफ़ैज ने साबित किया है कि यहूदियों के नज़दीक अल्लाह जब्बार और मुन्तक़िम (बदला लेने वाला) है। वो अपने बन्दे पर आसमान से बिजलियाँ गिराता है, पाकीज़ा चीज़ों को उन पर हराम कर देता है और इन्हें मुसीबतों और अज़ाबों के ज़रिये नेस्तो-नाबूद (नष्ट) कर देता है, लिहाज़ा यहूदी अल्लाह के मुताल्लिक़ तशद्दुद पसन्दाना फ़िक्र रखते हैं और इस तशद्दुद पसन्दाना फ़िक्र (हठधर्मी) ने यहूदियों को उन्सियत, मुहब्बतो-उल्फ़त, अल्लाह से नज़्दीकी जैसे अज़ीम मआनी की जानिब सोचने का मौक़ा ही नहीं दिया, इस

तशद्दुद पसन्दाना फ़िक्र (हठधर्मी) के बाइस (वजह) वो भूल गये कि दरहक़ीक़त अल्लाह तआला रह़मानो-रह़ीम है, वो मोमिन बन्दों से मुहब्बत फ़रमाता है और मोमिन बन्दे भी उससे मुहब्बत करते हैं, अल्लाह ईमान वालों से राज़ी होता है और बन्दे भी उससे राज़ी रहते हैं। रब और मोमिन बन्दे इन सिफ़ाते करीमा और औसाफ़े जमीला से पहचाने जाते हैं जो मुहब्बत और शौक़ पर क़ाइम हैं और दीने मुहम्मदी से मुहब्बत करने वाले की नज़र में उन्स और रज़ा मुहब्बत और शौक़ के ताबे (अधीन) हैं।

यूरोपी फ़लसफ़े में अल्लाह से मुहब्बतः-

यूरोपी फ़लसफ़ा बन्दा व आक़ा के दरम्यान क़ल्बी व रूहानी ताल्लुक़ (सम्बन्ध) क़ाइम करने से क़ासिरो-आजिज़ (बेबस) रहा। फ़लसफ़ा-ए-यूरोप अक़्ल पर एतमाद (भरोसा) करता है और उसी पर यक़ीन रखता है, जिस तरह उसने अक़्लो-फ़हम के ज़रिये कीमियावी मवाद (दवाइयाँ) और अनासिरे तबीइया हासिल किये हैं, ठीक इसी नहज (तरीक़े) पर वह अक़्ल के ज़रिये मआ़र्फ़ते ख़ुदावन्दी के वसाइल दरियाफ़्त करना चाहता है, ये फ़लसफ़ा मुहब्बते इलाहिया के मौज़ू (विषय) पर ऐसी बहस करता है जो रूह और दिल से इन्तिहाई दूर है, इस फ़ल्सफ़े की अपने इब्तिदाए अहद (आरम्भिक काल) से हैगल और इस से इस्पिनोज़ा तक पहुँचने में यही तारीख़ रही है। बग़ैर किसी इख़्तिलाफ़ के यूरोपी फ़लसफ़ा मुहब्बते इलाही में इस्पिनोज़ा अहले यूरोप का नमूना-ए-कामिल और इमामे फ़ाइक़ है।

मुहब्बते इलाही इस्पिनोज़ा की नज़र मेंः-

इस्पिनोज़ा (Spinoza) समझते हैं कि मुहब्बत मआ़र्फ़ते ह़िस्सिया से पैदा होती है और मुहब्बत का समरा (फल) लज़्ज़ते अक़्लिया है, इसलिये कि लज़्ज़तों में सबसे अज़ीमो-बरतर लज़्ज़त (स्वाद) जो हम महसूस करते हैं वो लज़्ज़ते अक़्ली है जो मुहब्बत से पैदा होती है। इस्पिनोज़ा (Spinoza) के नज़दीक अल्लाह तआला की मुहब्बत,

मुहब्बते अक़्ली है जिसकी नश्वो-नुमा और मआ़र्फ़त, मआ़र्फ़ते-इस्तदलाली के तरीक़े से हासिल होती है। यूरोपी फ़िक्र की इस क़िस्म का नाम मुहब्बते अक़्ली रखा जाता है, आख़िरकार ये फ़लसफ़ा कोई बुलन्द रूहानी नताइज (परिणाम) नहीं देता, इसलिये कि मुहब्बते अक़्ली जिसकी तबीयत ख़ुश्क है और अक़्ल मुहब्बत के सिलसिले में कोई हुक्म नहीं रखती और अक़्ल न मुहब्बत का उनवान है और न इसका क़ासिद है, जैसा कि फ़रीद अत्तार फ़रमाते हैंः-

> ये अक़्ल ख़ुद शराब के एक घूँट में गुम हो जाती है तो किस तरह ये अज़ख़ुद मआ़र्फ़ते इलाहिया पर क़ादिर हो सकती है।

अल्लाह तआला की मआ़र्फ़त क़यास (अन्दाज़ा) के ज़रिये नामुमकिन है, इस लिये कि अल्लाह तआला की ज़ात बेमिसाल है, उसके मिस्ल कोई चीज़ नहीं। लिहाज़ा जिसने सिफ़ाते इलाहिया और मुहब्बते रब्बानिया के सिलसिले में अक़्ल को ह़कम (फ़ैसला करने वाला) बनाया वो ख़ताए फ़ाहिश (सख़्त ग़ल्ती) करने वाला हुआ क्योंकि अक़्ल जब अल्लाह तआला की ज़ातो-सिफ़ात का तसव्वुर करेगी तो यक़ीनन अल्लाह तआला के नफ़्स का तसव्वुर करेगी और उसकी सूरतों और ख़याल को चाहेगी (हालांकि ज़ाते परवर्दिगार हर तरह की शक्लो-सूरत से पाक है)। सिर्फ़ मुहब्बत ही मआ़र्फ़ते यक़ीनिया के हुसूल (हासिल करने) का तरीक़ा है और वो जमाल, कमाल, शौक़, इल्हाम और उन फ़यूज़ात के आलमों में दाख़िल होने की जादुई चाबी है जो क़ल्बी और रूह़ी मआ़नी से सजे होते हैं।

मशहूर शायर और सूफ़ी शेख़ जलाल उद्दीन रूमी फ़रमाते हैंः-

अक़्ल अक्सर बारीक व मुश्किल चीज़ों से बहस करती है, वो कायनात के निज़ाम की छान-बीन करती है। अच्छाई की तरफ़ रहनुमाई करती है लेकिन ये ठीक नहीं कि इन्सान इस अक़्ल के दर्जे पर ही रुक जाये।



हज़राते सूफ़िया-ए-किराम के नज़्दीक अल्लाह से मुहब्बत

मुहब्बत के ताल्लुक़ से हज़राते सूफ़िया किराम के मुख़्तलिफ़ इरशादात (क़ौल) दर्ज हैंः-

1. बाज़ सूफ़िया किराम फ़रमाते हैं कि दिल की अथाह गहराई से किसी की जानिब मज़बूत झुकाव का नाम मुहब्बत है।

2. महबूब को तमाम हमनशीनों पर फ़ौक़ियतो-तरजीह (अव्वलियत) देने का नाम मुहब्बत है।

3. मौजूदगी और ग़ैर मौजूदगी दोनों सूरतों में महबूब की बात मानना मुहब्बत है।

4. मुहब्बत करने वाला जब अपनी सिफ़ात को मिटा कर महबूब की ज़ात में फ़ना हो जाए तो ये मुहब्बत है।

5. दिल को अल्लाह तआला की मर्ज़ी व मुराद के मुताबिक़ फ़रमाँबरदार (आज्ञाकारी) बनाना मुहब्बत है।

हज़रत सहल रह० फ़रमाते हैं "इताअ्तो-फ़रमाँबरदारी से क़ुर्ब (निकटता) और मुख़ाल्फ़त व नाफ़रमानी से दूरी का नाम मुहब्बत है।" हज़रत जुनैद बग़दादी रह० फ़रमाते हैं- "महबूब की सिफ़ात मुहिब्ब की सिफ़ात में बदलियात के तौर पर दाख़िल हो जायें" (यानी मुहिब्ब अपनी सिफ़ात छोड़ कर महबूब की सिफ़ात का हामिल (अपनाने वाला) बन जाये इसी का नाम मुहब्बत है)। हज़रत जुनैद बग़दादी ने इस तारीफ़ से मुहि्ब्ब के मह्बूब के ज़िक्र में इस हद तक खोने की तरफ़ इशारा फ़रमाया है कि मुहिब्ब के दिल पर महबूब के सिफ़ात इस तरह घर कर जायें कि वो अपनी ज़ात और उसके अहसास से बिल्कुल बेफ़िक्र हो जाये। हज़रत अबू उबैद क़रशी फ़रमाते हैं कि मुहब्बत ये है कि तू अपनी हर चीज़ अपने महबूब को हिबा (क़ुर्बान) कर दे और कोई चीज़

तेरी अपनी बाक़ी न रहे।

शेख़ हारिस मुहासिबी फ़रमाते हैं कि तेरा पूरी तरह किसी चीज़ की तरफ़ माइल (आकर्षित) होना फिर उसको अपने नफ़्स, रूह, माल से बढ़कर समझना, फिर उसकी हर बात को हर तरह से मानना जिसका उसने हुक्म दिया हो, इसके बावजूद अपनी मुहब्बत में कोताही व कमी जानना, इसी का नाम मुहब्बत है। (किसी की मुवाफ़क़त करने का मतलब ये है कि जिसका वो हुक्म (आदेश) दे उस पर चलना और जिससे वो रोके, उससे रुक जाना)।

हज़रत शिबली अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं मुहब्बत करने वाला अगर ख़ामोश रहे तो हलाक हो जायेगा और आरिफ़-बिल्लाह अगर ख़ामोशी इख़्तियार न करे तो हलाको-बरबाद हो जायेगा।

बाज़ हज़रात के नज़्दीक ख़िदमतो-ताबेदारी करने के साथ इज़्ज़तो ताज़ीम के छूटने का ख़ौफ़ मुहब्बत है।

याहया बिन मआ़ज़ ने अबूयज़ीद की जानिब एक ख़त में लिखा कि "मैं मुहब्बत के कसीर (ज़्यादा) जाम (प्याला) पीने के सबब मदहोश हो गया हूँ" तो अबू यज़ीद ने याहया बिन मुआ़ज़ को जवाब में लिखा कि "आपके ग़ैर ने (यानी अबू यज़ीद ने) ज़मीनो-आसमान के समन्दरों को पी लिया फिर भी वो सैराब नहीं हुआ बल्कि उसकी ज़बान बाहर निकल कर *'हल मिम-मज़ीद'* की सदायें बुलन्द कर रही है।"

अबूबक्र अल-कित्तानी फ़रमाते हैं कि मक्का में हज के दिनों में मुहब्बत का मसअ्ला ज़ेरे-ग़ौर था और मशाइख़े किराम इसके मुताल्लिक़ गुफ़्तगू कर रहे थे, हज़रत जुनैद (रह०) उन हज़रात में सबसे कम उम्र थे, मशाइख़ ने आपसे कहा- ऐ इराक़ी! मुहब्बत के मुताल्लिक़ जो जानते हो उसे पेश करो। हज़रत जुनैद बग़दादी ने अपने सर को झुकाया और रोने लगे, फिर आपने फ़रमाया-

मुहब्बत दरहक़ीक़त उस बन्दे की है जो अपने नफ़्स को

भूलकर अपने रब के ज़िक्र से मिल जाये, परवर्दिगारे-आलम के हुक़ूक़ की अदायगी में लगा रहे, दिल से माबूदे हक़ीक़ी की जानिब मुतवज्जह रहे, अल्लाह की हैबत की तजल्लियों ने उसके दिल की गन्दगियों को जला दिया हो, उसने ख़ुदा की मुहब्बत के जाम से शराबे मआर्फ़त नोश की हो, और जब्बार ने उसके लिये अपने ग़ैब के पर्दे उठा दिये हों, ऐसा बन्दा जब कलाम करता है तो वह अल्लाह के बारे में कलाम होता है, जब वो बोलता है तो वो अल्लाह की जानिब से होता है और जब वो कोई हरकत करता है तो वो अल्लाह के हुक्म से होती है और जब वह ख़ामोश रहता है तो वो अल्लाह के साथ होता है, ऐसा बन्दा बिल्लाह वल्लाह व मअ़ल्लाह का मिस्दाक़ (बन जाता) है। (हज़रत जुनैद बग़दादी की ये तफ़सीर सुनकर) तमाम मशाइख़े किराम रोने लगे, फिर उन्होंने कहा- ऐ ताजुल-आरिफ़ीन! (अल्लाह आपकी हिफ़ाज़त फ़रमाए) मुहब्बत के सिलसिले में अब इस पर इज़ाफ़ा नहीं हो सकता।

(अल-रिसालतुल क़शीरिया)

सूफ़िया की एक बड़ी जमाअ़त का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि मुहब्बत दिल से मुवाफ़क़त (मान लेने) का नाम है। मुहब्बत मुख़ाल्फ़त व ग़ैरियत को नहीं चाहती है और वो हमेशा महबूब के साथ होता है, जब-जब मुहब्बत में इज़ाफ़ा होता है तो मुहिब्ब (प्रेमी) को महबूब (प्रिय) के हुक्म मानने में भी इज़ाफ़ा होता है, मुहब्बत में मुख़ाल्फ़त के लिये कोई जगह नहीं क्योंकि मुख़ाल्फ़त मुहब्बत में कमज़ोरी पैदा करती है और मुहिब्ब के दिल से नूरे मुहब्बत को ख़त्म कर देती है।

सय्यदी अब्दुल क़ादिर ईसा के नज़्दीक मुहब्बतः-

सय्यदी अब्दुल क़ादिर ईसा ने अपनी किताब "हक़ाइक़ अनित्तसव्वुफ़"

में ज़िक्र किया है कि अल्लाह तआला की मुहब्बत तमाम मक़ामात में बुलन्द तरीन मक़ाम है और दर्जात में सबसे अज़ीम (ऊँचा) दर्जा है, मुहब्बत में फ़ना होने के सिवा कोई दूसरा मक़ाम नहीं है और उसके तवाबेअ् व समरात, शौक़, उन्स, रज़ा वग़ैरा हैं और मुहब्बत से पहले सिवाए उसके मुक़द्दमात (जैसे तौबा, सब्र, ज़ुहद) के कोई मक़ाम नहीं होता है।

मुहब्बत की कोई ऐसी तारीफ़ बयान नहीं की जा सकती जो मुहब्बत से ज़्यादा वाज़ेह हो, मुहब्बत की तारीफ़ करना मज़ीद उसकी पोशीदगी में इज़ाफ़ा करना है, मुहब्बत का वुजूद ही उसकी तारीफ़ है, इसलिये कि तारीफ़ात उलूमो-फ़ुनून की हुआ करती हैं जबकि मुहब्बत एक ऐसी हालते ज़ौक़िया है जिसका फ़ैज़ान मुहब्बत करने वालों के दिलों पर होता है और सिवाय ज़ौक़े सलीम के इसे जानने का कोई ज़रिया-ओ-वसीला नहीं और जो कुछ भी मुहब्बत के ताल्लुक़ से कहा गया वो सब इसके असरात का बयान, नताइज की ताबीर और उसके उसलूब की वज़ाहत है। शेख़ अकबर रह० ने फ़रमाया कि लोग मुहब्बत की तारीफ़े हक़ीक़ी के मुताल्लिक़ अलग-अलग राय रखते हैं लेकिन मेरी नज़र में किसी शख़्स ने भी मुहब्बत की हक़ीक़ी तारीफ़ बयान नहीं की बल्कि उसकी तारीफ़े हक़ीक़ी ख़्याल में नहीं आ सकती और जो भी मुहब्बत की तारीफ़ बयान की गई वो सिर्फ़ मुहब्बत के नताइज, आसार और लवाज़मात हैं।

शेख़ अकबर मज़ीद (और) फ़रमाते हैंः-

> मुहब्बत ऐसी ग़ैर मुतय्यन चीज़ है मुतय्यन करना मुमकिन नहीं, वो ऐसा मजहूल है कि किसी भी सूरत में उसका इल्म हासिल नहीं हो सकता।

फिर आप अशआर के ज़रिये इस माअ्नी को समझाते हैंः-

अर्थः- मुहब्बत करने वाला हर हाल में मुहब्बत पर क़ाइम

रहता है, वो हर हाल में मुहब्बत से राज़ी है।

अर्थः- उसका महबूब उससे जैसी भी मुहब्बत करता है वो उससे राज़ी रहता है, मुहब्बत में दूरी और नज़्दीकी का कोई तसव्वुर नहीं है।

इब्नुद्दबाग़ रह० फ़रमाते हैंः-

मुहब्बत की हक़ीक़त को सिर्फ़ वही शख़्स पा सकता है जिसने इसका मज़ा चखा है और जो इसके मज़े से वाक़िफ़ हो गया तो फिर उस पर कैफ़ियत तारी हो जाती है, इस लिये कि उसके लिये मुहब्बत का मज़ा बयान करना मुमकिन नहीं होता। इसकी मिसाल उस शख़्स की तरह है जो नशे की हालत में है, अगर उस से नशे की हक़ीक़त के बारे में मालूम किया जाए तो नशा उसकी अक़्ल पर छा जाने के सबब वो उसकी हक़ीक़त के बारे में बयान नहीं कर सकता। (शराब और मुहब्बत) दोनों नशों में फ़र्क़ ये है कि शराब का नशा कुछ देर का है जिसका उतर जाना मुमकिन है और उसे नशा उतरने के बाद बयान किया जा सकता है, लेकिन मुहब्बत का नशा और उसकी मदहोशी हमेशा की है, जिसको ये नशा लाहक़ हो गया फिर उसका इससे उतरना नामुमकिन है। लिहाज़ा वो मस्तो-मदहोश उसकी हक़ीक़त के बारे में कैसे बता सकता है? इसी लिये मुहब्बत के सिलसिले में कहा गया हैः-

तर्जुमा- शराब पीने वालों का नशा उतर जाता है और इश्क़ ऐसा नशा है जो हमेशा क़ाइम रहता है।

जब हज़रत जुनैद बग़दादी अलैहिर्रहमा से मुहब्बत के मुताल्लिक़ पूछा गया तो आपने फ़रमाया-

आँखों का आँसू बहाना और दिल का शौक़े यार में धड़कना

मुहब्बत है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बहुत सी अहादीसे मुबारका में अल्लाह और उसके रसूल की मुहब्बत को ईमान के शराइत में शुमार किया है। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने एक हदीस में फ़रमायाः-

> तुम में से कोई उस वक़्त तक मोमिने कामिल नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके नज़्दीक उसकी जान व माल उसकी औलाद और तमाम लोगों से ज़्यादा महबूब न हो जाऊँ। (बुख़ारी, मुस्लिम, नसाई, इब्ने माजह, इब्ने हिब्बान, अहमद बिन हंबल)

मुहब्बत की फ़ज़ीलत के लिये इतना ही काफ़ी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुहब्बत करने वाले अपने महबूबों को सोहबत व हमनशीनी (संगत) और जन्नत में रिफ़ाक़त (साथ रहने) की ख़ुशख़बरी दी है। हज़रत अबू मूसा अशअ्री रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत हैः-

> एक शख़्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया रसूलल्लाह एक शख़्स किसी जमाअ्त से मुहब्बत करता है और इनसे उसकी मुलाक़ात नहीं हुई है, तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया- आदमी (जन्नत) में उसी के साथ होगा जिससे मुहब्बत करता है। (इस हदीस को इमाम बुख़ारी ने अनस बिन मालिक और इमाम मुस्लिम ने अब्दुल्लाह बिन मसऊद से रिवायत किया।)

हज़रात सूफ़िया-ए-किराम की मुहब्बते इलाही के ताल्लुक़ से ज़्यादा से ज़्यादा ये कहा जा सकता है कि हज़रात सूफ़िया ऐसी जमाअ्त हैं जिन्होंने अपने अल्लाह का मोहताज होने के बाइस अल्लाह तआला की मआर्फ़त हासिल की और उनके दिल अल्लाह तआला की मुहब्बत के

लिये ख़ास हो गये। उनके दिलो-दिमाग़ ख़ुदा की तौहीदे मुहब्बत में ख़ालिस हो गये और उनकी रूहें मला-ए-आ़ला से मिल गईं।

मुहब्बत ज़िन्दगी का राज़ हैः-

हज़रात सूफ़िया-ए-किराम मुहब्बत को ज़िन्दगी का राज़ समझते हैं, अगर मुहब्बत न होती तो ख़ानदानी निज़ाम न बनता और न ही समाज की बुनियाद पड़ती। अगर मुहब्बत न होती तो ज़र्रात (कण) और जुज़इयात (तत्त्व) माद्दे में जमा न होते बल्कि अगर मुहब्बत न होती तो न्यूट्रान और प्रोटोन एटम में जमा न होते, जिसको उलूमे तबीइयात (साइंस) के माहिरीन (वैज्ञानिकों) ने कशिशे सक़ल (चुम्बकीय आकर्षण) या एटमी ज़र्रात में बाहम क़ुव्वते जाज़बियत (कशिश) से ताबीर किया है। सूफ़िया इसको अपनी लतीफ़ ज़बान में मुहब्बत से ताबीर करते हैं। सूफ़िया का ख़याल है कि पूरी कायनात (ब्रह्माण्ड) सिर्फ़ दो हर्फ़ों पर टिकी हुई है यानी "हुब्ब"। वह ख़्याल करते हैं कि जब इन्सान इस दर्जे तक पहुँच जाता है तो यही उसकी तकमील का आख़री दर्जा है। किसी शायर ने कहा है-

तर्जुमा- इन्सान की सबसे ख़ूबसूरत कैफ़ियत सच्चाई है और उसका सबसे मुकम्मल वस्फ़ "हा" और "बा" है।

तकलीफ़ें आसान नहीं हैं अगर वहाँ मुहब्बत न हो। ये भी ज़रूरी है कि कायनात में एक क़ुव्वत "क़ुव्वते तनाफ़िर" से ज़्यादा होता कि वो मुख़्तलिफ़ प्रोटोंज़ को एक दूसरे के साथ जमा कर दे बावजूद ये कि उन में मुख़्तलिफ़ तवानाइयाँ मौजूद हों और वो क़ुव्वत (ताक़त) ही मुहब्बत है। अब जुज़इयात (तत्त्व) एक दूसरे से मुहब्बत करते हैं तो बाज़ बाज़ के साथ जुड़ जाते हैं और प्रोटोन इलैक्ट्रोन से मुहब्बत करते हैं तो उन्हें अपनी जानिब खींच लेते हैं, ज़मीन चान्द से मुहब्बत करती है तो उसको अपनी जानिब खींचती है और इसी तरह ज़मीन और सूरज के दरम्यान भी मुहब्बत है।

बन्दे का अपने रब से मुहब्बत करनाः-

उम्मते इस्लामिया का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ (सहमति) है कि अल्लाह तआला और उसके रसूले करीम की मुहब्बत फ़र्ज़ है और ईमान की सबसे बड़ी अलामतो निशानी है। रिसाला-ए-क़ुशीरिया में अल्लाह तआला से एक बन्दे की मुहब्बत करने की तारीफ़ ये बयान की गयी हैः-

> ये एक ऐसी कैफ़ियत है जिसे बन्दा अपने दिल में महसूस करता है, लेकिन इबारत उसके बयान से क़ासिर है, ये कैफ़ियत उसे उसकी ताज़ीम (इज़्ज़त), उसकी रज़ामंदी को हासिल करना, उससे दूरी पर बेचैनी, उसकी जानिब शौक़, उसके बग़ैर बेक़रारी, दिल से हमेशा उसकी याद से दिलचस्पी जैसी हालतों पर मजबूर कर देती है। बन्दे की तरफ़ से अल्लाह तआला की चाहत में कोई निशाने मन्ज़िल या हद बन्दी नहीं है, क्योंकि उसकी बे-नियाज़ी हक़ीक़त गिरफ़्त, पहुँच और अहाते (घेराव) से पाक है, ज़्यादा दुरुस्त यही है कि मुहब्बत तो महबूब में फ़ना होने का नाम है न कि हद बन्दी का। मुहब्बत के लिये मुहब्बत से बढ़कर न कोई सिफ़त है और न उससे नुमायाँ तर (बहतर) कोई तारीफ़ है और न उससे ज़्यादा समझ से क़रीबतर कोई लफ़्ज़ है।

बन्दे के अपने रब से मुहब्बत के सुबूत में बाज़ आयाते करीमा और अहादीसे शरीफ़ा वारिद (नाज़िल) हुई हैं। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता हैः-

> **तर्जुमा-** ईमान वाले अल्लाह से बहुत ज़्यादा मुहब्बत करते हैं।

एक दूसरे मक़ाम पर अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता हैः-

> **तर्जुमा-** अल्लाह मोमिनों से मुहब्बत फ़रमाता है और वो

अल्लाह से मुहब्बत करते हैं। (सूरह मायदा)

ये मुहब्बत का आलातरीन मर्तबा है, इसलिये कि इसमें मुहिब्ब और महबूब के दरम्यान मुहब्बत का तबादला होता है।

मुस्नदे अह़मद बिन हंबल में अम्र बिन अल-जमूह नबी करीम अलैहिस्सलाम से रिवायत करते हैंः-

नबी करीम अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया कि बन्दे को ईमान की लज़्ज़त (मिठास) उसी वक़्त हासिल होगी जबकि वो अल्लाह से मुहब्बत करे और अल्लाह की ख़ातिर किसी को बुरा जाने तो बन्दा अल्लाह की जानिब से विलायत का हक़दार हो जाता है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुआ फ़रमाते थे कि-

तर्जुमा- ऐ अल्लाह! तू मुझे अपनी मुहब्बत अता फ़रमा और उसकी मुहब्बत अता फ़रमा जिसकी मुहब्बत तेरे नज़दीक नफ़ा बख़्श (फ़ायदेमंद) हो, ऐ अल्लाह! तेरी अता कर्दा (दी हुई) चीज़ों में से जिनसे मैं मुहब्बत करता हूँ उनको मेरे लिये, इन चीज़ों के लिये क़ुव्वतो-ताक़त बना दे जिनको तू पसन्द करता है, मेरी महबूब चीज़ों में से जो तूने मुझे अता नहीं फ़रमाईं उन्हें मेरे हक़ में इन चीज़ों के लिये फ़ुर्सत बना दे जो तुझे पसन्द हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः-

जो शख़्स अल्लाह की बारगाह में अपने मर्तबा व मक़ाम को जानना चाहता है तो उसे ग़ौरो-फ़िक्र करना चाहिये कि अल्लाह का मर्तबा व मक़ाम उसके दिल में क्या है, इस लिये कि अल्लाह तआला बन्दे को उसी मर्तबे पर फ़ाइज़ करता है जो मर्तबा बन्दा अपने रब के वास्ते रखता है।

(दारे क़ुतनी)

अबू रज़ीन अक़ीली रज़ि० ने अर्ज़ किया:-

ऐ अल्लाह के रसूल! ईमान क्या है? हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह और उसके रसूल की मुहब्बत तेरे नज़्दीक सबसे ज़्यादा हो। (मुस्नदे अह़मद बिन हंबल)

हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ि० अन्हु से मरवी है:-

हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत मसअ़ब बिन उमैर को सामने से आते हुए देखा, उनके ऊपर मेंढे की खाल थी, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- ज़रा इस शख़्स की तरफ़ देखो जिसके दिल को अल्लाह ने रौशन फ़रमा दिया। मैंने इससे पहले इसे देखा था कि इसके वालिदैन इसे उम्दा खाने और बेहतरीन पीने वाली चीज़ें दिया करते थे लेकिन उसे अल्लाह और उसके रसूल की मुहब्बत इस हालत की तरफ़ ले आई जिसे तुम देख रहे हो (यानी फ़ाक़ा कशी व ग़रीबी की जानिब)।

रिवायत बयान की जाती है कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम बारगाहे ख़ुदावन्दी में अर्ज़ करते थे:-

ऐ अल्लाह! तू मुझे महबूब बन्दों में शामिल करले क्योंकि जब तू किसी बन्दे से मुहब्बत फ़रमाता है तो उसके गुनाहों को बख़्श देता है अगरचे वो बहुत हों और उस बन्दे के अमल अपनी बारगाह में क़ुबूल फ़रमा लेता है अगरचे वो बहुत थोड़े हों।

एक मशहूर हदीस में है:-

जब मलकुल-मौत हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की रूह क़ब्ज़ करने आये तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उन

से कहा- "ऐ मलकुल मौत! क्या तुमने कहीं ऐसा दोस्त देखा है जो दोस्त को मारता हो", फ़ौरन अल्लाह ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम की जानिब वह़ी फ़रमाई कि "क्या तुमने कहीं ऐसा मुहब्बत करने वाला देखा जो अपने महबूब से मुलाक़ात करने को नापसन्द करता हो", तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कहा ऐ मलकुल मौत! अब तुम मेरी रूह क़ब्ज़ कर लो।

इस कैफ़ियत को वही बन्दा पायेगा जो अल्लाह से दिल की अथाह गहराई से मुहब्बत करता हो।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० अन्हु का इरशादे अ़ाली हैः-

जिसने अल्लाह तआला की ख़ालिस मुहब्बत का मज़ा चख लिया तो उसे ग़ैरुल्लाह से वहशत होगी और उसने अपनी हर ख़्वाहिश को ख़ुदाए बरतर के वास्ते छोड़ दिया।

एक आशिक़े ज़ार जब इश्क़ो-मुहब्बत के मुताल्लिक़ गुफ़्तगू करता तो उसकी बेचैनी और बेक़रारी से मस्जिद की क़न्दीलें टूट जातीं। एक दफ़ा उससे कहा गया कि तू मुहब्बत के सिलसिले में कलाम कर, तो उस ने जवाब दिया कि मैं रू-ए-ज़मीन पर किसी को नहीं पाता जो मुहब्बत में कलाम करने की अहलियत रखता हो, तो उसी वक़्त उसके सामने एक परिन्दा आकर गिरा, तो उस शख़्स ने कहा अगर इसकी कोई अहलियत रखता तो ये है, फिर वो आशिक़ मुहब्बत के मुताल्लिक़ इस परिन्दे से गुफ़्तगू करने लगा और परिन्दा अपनी चोंच ज़मीन पर मारने लगा आख़िरकार इस परिन्दे का ख़ून बहने लगा, वो तड़पा और मर गया।

याह़या बिन मुआ़ज़ रह० फ़रमाते हैं-

अल्लाह तआला का मआ़फ़ कर देना गुनाहों को मिटा देता है तो उसकी रज़ा का आलम क्या होगा और उसकी रज़ा

उम्मीदों व आरज़ुओं को ख़त्म कर देती है तो उसकी मुहब्बत का आलम क्या होगा और उसकी मुहब्बत ग़ैरुल्लाह की याद को भुला देती है तो उसके मेहरबानी का आलम क्या होगा।

याह्या बिन मुआ़ज़ रह० ने अल्लाह तआला से सरगोशी करते हुए कहाः-

ऐ मेरे माबूद! मैं बचपन से तेरी फ़ना की राह में मुक़ीम और हम्दो-सना में मशग़ूल हूँ, तूने मुझे अपनी तरफ़ माइल (आकर्षित) किया और अपनी मआ़र्फ़त का जामा पहनाया और अपने लुत्फ़ो-मेहरबानी में मुझे जगह इनायत फ़रमाई, मुझे अह्वाले आलिया में मुन्तक़िल किया और पर्दापोशी, तौबा, ज़ुहद, शौक़ो-रज़ा और मुहब्बत से तमाम आ़माल को बदल दिया, तू अपने हौज़ के पानी से मुझे सैराब करता है और अपने मश्क़ की क्यारी में छोड़ देता है, मैं तेरे हुक्म का ताबेदार और तेरे कलाम में मशग़ूल हूँ और जब मेरी मूँछें उग आईं और बाल ज़ाहिर हो गये तो आज मैं बड़ा होकर तुझसे कैसे दूर रह सकता हूँ। ये मुझ में तेरी जानिब से बचपन से तैय्यार हुई है लिहाज़ा मेरे लिये तेरे सिवा कोई नग़मा बाक़ी न रहा और तेरे ही तरफ़ आजिज़ी के साथ सरगोशी करता हूँ इसलिये कि मैं मुहब्बत करने वाला हूँ और हर मुहिब्ब अपने हबीब के ज़िक्र से मुहब्बत करता है और अपने महबूब के अलावा के ज़िक्र से बचता है।

किसी से कहा गया कि इन मुहब्बत करने वालों का क्या हाल है? उसने जवाब दियाः-

इन हज़रात ने ख़ालिक़े हक़ीक़ी की मुहब्बत की ठन्डक व

मिठास महसूस कर ली है और अल्लाह की जानिब दावत देने वाली अजीबो-ग़रीब आवाज़ों को समाअ्त कर लिया है यहाँ तक कि इनकी अक़्लें अड़ गईं और दिल अपने महबूब की जानिब खिंच गये ओर ये अपने महबूब की जानिब मदहोश हो गये। मुहब्बत कहाँ है? मुहब्बत का ख़ुलूस कहाँ है? कहाँ है वो जो मुहब्बत का हक़दार है? जान लो जिसे इस रब्बे हक़ीक़ी से मुहब्बत हो गई वो एक लम्हा भी उसकी जुदाई पर सब्र नहीं कर सकता।

ऐ अल्लाह! तू हमें इन मुहब्बत करने वालों की जमाअ्त में दाख़िल फ़रमा जो तेरी ज़ाते पाक से मुहब्बत करते हैं, हमारे दिलों से पर्दों को उठा दे, हमें अपना क़ुर्ब और मआ़र्फ़त अता कर और अपने दीदार से मुशर्रफ़ फ़रमा, हमें, हमारे मशाइख़ और हमारे अहबाब को मुहिब्बीन के मर्तबे बुलन्द फ़रमा, आमीन।



मुहब्बत के हक़ीक़ी उसूल

असल (1)-

मआ़र्फ़तो-इदराक (ख़ुदा शनासी) के बाद ही अल्लाह की मुहब्बत का तसव्वुर मुमकिन है। मुहब्बत ज़िन्दा की ख़ुसूसियात में से है, इसलिये कि मुहब्बत लज़्ज़त वाली चीज़ की जानिब तबीयत के झुकाव और बुग़्ज़ तकलीफ़दह चीज़ से तबीयत के नफ़रत करने का नाम है।

असल (2):-

मुहब्बत इदराको-मआ़र्फ़त के मातहत ह़वास की तक़्सीम के तहत तक़सीम होती है, लिहाज़ा हर हासा किसी एक क़िस्म के मुदरक का इदराक करता है और हर हासे के लिये बाज़ मुदरकात में लज़्ज़त हुआ करती है मसलन आँख की लज़्ज़त हसीनो-जमील सूरतों के दीदार में है, कान की लज़्ज़त मौज़ूँ उम्दा नग़मात के सुनने में है, अच्छी पाकीज़ा हवाओं और ख़ुश्बू में सूँघने की क़ुव्वत के लिये लज़्ज़त है, क़ुव्वते ज़ायक़ा के लिये उम्दा खानों में लज़्ज़त है और नर्मो-नाज़ुक चीज़ों को छू कर महसूस करने की लज़्ज़त है।

असल (3):-

इन्सान अपनी जान से मुहब्बत करता है और अपनी जान ही की वजह से दूसरों से मुहब्बत करता है। मैं इन सबब को बयान करना मुनासिब समझता हूँ जिनके कारण इन्सान अपने आपसे या दूसरों से मुहब्बत करता है। मुहब्बत की वुजूहात दर्ज ज़ैल हैं:-

पहली वजह (i)-

हर जानदार के नज़्दीक अव्वल तरीन महबूब चीज़ उसकी जान होती है, इसी वजह से इन्सान अपने वजूद की भलाई चाहता है और मौत और क़त्ल को नापसन्द करता है, जब भी वो किसी मुसीबतो बला में गिरफ़्तार होता है तो उसकी ये आरज़ू होती है कि वो मुसीबतो-बला उससे दूर हो जाये।

दूसरी वजह (ii)-

दिल इस फ़ितरत पर पैदा हुए हैं कि वो उन लोगों से मुहब्बत करते हैं जो उन पर एहसान करता है और उनसे बुग़ज़ो-नफ़रत करते हैं जो उनके साथ बुराई से पेश आता है, इसी लिये सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुआ फ़रमाया करते थे कि- "ऐ अल्लाह! तू किसी फ़ाजिरो-फ़ासिक़ (गुनाहगार) का मेरे ऊपर एहसान न रख कि मेरा दिल उससे मुहब्बत करे", इसी सबब की बिना पर कभी कभी आदमी उस अजनबी इन्सान से मुहब्बत करता है जिससे एहसान के सिवा न कोई क़राबतदारी होती है और न किसी क़िस्म का ताल्लुक़ होता है, लिहाज़ा जिसने अपने मोहसिन से मुहब्बत की, दरहक़ीक़त उसने अपनी ज़ात से मुहब्बत की बल्कि उस मोहसिन के एहसान से मुहब्बत की, इसलिये एहसान उन मोहसिन के कामों में से एक काम है लिहाज़ा अगर उसके एहसान में कमी होगी तो उस शख़्स की मुहब्बत में कमी होगी और अगर मोहसिन के एहसान में इज़ाफ़ा होगा तो उसकी मुहब्बत में भी इज़ाफ़ा होगा।

तीसरी वजह (iii)-

किसी चीज़ से उसकी ज़ात की वजह से मुहब्बत करना ये ही मुहब्बते हक़ीक़ी है जैसे हुस्नो-जमाल से मुहब्बत करना, इसलिये कि ख़ूबसूरती के सबब आँख को लज़्ज़त हासिल होती है और ये लज़्ज़त ख़ूबसूरती की ज़ात के बाइस महबूबो-पसन्दीदा है न कि ग़ैर की वजह से। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सब्ज़ा-ज़ारों और आबे-रवाँ को पसन्द फ़रमाते थे और जबकि ख़ुद रब्बे कायनात सिफ़ते जमाल के साथ मुत्तसिफ़ है लिहाज़ा जिस पर अल्लाह तआला का जमालो-जलाल ज़ाहिर हो गया उसे यक़ीनन ख़ुदा-ए-बरतर की ज़ाते पाक महबूब होगी और जैसा कि अल्लाह के रसूल अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने इरशाद फ़रमाया-

तर्जुमा- बेशक अल्लाह सिफ़ते जमाल के साथ मुत्तसिफ़

है और हुस्नो-जमाल को पसन्द भी फ़रमाता है। (इस हदीस को मुस्लिम, तिर्मिज़ी, बेहक़ी, तबरानी और हाकिम ने रिवायत किया। अल्लाह तआला सूरती जमाल नहीं है बल्कि सिफ़ाती जमाल है।)

असल (4):-

इन्सान का हुस्नो-जमाल से मुहब्बत करने का मतलब यह है कि वो चीज़ अपने मायना-ए-हुस्न में मुकम्मल है। मसलन जब कहा जाये कि घोड़ा ख़ूबसूरत है तो इसका मतलब है कि ये वो घोड़ा है जो तमाम उन चीज़ों में मुकम्मल है जो एक घोड़े के लिये लाइक़ है। जैसे हियतो-शक्ल, रंग, अच्छी चाल, पीछे हटने और आगे बढ़ाने में आसानी होना। इसी तरह अच्छा ख़त (लेख) उसे कहेंगे जिसमें वो तमाम चीज़ें पाई जाएँ जो एक ख़त को दरकार हैं जैसे हुरूफ़ में तवाज़ुन होना, उनकी तरतीब का दुरुस्त होना, अच्छे नज़्मो-नस्क़ से उन्हें रखना। लिहाज़ा वो शख़्स जो किसी दीवार पर बनी हुई सूरत को उसकी ज़ाहिरी ख़ूबसूरती की वजह से महबूब रखता है और वो शख़्स जो किसी नबी से मुहब्बत करता है दोनों के दरम्यान ज़मीनो-आसमान का फ़र्क़ है।

असल (5):-

मुहिब्बो-महबूब के दरम्यान एक मख़फ़ी (पोशीदा) मुनासबत होती है, इसलिये कि कभी-कभी दो ज़ातों के दरम्यान बेहद मुहब्बत होती है और उसकी वजह ख़ूबसूरती या ख़त वाला सबब नहीं होता, वो मुहब्बत सिर्फ़ रूहों की मुनास्बत से होती है जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया-

> रूहें जमा शुदा लश्कर हैं, इन रूहों में जिनके दरम्यान बाहम तआ़र्रुफ़ होता है उनमें उल्फ़तो-मुहब्बत हो जाती है और जिनके दरम्यान नावाक़्फ़ियत होती है उनमें इख़्तिलाफ़ो टकराव हो जाता है। (सही मुस्लिम अ़न अबी हुरैरा)



सच्ची मुहब्बत का हक़दार सिर्फ़ अल्लाह है

पहली वजह-

इन्सान का अपनी बक़ा (हयात) और अपने कमाल और अपने वुजूद को पसन्द करना और अपनी हलाकतो-मादूमियत को नापसन्द करना अल्लाह तआला से बेहद मुहब्बत का तक़ाज़ा करता है। इसलिये कि जिसने अपने नफ़्स को पहचान लिया उसने अपने रब को पहचान लिया और हतमी तौर पर उसने ये जान लिया कि उसकी ज़ात का कोई वुजूद नहीं है सिर्फ़ उसकी ज़ात का वुजूदो-कमाल और उसका दवाम (हमेशा रहना) मिनजानिब अल्लाह है और उसी की तरफ़ लौट कर जाना है, आ़रिफ़ बिल्लाह ये पहचानता है कि उसकी ज़ात और उसका वुजूद ग़ैर का तालिब नहीं है तो वो यक़ीनन अपने वुजूद बख़्शने वाले से मुहब्बत करता है और वो ज़ात परवर्दिगारे आलम की है।

दूसरी वजह-

इन्सान का अपने मोहसिन से मुहब्बत करने की दर्ज ज़ैल सूरतें हैं कि वो मोहसिन की अपने माल से मदद करे, उससे नर्मी व शाइस्तगी के साथ कलाम करे, उसकी मदद और ख़ुशी के लिये हर वक़्त तैय्यार रहे, उसके दुश्मनों का ख़ात्मा करे, शर पसन्द लोगों के शर को उससे दूर करे, उसके मोहसिन की आलो-औलाद और अज़ीज़ो-अक़ारिब के मक़सदों को हासिल करने का ज़रिया बन जाता है, बिलाशक ये तमाम चीज़ें इस बात की ज़रूरत महसूस करती हैं कि इन्सान सिर्फ़ ज़ाते परवर्दिगार से मुहब्बत करे क्योंकि अगर इन्सान को हक़ीक़ी मआ़र्फ़त हासिल होगी तो उसे मालूम होगा कि उसका मोहसिने हक़ीक़ी सिर्फ़ अल्लाह तआला है। वो रब्बे हक़ीक़ी इरशाद फ़रमाता है- (तर्जुमा) अगर तुम अल्लाह की नेअ्मतों को शुमार करना चाहो तो हरगिज़ शुमार नहीं कर सकते। (सूरह नहल)

तीसरी वजह-

अल्लाह की मुहब्बत की वुजूहात में से एक वजह ये भी है कि इन्सान की फ़ितरत में मोहसिन (एहसान करने वाले) की मुहब्बत मौजूद है जबकि मोहसिन का एहसान उसकी ज़ात तक न पहुँचा हो मसलन जब आपके पास ये ख़बर पहुँचे कि दूर-दराज़ मक़ाम पर एक अद्लो-इन्साफ़ करने वाला बादशाह है जो आलिम, इबादत-गुज़ार और ज़ाहिद है, और जो लोगों के लिये नर्म है, उन पर मेहरबानी करने वाला है, तवाज़ो-पसन्द, नर्म मिज़ाज है, फिर आपके पास एक दूसरे बादशाह के मुताल्लिक़ ख़बर पहुँचे कि वो बादशाह इन्तहाई ज़ालिमो- जाबिर, गुनहगारो-बदकिरदार, शर पसन्द है और ये बादशाह भी आपसे बहुत दूर हो तो यक़ीनन आप इन दोनों बादशाहों के ताल्लुक़ से अपने दिल में फ़र्क़ पायेंगे। पहले बादशाह के लिये आप अपने दिल में मैलान और झुकाव पायेंगे और इसी झुकाव का नाम मुहब्बत है और दूसरे बादशाह के लिये आपके दिल में नफ़रत होगी और इसी का नाम बुग़्ज़ है जबकि आप पहले बादशाह की ख़ैर से महरूम और दूसरे बादशाह के शर से महफ़ूज़ हैं क्योंकि आपको इनके मुल्कों में दाख़िल होना मयस्सर नहीं।

इससे मालूम हुआ कि इन्सान मोहसिन से उसके मोहसिन होने की हैसियत से मुहब्बत करता है, इस वजह से नहीं कि मोहसिन का एहसान उस तक पहुँचा है और ये बात भी अल्लाह तआला की मुहब्बत का तक़ाज़ा करती है बल्कि इस बात का भी तक़ाज़ा करती है कि आप ग़ैरुल्लाह (अल्लाह के सिवा) से सिर्फ़ इसलिये मुहब्बत करें कि उसका ताल्लुक़ अल्लाह से है क्योंकि तमाम मख़लूक़ पर एहसानो फ़ज़्ल फ़रमाने वाला अल्लाह तआ़ला है।

चौथी वजह-

हर ख़ूबसूरत चीज़ से मुहब्बत उसकी ज़ाती जमाल की वजह से होती है, हुस्नो-जमाल के सिवा किसी और चीज़ के हासिल करने के

लिये मुहब्बत नहीं होती लिहाज़ा नफ़्से जमाल के सबब (वजह) मुहब्बत करना भी इस बात का तक़ाज़ा करता है कि अल्लाह तआला से मुहब्बत की जाये क्योंकि अल्लाह तआला हुस्नो-जमाल, अज़्मतो-जलाल, कमाले इल्मो-क़ुदरत के साथ मौजूद है और तमाम ऐबों व नुक़सान, बुरी व घटिया आदतों से पाक है।

पाँचवीं वजह-

मुहब्बत के उसूलों में मुनास्बत भी है, लिहाज़ा बच्चा बच्चे को पसन्द करता है, बड़ा बड़े से उन्स हासिल करता है, परिन्दा अपने हमजिन्स परिन्दे से मुहब्बत करता है और अपने ग़ैर जिन्स से भागता है। अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को अपनी सूरत पर पैदा फ़रमाया है जैसा कि हदीसे पाक में आया हैः-

तर्जुमा- अल्लाह तआला ने आदम अलैहिस्सलाम को अपनी सूरत पर पैदा फ़रमाया।

अपनी सूरत पर पैदा करने का मतलब ये है कि आदम अलैहिस्सलाम को ज़मीन में अपना ख़लीफ़ा व नायब बनाया। अल्लाह तआला क़ुरआन में इरशाद फ़रमाता हैः-

तर्जुमा- जब आपके रबने फ़रिश्तों से फ़रमाया मैं ज़मीन में अपना ख़लीफ़ा बनाने वाला हूँ।

सूरत से मुराद एहकामे इलाहिया को नाफ़िज़ करना और ग़ैर शरई चीज़ों से रोकना है। ये चीज़ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के कमाले नसबी की जानिब इशारा है, लिहाज़ा हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के सूरते इलाही पर पैदा होने का मतलब अल्लाह के नामों व सिफ़ात (ख़ूबियों) की सूरत पर पैदा होना है। फ़िर्क़ा-ए-मुजस्समा ने ये बातिल गुमान किया कि सूरते ज़ाहिरी जिसका समझना हवास के ज़रिये होता है, इस सूरते ज़ाहिरी के सिवा कोई और सूरत नहीं है तो उन्होंने अल्लाह तआला को जिस्म से तशबीह दी और इसके लिये जिस्म को

साबित माना हालांकि अल्लाह तआला उनके क़ौल से इन्तहाई बुलन्दो बाला है (मतलब वो जिस्मो-जिस्मानियत से पाक है) और इसी सूरते मआ़नवी की जानिब हदीसे क़ुदसी में इशारा है कि अल्लाह तआला ने हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम से फ़रमायाः-

> **तर्जुमा-** मैं बीमार हुआ तो तूने मेरी इ़यादत नहीं की, हज़रत मूसा ने अर्ज़ की- ऐ मेरे रब! ये कैसे हो सकता है (यानी तेरा बीमार होना नामुमकिन है) तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया- मेरा फ़लाँ बन्दा बीमार था तूने उसकी मिज़ाजपुर्सी नहीं की, अगर तू उसकी मिज़ाजपुर्सी करता तो मुझे उसके पास पाता।

और यही सूरते माअ़्नवी हमें इस हदीसे क़ुदसी में भी नज़र आती है जो हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता हैः-

> जिसने मेरे वली से दुश्मनी रखी मैं उसे जंग की इजाज़त देता हूँ यानी उससे जँग का ऐलान करता हूँ। मेरे बन्दे ने मेरी पसन्दीदा चीज़ (जो मैंने उस पर फ़र्ज़ की है) के वास्ते से मेरा क़ुर्ब हासिल किया और मेरा बन्दा नफ़्ली इबादत के ज़रिये मेरी नज़्दीकी हासिल करता रहता है, यहाँ तक कि मैं उसे अपना महबूब बन्दा बना लेता हूँ और जब मैं उसे महबूब बना लेता हूँ तो उसके कान हो जाता हूँ जिससे वो सुनता है, उसकी आँख बन जाता हूँ जिससे वो देखता है, उसके हाथ बन जाता हूँ जिससे वो पकड़ता है, उसके पाँव बन जाता हूँ जिससे वो चलता है, अगर वो मुझसे किसी चीज़ का सवाल करता है तो मैं ज़रूर ज़रूर उसे अता करता हूँ और अगर वो मुझसे पनाह तलब करता है तो मैं उसे ज़रूर पनाह देता हूँ।

(बुख़ारी, इब्ने माजह, मुस्नदे अहमद, इब्ने हिब्बान वग़ैरा)

इस हदीसे क़ुदसी पर शेख़ इब्ने रजब हंबली ने फ़रमाया है जो अल्लाह के साथ हलूलियत (किसी चीज़ का किसी दूसरी चीज़ में पूरा समा जाना) के शुबहात को दूर करती है जैसा कि बाज़ नाम निहाद मुसलमानों ने अल्लाह के हुलूल का क़ौल किया है। शेख़ इब्ने रजब फ़रमाते हैं कि-

> इस कलाम (ज़िक्र की गई हदीस) की मुराद ये है कि जिस ने फ़राइज़ फिर नवाफ़िल की अदायगी करके ख़ुदाए-तआला का क़ुर्ब हासिल करने में कोशिशो-मेहनत की तो अल्लाह ने उसे अपना क़ुर्बे ख़ास अता फ़रमा दिया और उसे ईमान के दर्जे से एहसान के मर्तबे पर पहुँचा दिया तो ऐसा बन्दा हालते हुज़ूर में अल्लाह तआला की इबादत करता है और उसका दिल अल्लाह तआला की मआर्फ़तो मुहब्बत, अज़्मतो जलाल, ख़ौफ़ो हैबत, शौक़ो-उन्स से भर जाता है। यहाँ तक कि वो इरफ़ान के ऐसे मर्तबे पर पहुँच जाता है कि बसीरत की आँखों से अल्लाह तआला का मुशाहिदा करता है और जिसका ये हाल हो जाता है उसके मुताल्लिक़ कहा जाता है कि फ़ुलाँ के दिल में सिवाय परवर्दिगारे आलम के कोई शय (चीज़) बाक़ी नहीं रही यानी उसके दिल में मआर्फ़ते ख़ुदावन्दी, मुहब्बते इलाही और ज़िक्रे मौला बाक़ी रह गया और इसी मफ़हूम के सिलसिले में एक मशहूर हदीस है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है- "मेरी वुसअ़त न मेरी ज़मीन ने रखी और न मेरे आसमान ने रखी लेकिन मेरे मोमिन बन्दे के दिल ने मेरी वुसअ़तो-गुंजाइश रखी"।

लिहाज़ा जब दिल अज़्मते इलाही से भर गया तो उस बन्दे ने अपने दिल से मासिवा अल्लाह को मिटा दिया, फिर उस बन्दे का न अपना नफ़्स रहा और न कोई ख़्वाहिशो-आरज़ू बाक़ी रही। जबकि उसका कोई

अपना इरादा नहीं रहा, जब अल्लाह जो चाहता है बन्दा उसी चीज़ का इरादा करता है। हर वक़्त बन्दा अपने रब के ज़िक्र में ज़बान खोलता है, उसी के हुक्म से हरकत करता है, अगर अब वो गुफ़्तगू करता है, तो अल्लाह के साथ गुफ़्तगू करता है, अगर वो सुनता है तो अल्लाह की समाअ्त से सुनता है, देखता है तो अल्लाह की निगाह से देखता है, पकड़ता है तो अल्लाह की क़ुदरत से पकड़ता है, लिहाज़ा हदीस में जो "बा" आई हुई है वो मुसाहिबत (साथ) के माअ्ना में है और ये ऐसी मुसाहिबत है जिसकी कोई नज़ीरो मिसाल नहीं, इसका इदराक सिर्फ़ अहादीस पढ़कर और इनको जानकर नहीं हो सकता, लिहाज़ा इसका मतलब ये है कि बन्दा सुनता और देखता है, पकड़ता और चलता है, इस हाल में (अल्लाह फ़रमाता है) कि मैं उसका साथी हूँ और ये अल्लाह के उस फ़रमान की तरह है जो एक दूसरी हदीसे क़ुदसी में आया हुआ है कि मैं अपने बन्दे के साथ होता हूँ जब वो मेरा ज़िक्र करता है और मेरे ज़िक्र में उसके लब हरकत करते हैं, ये मइयत (साथ) वही मइयते ख़ास्सा है जिसका ज़िक्र अल्लाह के इस फ़रमान में है कि अल्लाह हमारे साथ है।

(जामेउल उलूम वल हकम, इब्ने रजब हंबली)



मुहब्बत की अहमियत और उसके दर्जे

इन्सान की तबीयतों में सबसे पहले खाने को पसन्द करने की तबीयत पैदा होती है, फिर कुछ अर्से बाद निकाह करने की तबीयत पैदा होती है, तो उस वक़्त वो खाने की मुहब्बत को कमतर समझता है, फिर जिस वक़्त वो और बड़ा होता है और मज़ीद उसमें पुख़्तगी पैदा होती है तब अल्लाह तआला उसमें सरदारी और बड़े बनने की तबीयत पैदा फ़रमाता है तो वो खाने और निकाह की तबीयत को कमतर समझता है, फिर जब उसमें पुख़्तापन और ज़्यादा आता है तो इन्सान में मआ़र्फ़त (अल्लाह से मुहब्बत) की तबीयत पैदा होती है फिर वो तमाम तबीयतों को कमतर और छोटा समझता है और हर तबीयत की साथी मुहब्बत हुआ करती है इसलिये मुहब्बत की तमाम क़िस्मों में सबसे आ़ला-ओ-अशरफ़ मुहब्बत अल्लाह की मुहब्बत है क्योंकि ये मुहब्बत मआ़र्फ़त का समरा (फल) है।

बाज़ लोग सबसे पहली तबीयत (खाने की मुहब्बत) पर इक्तिफ़ा कर लेते हैं, इस क़िस्म के इन्सान जानवरों से मुमताज़ नहीं होते (हैवानियत का उनमें ग़ल्बा रहता है) और बाज़ वो लोग हैं जो मआ़र्फ़त को पसन्द करने की तबीयत तक पहुँच जाते हैं और यही तबीयत उनको मआ़र्फ़ते इलाही के इन्तिहाई क़रीब ले जाती है और अल्लाह की मुहब्बत उसकी रज़ा में कोशिशो मेहनत करने पर आमादा करती है और यही अल्लाह की मआ़र्फ़त सब से बड़ा मक़सद और सबसे आ़ला मक़ाम है।

❑ ❑ ❑

अल्लाह की मुहब्बत सब से ज़्यादा लज़ीज़ है

कोई भी मुहब्बत के बग़ैर ज़िन्दगी बसर नहीं करता, ख़्वाह वो इन्सान व जानवर हो या जमाद (कीड़े-मकोड़े) हो, इसका नाम इल्मे तबीयात में “नज़रियतुल तजाज़िबुल आ़म बैनुल अजसाम” रखा जाता है (यानी तमाम जिस्मों में कशिशो-जज़्ब का नज़रिया)। ये नज़रिया बताता है कि तमाम जिस्म मुहब्बत की सिफ़त से सजे हैं, यहाँ तक कि जमादात में भी ये सिफ़त पाई जाती है। यक़ीनन सारी लज़्ज़तें इदराक के ताबेअ् हैं। इन्सान तमाम तबीयतों और क़ुव्वतों का मजमूआ है। हर क़ुव्वतो तबीयत की एक लज़्ज़त है और उसकी लज़्ज़त अपनी तख़लीक़ शुदा तबीयत के मुवाफ़िक़ है और हर तबीयत का एक मक़सद है जिसकी तहक़ीक़ के वास्ते अल्लाह तआला ने इस तबीयत को पैदा फ़रमाया है।

चुनांचे ग़ज़बो-ग़ुस्सा की तबीयत इन्तिक़ामो बदला के लिये पैदा की गई है, तो बग़ैर किसी शक के इस तबीयत की लज़्ज़त इन्तिक़ामो-ग़ल्बे में है और यही इन्तिक़ाम उसकी तबीयत का तक़ाज़ा है। इसी तरह खाने के ख़्वाहिश की तबीयत उस ग़िज़ा के हासिल करने के लिये पैदा हुई है जिससे बदन का क़ाइम है। लिहाज़ा इस तबीयत की लज़्ज़त इस ग़िज़ा को हासिल करने में है, जो उसकी तबीयत का तक़ाज़ा है। सुनने, देखने और सूँघने की तबीयत की लिज़्ज़त अच्छी और मरग़ूबो-महबूब चीज़ों के सुनने, देखने और सूँघने में है। इन तबीयतों का महसूसात से ताल्लुक़ की तरफ़ निस्बत करते हुए कोई इन्सानी तबीयत लज़्ज़तो अलम से ख़ाली नहीं, इसी तरह दिल में भी एक तबीयत है जिसको नूरे इलाही कहा जाता है और ये तबीयत इन्सान को अपने ख़ालिक़े हक़ीक़ी की मआ़र्फ़त की जानिब राहनुमाई करती है जैसा कि अल्लाह तआला

फ़रमाता हैः-

तर्जुमा- तो क्या वो शख़्स जिसका सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिये कुशादा कर दिया है तो वो अपने रब की जानिब से नूर पर है।

यह बात किसी से छिपी नहीं है कि इल्मो-मआर्फ़त में एक लज़्ज़त कारफ़रमा है, इसलिये कि अगर किसी को इल्मो-मआर्फ़त के साथ मन्सूब किया जाये तो वो ख़ुश होता है जबकि उसका इल्म किसी मामूली कमतर चीज़ के मुताल्लिक़ हो। और अगर किसी को जहालत के साथ मन्सूब किया जाए तो वो ग़मज़दा हो जाता है जबकि उसकी जहालत का ताल्लुक़ एक कमतर चीज़ से हो। इसी लिये इन्सान कमतर चीज़ों के ताल्लुक़ से इल्म में कमी या बेजा तारीफ़ पर सब्र का मुज़ाहिरा नहीं कर पाता है।

इल्म अल्लाह तआला की एक ख़ास सिफ़त है, वो बिला शुबह अ़लीम है, माज़ी (भूतकाल) व मुस्तक़बिल (भविष्यकाल) का उसे मुकम्मल इल्म है। इसीलिये जब फ़हम और इल्म की बुनियाद पर किसी तबीयत की तारीफ़ की जाती है तो वो ख़ुश होती है और ममदूह बिलइल्म अपनी कमाले ज़ात, कमाले इल्म की तारीफ़ को सुनते वक़्त ख़ुश होता है, तो अपनी ज़ात को पसन्द करता है और इससे लज़्ज़त हासिल करता है क्योंकि सिफ़ते इल्म को बक़िया तमाम सिफ़ात पर फ़ज़ीलतो बरतरी हासिल है। ख़्वाह सिफ़ते इल्म अल्लाह तआ़ला की बारगाह में हो या इन्सान की तबीयत में। इल्मी लज़्ज़तें अपने मरतबों के एतबार से मुख़्तलिफ़ होती हैं मसलन खेती-बाड़ी को जानने की लज़्ज़त, मुल्क की सियासत और मख़लूक़ के कामों की तदबीर के तरह नहीं होती है। इसी तरह फ़न नहवो-शेअ्र को जानने की लज़्ज़त, अल्लाह तआला की ज़ातो- सिफ़ात, फ़रिश्तों, ज़मीनो-आसमान के मलकूती निज़ाम जानने की लज़्ज़त की तरह नहीं। दरहक़ीक़त इस

लज़्ज़त से बहतर कोई लज़्ज़त नहीं है क्योंकि ख़ालिक़े कायनात के वुजूद से अज़ीमो-कामिल, जलीलुल- क़द्र कोई चीज़ नहीं है क्योंकि हुस्नो जमाल की तकमील और शाहिंशाही की आबो-ताब में बारगाहे यज़दानी से अज़ीमो-बरतर कोई बारगाह नहीं। इस बारगाह के अजलाल के मुबादी और उसके अहवाल के अजाइबो-ग़राइब को कोई वस्फ़ो-ताबीर इहाता नहीं कर सकता। अल्लाह के छुपाए हुए कामों को पूरी तरह से जान लेना मआर्फ़त की क़िस्मों में सबसे आला और दर्जाते-उलूम में सबसे अशरफ़ है। यही उलूम बारगाहे रब्बानी से मुहब्बतो-उन्सियत की जानिब पहुँचाने वाले हैं, जब बन्दे की मआर्फ़ते इलाही में इज़ाफ़ा होगा तो उस वक़्त अल्लाह की मुहब्बतो-क़ुर्ब और उन्स में ज़्यादती होती है, वही ज़ाते हक़ नेअ्मते-हक़ीक़ी देने वाला, सख़ी व रहीम है।

मआर्फ़ते इलाही की तारीफ़ यूँ की गई है किः-

> दिल की क़ुर्बत क़रीब की तरफ़ होना (जो शह रग से ज़्यादा क़रीब है) रूह का मराक़बा महबूब के लिये होना और बादशाहे मुजीब के सिवा हर एक से अलैहिदा व जुदा होना (मआर्फ़ते इलाही) है।

जैसा कि चीज़ों को जानने की लज़्ज़त में इन चीज़ों की क़द्रो-क़ीमत के एतबार से इज़ाफ़ा होता है ऐसे ही इन चीज़ों से मुहब्बत की लज़्ज़त में ज़्यादती होती है, लेकिन यहाँ सिवाय ज़ाते परवर्दिगार के कोई हक़ीक़तन महबूब नहीं है, उसकी ज़ात बुलन्दो-बाला, उसकी क़द्र सबसे ज़्यादा है। इसके मुताल्लिक़ आरिफ़ बिल्लाह हज़रत सय्यदा राबिआ अ़दविया रह०अलै० फ़रमाती हैं किः-

> ऐ मेरे महबूब! मैं तुझसे दो तरह की मुहब्बत करती हूँ, एक तो ख़्वाहिशात की वजह से और दूसरी इसलिये कि तू इसका हक़दार है। रही वो मुहब्बत जो ख़्वाहिशात की वजह से है तो इसमें तेरे अलावा किसी और के ज़िक्र से

ग़ाफ़िल कर दिया है, और रही वो मुहब्बत जिसका तू अहलो-मुस्तहक़ (हक़दार) है तो इसकी वजह से तू अपने हिजाबात (पर्दे) मेरे लिये उठा दे ताकि मैं तेरा दीदार कर सकूँ, मैं इन दोनों मुहब्बतों की वजह से क़ाबिले तारीफ़ नहीं हूँ बल्कि ये दोनों मुहब्बतें इस वजह से हैं कि तू इन दोनों का मुस्तहिक़ है।

हज़रत राबिआ अ़दविया का क़ौल "तू अपने हिजाबात मेरे लिये उठा दे ताकि मैं तेरा दीदार कर सकूँ", इन हिजाबात और पर्दों से मुराद दिल की आँखें हैं। अल्लाह तआला ने अपने कलाम मजीद में बहुत से मक़ामात पर बहरे, गूँगे और दिल के अंधों की जानिब इशारा फ़रमाया है। इन कसीर आयात में से दो आयतें दर्ज ज़ैल हैंः-

तर्जुमा- बेशक आँखें अंधी नहीं है लेकिन वो दिल अंधे हैं जो सीनों में हैं।

तर्जुमा- तू उनको देखेगा कि वो तेरी तरफ़ देख रहे हैं हालांकि उन्हें कुछ नज़र नहीं आता है।

हज़रत जुनैद बग़दादी अलैहिर्रहमा अल्लाह तआला के मुशाहिदे से दिल के पर्दों को दूर करने के बारे में लिखते हैंः-

अल्लाह तआला तुझ से पोशीदा (छिपा हुआ) नहीं है बल्कि तू उसकी जानिब देखने से रोक दिया गया क्योंकि अगर कोई चीज़ अल्लाह को छुपाने वाली होती तो उसके वुजूद को महसूर (घेरे में) कर देती और हर वो चीज़ जो किसी को महसूर (घेरे में) कर देती है वो उस पर ग़ालिब होती हालांकि अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है- "वह अपने बन्दों के ऊपर ग़ालिब है (सूरह इनआम : 18)", (तो ये नतीजा निकला कि कोई चीज़ ज़ाते हक़ के लिये रुकावट नहीं है और उसे छुपाने वाली नहीं है)।

हज़रत राबिआ अदविया रह० अल्लाह तआला से सवाल कर रही हैं कि उनकी समाअ्त (सुनना), बसारत (देखना) और ज़बानो-दिल से पर्दों को चाक कर दिया जाये ताकि उनका दिल अल्लाह के सिफ़ात के नूर का मुशाहिदा (दीदार) करे और कलामे इलाही को सुने, अल्लाह तआला से सरगोशी करे और उसे समझे जैसा कि हदीसे क़ुदसी में वारिद (आया) हुआ है, अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता हैः-

> मेरा बन्दा नवाफ़िल की कसरत से मेरा क़ुर्ब हासिल करता रहता है यहाँ तक कि मैं उससे मुहब्बत करने लगता हूँ और जब वो मेरा महबूब हो जाता है तो मैं उसके कान, आँख और मदद करने वाला हाथ हो जाता हूँ। (बुख़ारी, मुस्लिम)

और एक दूसरी रिवायत में भी इसी तरह का मज़मून वारिद हुआ है।

किसी आरिफ़ बिल्लाह के मुताल्लिक़ बयान किया गया कि वो दुनिया की मुहब्बत का फन्दा अपने गले से निकाल चुका था, ख़्वाहिशो-आरज़ू से यकसर बे नियाज़ी इख़्तियार करके रब की मुहब्बत को हर चीज़ पर तरजीह दे चुका था और अपनी फ़रियाद अपने आक़ा के हुज़ूर पेश कर रहा था किः-

> **तर्जुमा-** मेरे दिल की मुख़्तलिफ़ ख़्वाहिशात थीं लेकिन जबसे आँख ने तुझे देखा मेरी ख़्वाहिशें एक मरक़ज़ पर जमा हो गईं, यानी मेरे दिल में बहुत सी ख़्वाहिशात थीं मगर तुझे देखने के बाद सिर्फ़ एक ख़्वाहिश हो गई।
>
> **तर्जुमा-** तो जिससे मैं हसद करता था अब वो मुझसे हसद करने लगा, जब से तू मेरा आक़ा हुआ है मैं दुनिया का सरदार हो गया।
>
> **तर्जुमा-** ऐ मेरे दीनो-दुनिया! तेरे ज़िक्र में मशग़ूल होने के बाइस मैंने लोगों के लिये उनके दीनो-दुनिया को

छोड़ दिया।

कोई सुनने वाला ये वहम (शक) कर सकता है कि इस शख़्स (अल्लाह वाले) ने अपना दीन छोड़कर दूसरा दीन इख़्तियार कर लिया जैसा कि शेअ्र से ये वहम होता है, तो ये वहम हक़ीक़त से दूर है। इसका मतलब ये है कि उसके दिल में ख़ालिक़े हक़ीक़ी की मुहब्बतो-उल्फ़त समा गई और वो साग़रे मुहब्बत में इस तरह डूबा कि दुनिया के ताल्लुक़ से बेनियाज़ और बे परवाह हो गया। इस मरतबे को सिर्फ़ वही शख़्स समझ सकता है और इसकी लज़्ज़त वही जान सकता है जिसके दिल से (अंधेरा व जहालत के) पर्दे चाक हो गये हों और जिसका बातिन (अंतर्मन) अनवारे हक़ का मुशाहिदा (दीदार) करने के लिये पाको-साफ़ हो चुका हो।

इब्ने क़य्यिम जोज़िया ने उस मक़ामे मुहब्बत की शरह करते हुए कहा जो दीनों और मज़हबों की असल हैः-

> इरादतो मुहब्बत हर काम की असल व बुनियाद है और मुहब्बत ही हर दीनो-मज़हब की असास है, ख़्वाह वो दीन हक़ हो या बातिल, क्योंकि दीने ज़ाहिरी व बातिनी आमाल में से एक अमल है। मुहब्बतो-इरादत हर अमलो-फ़ेअ्ल की बुनियाद है। दीन इताअ्तो फ़रमाँबरदारी, इबादतो अख़लाक़ का नाम है, लिहाज़ा वो इताअ्त जिसमें हमेशगी हो उसे ख़ुल्क़ कहा जाता है, इसीलिये अल्लाह तआला के फ़रमान में ख़ल्क़ की तफ़सीर दीन से की गई है। इमाम अहमद बिन हंबल ने इब्ने ऐनिया से रिवायत की कि अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने "इन्नका लअ़लिय्युन दीनि अज़ीम" फ़रमाया। (अलजवाबुल काफ़ीयुल इब्नुल क़य्यिम)

ऐ बिरादरे मोमिन! शरीअ्ते मुत्तहरा के दामन को मज़बूती से थामना और उसकी मुख़ाल्फ़तों को नज़र-अन्दाज़ न करना, मुहब्बते इलाही की

अलामत में से है। हमें एक और मुहिब्ब की बात ग़ौर से सुनना चाहिये, जो अपने हबीब अल्लाह तआला से कहता हैः-

> तर्जुमा- महबूबे हक़ीक़ी का हिज्रो-फ़िराक़ (जुदाई) उसकी दोज़ख़ से ज़्यादा सख़्त है और उसका विसाल (मिलन) जन्नत से ज़्यादा अच्छा है।

वो लोग जो अपने ख़ालिक़ के दीदार के मुश्ताक़ हैं उनके दिल दर्ज ज़ैल आयत की सदा से काँपते हैं कि कहीं वो इस आयते करीमा के हक़दार न हो जायें किः-

> **तर्जुमा-** यक़ीनन वो उस दिन अपने रब के दीदार से महरूम कर दिये जायेंगे।

अल्लाह तआला के दीदार के ताल्लुक़ से एक आरिफ़ बिल्लाह ने फ़रमाया-

> अल्लाह तआला के बाज़ (कुछ) बन्दे वो हैं जिनको अगर जन्नत में दीदारे ख़ुदा से महरूम कर दिया जाये तो वो इस तरह फ़रियाद करेंगे जिस तरह दोज़ख़ी जहन्नुम की आग की वजह से फ़रियाद करते हैं।

ख़ुलासा-ए-कलाम ये है कि जब मोमिन के ईमान बिल्लाह में इज़ाफ़ा होता है तो उस वक़्त उसकी मुहब्बते इलाही में इज़ाफ़ा होता है और ये ही मुहब्बत दीन की बुनियाद और दुआओं की चाशनी है।



अल्लाह की बन्दे से और बन्दे की अल्लाह से मुहब्बत पर कुछ कुरआन की आयतें

पहली आयत-

ऐ नबी मुकर्रम! इनको बता दीजिये कि अल्लाह से तुम्हारी मुहब्बत करने की अलामत ये है कि तुम उसके नबी की सीरत पर चलो, और नबी के नायबीनो-वारिसीन, उलमा-ओ-सालिहीन की पैरवी (फ़रमाबरदारी) करो अगर तुम नबी की इत्तिबा करोगे तो तुम मुहब्बते परवर्दिगार में कामयाब हो जाओगे और जिससे अल्लाह तआला मुहब्बत करता है उसके गुनाहों को बख़्श देता है।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता हैः-

> **तर्जुमा-** ऐ रसूल! आप फ़रमा दीजिये अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो मेरी इत्तिबा-ओ-ताबेदारी (फ़रमाबरदारी) करो, अल्लाह तुमसे मुहब्बत फ़रमायेगा और तुम्हारे गुनाहों की बख़्शिश फ़रमा देगा, अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (आले इमरान : 31)

आयत का मफ़हूम मोमिन के मक़सूदे हक़ीक़ी को बयान करता है और वह मक़सूद अल्लाह तआला की मुहब्बत है और अल्लाह तआला का मोमिन को इस मक़सदे हक़ीक़ी तक बुलाना है, जिसके बाद एक अक़्ल रखने वाले के लिये कोई मक़सद नहीं रहता। इस अज़ीम मुहब्बत को आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत की इत्तिबा और सीरते मुक़द्दसा की पैरवी के ज़रिये ही हासिल किया जा सकता है। अब्द बिन हमीद ने हज़रत ह़सन बसरी रज़ि० से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया-

जिसने मेरी सुन्नत से मुँह मोड़ा वो मेरे तरीक़े पर नहीं।

फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सूरह आले इमरान की

आयत 31 तिलावत (जिसका मफ़हूम ऊपर गुज़र चुका है) फ़रमाई। इब्ने अबी हातिम ने हज़रत अबू दर्दा रज़ि० से अल्लाह तआला के इस फ़रमान (आले इमरान 31) के मुताल्लिक़ रिवायत की है कि तुम नेकी व तक़्वा, तवाज़ो, नफ़्सकुशी पर मेरी इत्तिबा करो। इब्ने अबी हातिम ने सुफ़यान बिन एनिया से नक़ल किया है कि इन से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान- (तर्जुमा) "आदमी उसके साथ होगा जिससे वो मुहब्बत करता है" के मुताल्लिक़ मालूम किया गया तो आपने (साइल) से फ़रमाया- क्या तूने अल्लाह का इरशाद- "अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो मेरी इत्तिबा करो, अल्लाह तुम से मुहब्बत फ़रमायेगा" नहीं सुना यानी अल्लाह तुमको क़रीब फ़रमायेगा, मुहब्बत का नाम ही क़ुर्ब है। अल्लाह काफ़िरों से मुहब्बत नहीं करता है यानी उनको क़ुर्ब अता नहीं करता।

हज़रत हसन बसरी रह० ने फ़रमाया कि हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम के असहाब ने अर्ज़ किया- ऐ अल्लाह के रसूल! हम अल्लाह से बेहद मुहब्बत करते हैं, तो अल्लाह ने इरादा फ़रमाया कि अपनी मुहब्बत की एक अलामत मुक़र्रर फ़रमाये। लिहाज़ा आले इमरान की आयत 31 नाज़िल फ़रमाई, इसी आयत की रौशनी में हसन बसरी ने फ़रमाया कि ऐ मुख़ातिब! तू अल्लाह से उसी वक़्त मुहब्बत कर सकता है जब तू उसकी इताअ्तो-फ़रमाबरदारी से मुहब्बत करे।

दूसरी आयत-

अल-मायदा की 54वीं आयत के मफ़हूम में सच्चे मोमिन के अख़लाक़ का बयान हो रहा है, दीन से बेज़ार और तारकीने जिहाद को तंबीह (ख़बरदार) कर रही है और दावते तौहीद के ग़ल्बे की बशारत (ख़ुशख़बरी) दे रही है और मोमिन बन्दों को इस बात की ख़ुशख़बरी दे रही है कि ख़ालिक़े कायनात उनसे मुहब्बत फ़रमाता हैः-

तर्जुमा- ऐ ईमान वालो! तुम में से जो अपने दीन से

फिरेगा तो अनक़रीब अल्लाह ऐसी क़ौम को पैदा फ़रमायेगा जो अल्लाह से मुहब्बत करेगी और अल्लाह उससे मुहब्बत फ़रमायेगा, वो मोमिनों पर नर्म और काफ़िरों पर सख़्त होंगे, अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे और किसी मलामत का ख़ौफ़ नहीं करेंगे, ये अल्लाह का फ़ज़्ल है वो जिसे चाहता है अता करता है, अल्लाह वुसअ्त वाला जानने वाला है। (अलमायदा : 54)

इब्ने जुरैर और इब्ने हातिम रज़ि० ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से अल्लाह के फ़रमान (ऊपर बयान हुई आयत) के मुताल्लिक़ नक़ल किया कि आपने फ़रमाया- ये अल्लाह की जानिब से इरशाद है कि तुम में से जो भी अपने दीन से फिरा तो अल्लाह तआला तुमको तुमसे बेहतर लोगों के ज़रिये बदल देगा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० ने अल्लाह के क़ौल "*अज़िल्लह*" की तफ़सीर रहमा से की है। इब्ने जरीर ने नक़ल किया है कि "*अज़िल्लह अलल मोमिनीन*" के माअ्ना हैं कि वो अपने दीन वालों के लिये नर्म होंगे और "*अइज़्ज़तिन अ़लल काफ़िरीन*" का मतलब है कि इन लोगों के लिये इन्तहाई सख़्त होंगे जो उनके दीन की मुख़ाल्फ़त करेगा।

शेख़ इब्ने रजब हंबली "जामेउल उलूम वलहुक्म" में इस आयत की शरह करते हुए फ़रमाते हैंः-

जिसने हमारी मुहब्बत से एराज़ (मुँह मोड़ा) और हमारे क़ुर्ब से रूगर्दानी (दूरी इख़्तियार) की और बेपरवाई इख़्तियार की तो हम उसके बदले में उस शख़्स को लायेंगे जो इस फ़ज़्लो-इनआम का उससे ज़्यादा हक़दार होगा। लिहाज़ा जिसने अल्लाह से मुँह मोड़ा तो उसके लिये अल्लाह के सिवा कोई बदल नहीं है और अल्लाह के लिये उसके मुक़ाबिल बहुत से लोग हैं, महबूब के दुश्मनों से मुजाहिदा

व मुक़ाबला करना और उस से मुहब्बत करने वालों को दोस्त रखना मुहब्बत के कमाल में से है। मुहिब्ब के लिये महबूब की रज़ामन्दी के सिवा कुछ नहीं है, और उस पर लाज़िम है कि जिससे महबूब राज़ी हो उससे वो राज़ी हो और जिससे महबूब नाराज़ हो उससे वो नाराज़ हो और जो अपने महबूब की मुहब्बत में मलामत से डरता है वो मुहब्बत में सच्चा नहीं है।

तर्जुमा (शेअ्र)- इश्क़ ने मुझे आपके पास ला खड़ा किया तो न अब मेरे लिये आपसे आगे बढ़ने की गुंजाइश है और न पीछे हटने की।

तर्जुमा (शेअ्र)- आपके इश्क़ में मैं मलामत (भर्त्सना) को भी लज़ीज़ पाता हूँ, ये आपकी याद से मुहब्बत की वजह से है तो मलामत करने वाले मेरी मलामत करते रहें।

अल्लामा इब्ने क़य्यिम ने कहाः-

दोस्ती की असास (बुनियाद) मुहब्बत है क्योंकि बाहम दोस्ती व फ़रमाँबरदारी मुहब्बत से ही पैदा होती है जैसा कि अदावतो दुश्मनी की जड़ बुग़्ज़ है, अल्लाह तआला ईमान वालों का दोस्त और मददगार है, लिहाज़ा अहले ईमान अल्लाह के दोस्त हैं क्योंकि ये अल्लाह से मुहब्बत करके उसे दोस्त बनाते हैं और अल्लाह उनसे मुहब्बत फ़रमाकर उन्हें अपना दोस्त बना लेता है, मगर अल्लाह तआला मोमिन बन्दे को उसकी मुहब्बत के बक़्द्र दोस्त रखता है, इसी सबब अल्लाह तआला ने सिर्फ़ उन लोगों पर नकीर (पकड़) फ़रमाई जिन्होंने अल्लाह को छोड़कर दूसरों को दोस्त बना लिया न कि उन पर जिन हज़रात ने

उसके दोस्तों को अपना दोस्त क़रार दिया है, क्योंकि इन हज़रात ने अल्लाह को छोड़कर उन्हें अपना दोस्त और महबूब बनाया बल्कि ये अल्लाह के दोस्तों को इसलिये दोस्त रखते हैं कि वो अल्लाह को दोस्त रखते हैं।

तीसरी आयत-

मोमिन की एक निशानी ये है कि उसका नफ़्स किसी ऐसी चीज़ से मुहब्बत न करे जो उसके महबूब की रज़ा के ख़िलाफ़ हो, हर वो शय (चीज़) जिससे महबूबे हक़ीक़ी (अल्लाह तआला) नाराज़ हो, एक ख़ालिस मुहब्बत करने वाला इससे किसी क़िस्म का ताल्लुक़ पैदा न करे, उसकी हमनशीनी और इस शय को महबूब के बराबर और हमपल्ला जानने से परहेज़ करे।

अल्लाह तआला फ़रमाता है-

तर्जुमा- बाज़ वो लोग हैं जो अल्लाह के अलावा दूसरों को उसका शरीक बना लेते हैं उनसे ऐसी मुहब्बत करते हैं जैसी अल्लाह से की जाती है, हालांकि अहले ईमान अल्लाह से सब से ज़्यादा मुहब्बत करते हैं। (सूरह बक़रा)

अब्द बिन हमीद हज़रत इकरमा रज़ि० से रिवायत करते हैंः-

कुछ लोग ग़ैरुल्लाह को शरीक बना लेते हैं और उनसे अल्लाह की तरह मुहब्बत करते हैं यानी इन माबूदाने बातिल से ऐसी मुहब्बत करते हैं जैसे मोमिनीन अल्लाह से करते हैं और मोमिन अल्लाह से बहुत मुहब्बत करते हैं यानी कुफ़्फ़ार के अपने बुतों से मुहब्बत की बनिस्बत मोमिन अल्लाह से बहुत ज़्यादा मुहब्बत करते हैं।

इमाम अहमद बिन हम्बल हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से अपनी मुसनद में नक़ल करते हैंः-

नबी करीम अलैहिस्सलातो वस्सलाम का सहाबा किराम की

एक जमाअत के साथ किसी ऐसी जगह से गुज़र हुआ जहाँ एक छोटा बच्चा बैठा हुआ था, जब इस बच्चे की माँ ने जमाअत को देखा तो उसे अन्देशा हुआ कि कहीं उसके बच्चे को रौंद (कुचल) न दिया जाये, तो वो पुकारती हुई दौड़ती है कि मेरा बेटा! मेरा बेटा! (औरत की ये सूरतेहाल देखकर) सहाबा ने अर्ज़ किया- या रसूलुल्लाह! उस औरत की हालत क्या होगी? जब उसका बेटा आग में डाला जायेगा? तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया- नहीं, ख़ुदा की क़सम, अल्लाह अपने महबूब को आग में नहीं डालेगा।

सहीहैन में हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत हैः-

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तीन ख़सलतें जिस में हों उसने ईमान की हलावतो-चाश्नी (मिठास) पा ली- 1. अल्लाह और उसके रसूल उसके नज़दीक दूसरों से ज़्यादा महबूब हों। 2. वो किसी भी शख़्स से सिर्फ़ अल्लाह के लिये मुहब्बत करे। 3. उसे कुफ़्र में लौटना इतना नापसन्द हो जैसा कि उसे अपना आग में डाला जाना। (बुख़ारी, मुस्लिम, मुसनदः अहमद)

चौथी आयत-

अल्लाह तआला की मुहब्बत के सामने हर क़िस्म की मुहब्बत, माल, औलाद बे फ़ायदा है, उस ज़ाते पाक के सामने हस्बो-नस्ब की कोई हक़ीक़त नहीं, माँ-बाप, औलाद, बीवी, कुन्बा (ख़ानदान) व तिजारत की उसके सामने कोई हैसियत नहीं है।

अल्लाह तआला फ़रमाता हैः-

तर्जुमा- आप फ़रमा दीजिये अगर तुम्हारे बाप, तुम्हारे बेटे, तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियाँ, तुम्हारा कुन्बा और तुम्हारी कमाई के माल और वो तिजारत जिसके नुक़सान

का तुम अन्देशा करते हो और तुम्हारे पसन्दीदा मकान अल्लाह व रसूल और अल्लाह की राह में जिहाद करने से ज़्यादा महबूब हों तो तुम इन्तिज़ार करो यहाँ तक कि अल्लाह हुक्म भेज दे, अल्लाह तआला फ़ासिक़ (गुनहगार) क़ौम को हिदायत नहीं देता है। (सूरह तौबा : 24)

जो शख़्स अल्लाह की मुहब्बत और उसके ज़िक्र से मुँह मोड़े और उससे मुलाक़ात का शौक़ न रखता हो, अल्लाह उसे ग़ैरुल्लाह की मुहब्बत में मुब्तिला कर देता है और फिर इसी वजह से दुनिया, बरज़ख़ और आख़िरत में अज़ाब देता है। अब या तो अल्लाह तआला बुतों, सलीबों और आग से मुहब्बत करने के सबब अज़ाब देगा या वो शख़्स औरतों, माल, दोस्त वग़ैरा जैसी कमतर व ज़लील चीज़ों की मुहब्बत में गिरफ़्तार होने की वजह से अज़ाबे इलाही में मुब्तिला हो, लिहाज़ा इन्सान अपने महबूब का ख़ादिमो-ग़ुलाम है, अब चाहे उसका महबूब कोई भी हो, जैसा कि सय्यिदी इब्नुल फ़ारिज़ फ़रमाते हैं:-

तर्जुमा- जिससे भी तूने मुहब्बत की बहरहाल तुझे उसकी मुहब्बत में मरना है, लिहाज़ा तू इश्क़ के मामले में अपने नफ़्स के लिये इख़्तियार कर कि किस को पसन्द कर रहा है।

लिहाज़ा अल्लाह जिसका मालिको मौला न हो ऐसे शख़्स की ख़्वाहिश ही उसका ख़ुदा होती है।

बुख़ारी की वो हदीस जो हज़रत अनस से मरवी है उसमें ये बात गुज़र चुकी है कि बन्दे के दिल में ईमान की हलावत और चाश्नी की पहली शर्त ये है कि उसके नज़्दीक अल्लाह व रसूल सबसे ज़्यादा महबूब हों।

पाँचवीं आयत-

मुहब्बते इलाही के नाम पर फ़क़त झूटे दावे न हों जिस तरह यहूदो

नसारा (ईसाई) ख़ुदा की मुहब्बत के बातिल दावे करते हैं, दरहक़ीक़त मुहब्बत के कुछ अलामातो-शवाहिद (निशानी व सुबूत) होते हैं, इसकी साफ़ अलामत मुख़ाल्फ़त को तर्क करना और उन नाफ़रमानियों से परहेज़ करना है जो महबूब को नाराज़ व ग़ज़बनाक करती हों। इसलिये कि हर मुहब्बत करने वाला अपने महबूब की ताबेदारी व फ़रमाँबरदारी करता है। परवर्दिगारे आलम इरशाद करता हैः-

तर्जुमा- यहूदो-नसारा ने कहा कि हम अल्लाह के बेटे और उसके महबूब हैं (ऐ रसूल) आप उनसे फ़रमा दीजिये! फिर अल्लाह तआला तुम्हारे गुनाहों के सबब तुम्हें अज़ाब क्यों देता है? बल्कि तुम उसकी पैदा कर्दा मख़लूक़ में एक बशर हो, अल्लाह जिसे चाहता है बख़्श देता है और जिसको चाहता है अज़ाब देता है, ज़मीनो-आसमान और उसके माबैन (दरम्यान) अल्लाह ही की बादशाहतो हुकूमत है और चीज़ को उसकी तरफ़ पलटना है। (अल-मायदाः18)

इब्ने अबी हातिम और इब्ने जरीर हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से रिवायत करते हैं-

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नोमान बिन असमा, अम्र बिन उमर और शास बिन अदी यहूदियों के पास तशरीफ़ लाये तो उन्होंने आपसे गुफ़्तगू की, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी उनसे कलाम फ़रमाया और उनको दावते इलल्लाह दी और उनको अल्लाह के अज़ाब से डराया तो इन लोगों ने कहा- "ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! तुम हमें डराते हो ख़ुदा की क़सम हम अल्लाह के बेटे और उसके महबूब हैं", तो ये आयत नाज़िल हुई (जिसका तर्जुमा ऊपर गुज़र चुका है)।

एक सूफ़ी ने किसी फ़क़ीह (आलिम) से पूछा कि तुम क़ुरआन में किस जगह पाते हो कि मुहिब्ब अपने महबूब को अज़ाब नहीं देगा। उन फ़क़ीह से कोई जवाब न बन पड़ा, तो सूफ़ी ने (तर्जुमा) “फ़रमा दीजिये! फिर अल्लाह तआला तुम्हारे गुनाहों के सबब तुम्हें अज़ाब क्यों देता है?” आयत तिलावत की। इस आयते मुक़द्दिसा की तफ़सीर में यही बात हज़रत हसन बसरी रज़ि० ने फ़रमाई है जिसका ज़िक्र इब्ने कसीर ने अपनी तफ़सीर में किया है।

हज़रत शेख़ याहया बिन मुआज़ रह० ने फ़रमाया–

> वो शख़्स अपनी मुहब्बत में सच्चा नहीं है जिसने अल्लाह से किये गये अहदो-पैमान (वादों) की हिफ़ाज़त नहीं की, उसकी हुरमात (पाबन्दियों) की ताज़ीम नहीं की और उसके एहसानो फ़ज़्ल को नहीं पहचाना।

ऐ यहूदो-नसारा! तुम मुहब्बते इलाही का किस मुँह से दावा करते हो हालांकि तुम जिस ज़ात से मुहब्बत का दावा करते हो उसी की मुख़ाल्फ़त करते हो, उसकी मुख़ाल्फ़त में कोई मौक़ा नहीं जाने देते हो।



मुहब्बत और तौहीद

दौरे हाज़िर में बाज़ जाहिल लोग जिनकी वजह से आलमे इस्लाम मसाइब (मुसीबतों) में मुब्तिला है, उन हज़रात पर शिर्को-बिदअत और गुमराही की तोहमत लगाते हैं जो उलमा-ए-दीन का एहतराम करते हैं, उनसे मुहब्बत करते हैं। मगर हक़ीक़त में ये जाहिल अपने इस तर्ज़े अमल से सालिहीने उम्मत के ख़िलाफ़ अपने दिलों में भरे हुए बुग़्ज़ो-हसद का इज़हार करते हैं और इस रूहे मुहब्बत और इस इस्लामी भाई चारे से दूरी ज़ाहिर करते हैं जिसको सहाबा किराम रिज़्वानुल्लाहि अलैहिम की पहली जमाअ़त ने ख़ुलूसो मुहब्बत, एक दूसरे से रहमो-शफ़क़त की उम्दा और आला मिसालों के ज़रिये पेश किया। ये महरूमो-नामुराद लोगों की जमाअ़त (जिनके दिल बिदअ़त के शैदाई और शरीअ़ते मुहम्मदिया से इन्तहाई दूर हैं) चाहती है कि इस पाकीज़ा जमाअ़त के दिलों को भी अपने रंग में रंग लें जिनके दिल बादल के पानी की तरह साफ़ो-शफ़्फ़ाफ़ हैं, इनके नुफ़ूसे क़ुदसिया बुग़्ज़ व कीना से पाक हैं और रूहें बशरी अलाइक़ से मुनज़्ज़ा (पाक व साफ़) हैं।

हर पाक साफ़ दिल रखने वाले पर ये बात ज़ाहिर है और हम में से हर एक अपनी हक़ीक़ी ज़िन्दगी में भी महसूस करता है कि इन्सान जब किसी चीज़ से मुहब्बत करता है तो उससे ताल्लुक़ रखने वाली हर चीज़ से मुहब्बत करता है मसलन जब इन्सान किसी ज़ात से मुहब्बत करता है तो चाहता है उसके मुताल्लिक़ बातों को सुने, उसके दोस्तों, अहबाब, पहचान के लोगों में उठे बैठे, बल्कि वो अपने महबूब के इकरामो ताज़ीम की वजह से उसके मुताल्लिक़ीन (मिलने जुलने वालों) से मुहब्बत करता है क्योंकि ये हक़ीक़त है कि मुहब्बत करने वाले के लिये महबूब की हर चीज़ महबूब होती है।

शेख़ अकबर इब्ने अरबी ने फ़रमाया-

तर्जुमा- मुहिब्ब (प्रेमी) मुहब्बत में हर उस हालत पर जमा रहता है जिसको उसका महबूब (प्रिय) पसन्द करता है। और वो आशिक़ (प्रेमी) हर उस चीज़ की क़द्र करता है जिसको उसका माशूक़ (प्रिय) उससे चाहता है, उसके लिये नज़्दीकी व दूरी की कोई हक़ीक़त नहीं होती है यानी वो इससे बेनियाज़ होता है।

हमें मुहब्बत के इसी बेहतरी दर्जे को चुनना चाहिये जो किसी सूफ़ी के नज़्दीक है, फ़रमाते हैंः-

तर्जुमा- तेरी ख़ातिर मुहब्बत की तकलीफ़ें भी मेरे लिये मीठी हैं और उसकी दूरी भी नज़्दीकी है। मुझे मुहब्बत के बाब में इतना ही काफ़ी है कि मैं हर उस चीज़ से मुहब्बत करता हूँ जिससे तू मुहब्बत करता है।

ऐ बिरादरे मोमिन! तेरा उस शख़्स के मुताल्लिक़ क्या ख़्याल है जो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से मुहब्बत करता है और हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम से मुहब्बत अपने महबूबे हक़ीक़ी (अल्लाह तआला) के बाइस करता है क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वो हबीबे किब्रिया हैं कि हर हौलनाकी के वक़्त आपकी शफ़ाअ्त की उम्मीद की जाती है।

लफ़्ज़ हबीब लुग़त (डिक्शनरी) में मुहिब्ब और महबूब दोनों माअ्ना में आया है तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के भी हबीब हैं और मोमिनीन के भी हबीब हैं, लिहाज़ा आप हबीब भी हैं और महबूब भी हैं। उस शख़्स के मुताल्लिक़ आपका क्या ख़्याल है जो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तो मुहब्बत करता हो और आपसे मुहब्बत रखने की वजह से आपके नायबीन ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन, उलमा-ए-आमिलीन से मुहब्बत न करता हो? और आपकी रिसालत पर ईमान रखने वाले आम मोमिनीन और इताअ्त शिआर मुसलमानों को महबूब न रखे?

इस सिलसिले में इब्ने क़य्यिम अपनी किताब "अलजवाबुल-काफ़ी" में तहरीर करते हैंः-

> महबूब की दो क़िस्में होती हैं- एक महबूब लिनफ़्सिही (हक़ीक़ी) होता है, दूसरा महबूब लिग़ैरिही (ग़ैर), तसलसुल मुहाल को दूर करने के लिये महबूब लिग़ैरिही की इन्तिहा महबूब लिनफ़्सिही पर होना ज़रूरी है। महबूबे हक़ीक़ी के मासिवा हर चीज़ महबूबे लिग़ैरिही है क्योंकि सिवाय अल्लाह तआला के कोई चीज़ नहीं जिससे लिनफ़्सिही मुहब्बत की जाये, अल्लाह तआला के सिवा जिससे भी मुहब्बत की जाती है वो अल्लाह तआला की मुहब्बत के ताबे होती है जैसा कि फ़रिश्तों, अंबिया-ए-किराम और उसके वलियों की मुहब्बत क्योंकि इन हज़राते किराम से मुहब्बत करना अल्लाह तआला की मुहब्बत के ताबे है और उसके लवाज़मात में से है इसलिये कि महबूब से मुहब्बत करना इस बात को लाज़िम क़रार देता है कि महबूब के महबूब से मुहब्बत की जाये।

हम इमामे फ़िक़्ह इमाम शाफ़ई अलैहिर्रहमा वर्रिज़वान के इस शेअ्र को फ़रामोश नहीं कर सकते जिसको वो अक्सर गुनगुनाया करते थे कि-

> **तर्जुमा**- मैं नेक हज़रात से मुहब्बत करता हूँ अगरचे मैं इनमें शामिल नहीं हूँ उम्मीद है कि मैं इन से मुहब्बत करने की वजह से उनकी शफ़ाअ्त पालूँ।

ऐ बिरादरे मोमिन! मुहब्बत ईमान का पैमाना है और जैसा कि ये मशहूर बात है कि ईमान में कमी बेशी होती है तो ईमान की कमी बेशी मुहब्बत की कमी बेशी के सबब होती है।

ऐ अल्लाह! तू हमें इस बात से महफ़ूज़ फ़रमा कि हम से तेरे हबीबे

मुकर्रम, औलिया-ए-किराम और तेरे मोमिन बन्दों की मुहब्बत में कोताही हो। ऐ अरहमर-राहिमीन! इन हज़रात के लिये हमारी मुहब्बत में इज़ाफ़ा फ़रमा।

यही मुहब्बत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस फ़रमान- "तुम ईमान वाले नहीं होगे यहाँ तक कि आपस में एक दूसरे से मुहब्बत न करो" (मुस्लिम, अबूदाऊद, इबने माजह) की मिस्दाक़ (हक़दार) है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया-

> **तर्जुमा-** तुम में से कोई ईमान वाला नहीं होगा यहाँ तक कि वो अपने भाई के लिये वही पसन्द करे जो अपने लिये चाहता है।

ऐ मेरे मुसलमान भाई! ज़रा ग़ौर तो कर कि सरवरे कोनैन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किस तरह ईमान को मुहब्बत से मिला दिया और मुहब्बत को ईमान की शर्ते अव्वल और बुनियाद क़रार दिया, लिहाज़ा जहाँ अल्लाह व रसूल और अहले ईमान से मुहब्बत पाई जाएगी वहाँ ईमान पाया जायेगा और जहाँ अल्लाह व रसूल और अहले ईमान की मुहब्बत नहीं होगी वहाँ ईमान भी नहीं होगा।

जैसा कि गुज़िश्ता (पिछले) सफ़हात में हमने ज़िक्र किया कि मुहिब्बे सादिक़ वो है जो अपने महबूब की मुहब्बत में इस तरह फ़ना हो जाए कि वो हर उस शय (चीज़) से मुहब्बतो-उल्फ़त रखे जिससे उसका महबूब मुहब्बतो-उल्फ़त रखता है और यही हाल हज़राते सूफ़िया किराम का होता है कि वो दरहक़ीक़त अल्लाह के सिवा किसी से मुहब्बत नहीं करते और अगर वो किसी मख़लूक़ से मुहब्बत करते हैं तो फ़क़त (सिर्फ़) अल्लाह के लिये करते हैं या इसलिये करते हैं कि वो ख़ुद अल्लाह के महबूब बन्दे हैं, बख़ुदा यही सच्ची तौहीद है।

सूफ़िया किराम अगर अपने शेख़ से मुहब्बत करते हैं तो इसलिये कि उनका शेख़ अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करता है और

अगर वो खाने को पसन्द करते हैं तो इसकी वजह ये है कि खाना उन्हें अल्लाह की इताअ़तो-फ़रमाँबरदारी पर ताक़तो-क़ुव्वत फ़राहम करता है और अहले ईमान से इसलिये मुहब्बत करते हैं कि वो अल्लाह के हबीब के उम्मती हैं। सूफ़िया किराम की ये मुहब्बत अल्लाह तआला के महबूबों के साथ कमाले अदब पर दलालत करती है, इसमें कोई शक नहीं कि एक सच्ची मुहब्बत करने वाला अपने महबूब की रज़ा हासिल करने के लिये हर मुमकिन कोशिश करता है।

महबूब के मिलने जुलने वाले व दोस्त की मुहब्बत का अभी हमने जो ज़िक्र किया मुहिब्ब उनसे मुहब्बत अपने महबूब का क़ुर्ब (निकटता) हासिल करने के लिये करता है, महबूब की हर पसन्दीदा चीज़ से मुहब्बत करके मुहिब्ब अपने महबूब की मुहब्बत पर दलाइल (तर्क) पेश करना चाहता है जैसा कि मुहिब्ब ज़बाने हाल से ये कहता हैः-

> ऐ मेरे परवर्दिगार! तू हमारे सरवरे कोनैन मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत फ़रमाता है इसी वजह से मैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके मुहिब्बीन (प्रेमियों) से मुहब्बत करता हूँ और आँहज़रत के नक़्शे क़दम पर चलता हूँ, उनके तरीक़े की इत्तिबा व पैरवी करता हूँ और हर उस शख़्स को मैं अज़ीज़ दोस्त रखता हूँ जो रसूले अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाया और उनकी तस्दीक़ की, मैं उन तमाम लोगों की रज़ामन्दी के लिये कोशिश करता हूँ, उम्मीद है कि तू मुझसे राज़ी हो जाये और अपना क़ुर्बे ख़ास अता फ़रमा दे।



वो चीज़ें जो अल्लाह से मुहब्बत को बढ़ाती हैं

ये बात साफ़ हो चुकी कि अल्लाह की मख़लूक़ में आख़िरत में हाल के लिहाज़ से वो शख़्स सबसे ज़्यादा नेक बख़्त और सआदतमन्द होगा जो अल्लाह तआला से सबसे ज़्यादा मुहब्बत करता है, क्योंकि आख़िरत के माअ्ना बारगाहे ख़ुदावन्दी में पेश होना और लिक़ा-ए-बारी तआला (अल्लाह के दीदार) से फ़ैज़याब होना है। मुहिब्ब के लिये सबसे बड़ी नेअ्मत उस वक़्त हासिल होगी जब वो ख़ूब शौक़ के बाद अपने महबूबे हक़ीक़ी के सामने हाज़िर होगा और हमेशा महबूब की हमनशीनी (सोहबत) में, उसके मुशाहिदे (दीदार) में डूबा रहेगा, जहाँ कोई रक़ीब होगा न कोई रोक, न महबूब के दीदार के ख़त्म होने का ख़ौफ़ होगा और न ऐश को ख़त्म करने वाली शय का अन्देशा होगा मगर ये नेअ्मते उज़्मा मुहब्बत की क़ुव्वत के बक़द्र होगी और जब जब मुहब्बत में इज़ाफ़ा होगा लज़्ज़तो सुरूर में इज़ाफ़ा होगा।

अल्लाह तआला की अस्ल मुहब्बत मोमिन के दिल से जुदा नहीं होती है और मुहब्बत की क़ुव्वत जिसकी इन्तिहा झुकाव और इश्क़ पर होती है और ये वही है जो मुहिब्ब को महबूब के दीदार के लिये बेचैनो बेक़रार कर देती है। इस मुहब्बत से अक्सर लोग महरूम रहते हैं। मुहब्बत के हासिल होने के दो वजह हैंः-

पहली वजह- दुनिया से ताल्लुक़ का दूर होना और दिल से ग़ैरुल्लाह की मुहब्बत का निकालना (सच्ची मुहब्बत हासिल होने का पहला सबब है) क्योंकि दिल उस बरतन की तरह है जो एक वक़्त में सिर्फ़ एक ही तर चीज़ के समाने की गुंजाइश रखता है।

अल्लाह का फ़रमान है-

तर्जुमा- अल्लाह तआला ने एक आदमी के अन्दर दो

दिल नहीं बनाए। (अल-अहज़ाब : 4)

मुहब्बत की तलब ये है कि बन्दा दिल की गहराई से परवर्दिगारे आलम को महबूब रखे, जब तक वो ग़ैरुल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह रहता है तो उसके दिल का एक कोना ग़ैरुल्लाह (अल्लाह के सिवा) के साथ मशग़ूल रहता है, इसलिये जिस क़दर उसका दिल ग़ैरुल्लाह के साथ मशग़ूल रहेगा उसी क़दर अल्लाह की मुहब्बत उससे कम होती रहेगी, ये ही मोमिन के क़ौल- "*ला इलाहा इल्लल्लाह*" (अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं) के माअ़ना हैं यानी "*ला मअ़बूदा बिहक़्क़िन इल्लल्लाह*" सिवाय अल्लाह के कोई माबूदे हक़ीक़ी नहीं है, "*वला महबूबा बिहक़्क़िन इल्लल्लाह*" यानी अल्लाह के सिवा कोई महबूबे हक़ीक़ी नहीं है। हर महबूब जो अल्लाह से फेर दे वो माबूद (बातिल) है, इसलिये परवर्दिगारे आलम ने फ़रमायाः-

तर्जुमा- क्या आपने उस शख़्स को देखा जिसने अपनी ख़्वाहिश को अपना माबूद बना लिया। (अलफ़ुरक़ान- 43)

इब्ने क़य्यिम जोज़िया "अलजवाबुल काफ़ी" में मुहब्बत की यकजाई के बारे में तहरीर करते हैंः-

एक दिल में महबूबे हक़ और मख़लूक़ की मुहब्बत इज्तिमा नामुमकिन है, इसलिये कि ख़ालिक़ो-मख़लूक़ की मुहब्बत आपस में ज़िद है, जो एक दिल में जमा नहीं हो सकती। लिहाज़ा ज़रूरी है इन दोनों मुहब्बतों में से कोई एक दूसरे को दिल से निकाल दे, तो जो शख़्स इस सब से बुलन्दो बाला महबूब की मुहब्बत में मज़बूत होगा जिसके मासिवा (ग़ैर) की मुहब्बत बातिल है और साहिबे मुहब्बत के लिये अंजाम के एतबार से अज़ाब है तो ये बुलन्द तरीन महबूब की मुहब्बत उसे ग़ैर की मुहब्बत से मुन्हरिफ़ (अलग) कर देगी और अगर वो शख़्स ग़ैर से मुहब्बत करेगा तो इस

अशरफ़ो-आ़ला महबूब की वजह से करेगा या इसलिये कि ग़ैर की मुहब्बत इस महबूबे हक़ीक़ी की मुहब्बत के लिये वसीला होगी या इस मुहब्बत से बाज़ रखेगी जो महबूबे हक़ीक़ी की मुहब्बत के ख़िलाफ़ है।

इब्ने क़य्यिम आगे लिखते हैंः-

सच्ची मुहब्बत महबूब की यकताई का तक़ाज़ा करती है, और वो अपनी मुहब्बत में ग़ैर की शिरकत को पसन्द नहीं करती जबकि महबूब मख़लूक़ में से हो तो महबूब ऐसे मुहिब्ब पर नाराज़ होता है, उससे दूरी इख़्तियार करता है और अपने क़ुर्ब से उसे महरूम कर देता है और इस मुहिब्ब को अपने दावा-ए-मुहब्बत में झूठा ठहराता है हालांकि वो महबूबे मजाज़ी ख़ालिस और शदीद मुहब्बत का अहल (हक़दार) भी नहीं है तो उस महबूबे हक़ीक़ी का आलम क्या होगा कि मुहब्बत उसी वहदहू ला शरीक को ज़ेब देती है, ग़ैरुल्लाह की मुहब्बत मुहिब्ब पर अज़ाब और वबाल है, इसलिये अल्लाह तआला मुहब्बत में शिरकत करने वाले की बख़्शिश नहीं फ़रमायेगा और इसके सिवा जिसकी चाहेगा मग़फ़िरत फ़रमा देगा।

दूसरी वजह- दिल को तमाम दुनियवी ताल्लुक़ात से पाको-साफ़ करने के बाद इस दिल पर मआ़र्फ़ते इलाही का ज़हूर होता है और इसी कैफ़ियत के मुताल्लिक़ कहा गया है-

तर्जुमा- जिसने चालीस दिन अल्लाह तआला के लिये मख़सूस कर लिये उसके दिल से, उसकी ज़बान पर हिकमतों के चश्मे जारी हो जाते हैं।

जब बन्दे का दिल ग़ैरों की मुहब्बत से ख़ाली हो जाये तो उस वक़्त उसे मआ़र्फ़त हासिल होती है। मआ़र्फ़त की तारीफ़ यूँ भी बयान की जाती

है कि अल्लाह के अलावा हर चीज़ मोमिन के दिल से निकल जाये ख़्वाह वो राई के दाने से भी कमतर हो। दिल से ग़ैरुल्लाह के निकल जाने का नाम मआ़र्फ़त है।

दिल से दुनिया की मसरूफ़ियतों को साफ़ करना ऐसा है जैसे बीज को कूड़ा-करकट से साफ़ करके ज़मीन में बोना, फिर इस बीज से मुहब्बतो-मआ़र्फ़त का दरख़्त पैदा होता है, यही मुहब्बतो-मआ़र्फ़त वो पाकीज़ा कल्मा है जिसकी मिसाल अल्लाह तआला अपने कलाम में यूँ बयान फ़रमाईः-

> **तर्जुमा-** क्या आपने मुलाहिज़ा नहीं किया कि अल्लाह ने कैसी उम्दा मिस्ल बयान की कि कल्मा तय्यबा उस पाकीज़ा दरख़्त की मानिन्द है जिसकी जड़ें मज़बूत हैं और शाख़ें आसमान में हैं और ये दरख़्त हर वक़्त अपने रब के हुक्म से फल दे रहा है। (सूरह इब्राहीम : 24)

और इसी मआ़र्फ़ते ख़ुदावन्दी की जानिब अल्लाह के इस फ़रमान में इशारा हैः-

> **तर्जुमा-** इसी की जानिब पाकीज़ा कलिमात और अमले सालिह चढ़ते हैं और अल्लाह उसको बुलन्द करता है।

अमल से मुराद यही मुहब्बत है और जब जब इस मआ़र्फ़त का हुसूल होगा तो यक़ीनन इसके ताबे मुहब्बत होगी, दिल को दुनियवी मसरूफ़ियतों से अलग करने के बाद फ़िक्रे साफ़ी, परवर्दिगारे आलम का दायमी ज़िक्र, तलब में जिद्दो-जुहद और कोशिश, ख़ुदा-ए-बरतर के अफ़आलो-सिफ़ात में गहरी नज़र और आसमानों की बादशाहत और जुमला मख़लूक़ात में ग़ौरो-फ़िक्र करने से मआ़र्फ़ते इलाही तक पहुँचा जा सकता है।



लोगों के मुहब्बते इलाही में अलग-अलग होने की वजह

अल्लाह व रसूल की अस्ल मुहब्बत में तमाम मोमिन शरीक हैं क्योंकि बग़ैर मुहब्बत के ईमान की कोई हक़ीक़त नहीं, लेकिन मआ़र्फ़ते इलाही के इख़्तिलाफ़ के सबब लोग मुहब्बत में मुख़्तलिफ़ (अलग-अलग) हैं। इसलिये कि चीज़ें सिर्फ़ अपने वुजूहात के इख़्तिलाफ़ की वजह से मुख़्तलिफ़ और फ़र्क़ रखने वाली होती हैं। अक्सर लोगों को मआ़र्फ़ते ख़ुदावन्दी हासिल नहीं होती है, सिवाय अल्लाह की इन सिफ़ात के जिनको उनके कानों ने सुना और इन लोगों ने इसे पाकर महफ़ूज़ कर लिया और कभी उनके दिलों में इन मआ़नी का ख़्याल गुज़रता है जिनसे अल्लाह तआला की ज़ात बुलन्दो बाला है। कभी वो लोग सिफ़ाते इलाहिया को सिर्फ़ तसलीम कर लेते हैं क्योंकि वो इसकी हक़ीक़त पर आगाह नहीं हुए और न उनके सिफ़ात के कोई फ़ासिद माअ़ना का ख़्याल उनके दिल पर गुज़रता है क्योंकि ये अमल में मशग़ूल हो गये और बहसो-कुरेद को उन्होंने तर्क कर दिया, यही लोग असहाबे यमीन में से सलामती वाले हैं और मुतख़य्यल लोग गुमराह हैं (जो अल्लाह की सिफ़ात के मुताल्लिक़ ग़लत ख़्याल बांधते हैं जिससे परवर्दिगारे आलम की ज़ात पाक है) और सिफ़ाते इलाहिया की हक़ीक़तों को पहचानने वाले मुक़र्रबीन हैं।

ज़्यादा वज़ाहत के लिये हम एक मिसाल पेश करते हैं, इमाम शाफ़ई अलैहिर्रहमा एक आलिम बा अमल थे, उनसे उलमा-ए-किराम और अवाम सब ही मुहब्बत करते हैं (यानी सब उनकी मुहब्बत में शरीक हैं) क्योंकि ये सब लोग इमाम शाफ़ई के फ़ज़्लो-कमाल, हुस्ने-सीरतो-किरदार, उनके ख़साइले हमीदा को यकसाँ तौर पर मानते हैं, मगर आम इन्सान ने उनके इल्म को कम जाना है और एक आलिम उनके इल्म को

तफ़सील से जानता है, लिहाज़ा इमाम शाफ़ई अलैहिर्रहमा से एक आलिमो-फ़क़ीह की मआ़र्फ़तो मुहब्बत एक आमी शख़्स के मुक़ाबले में ज़्यादा होगी।

इसी तरह अगर कोई शख़्स किसी माहिरो-कामिल (दक्ष) लेखक की बेहतरीन किताब पर मुत्तला (बाख़बर) हुआ और उसने इस मुसन्निफ़ को अच्छा समझा और उसकी फ़ज़ीलत को तसलीम कर लिया तो यक़ीनन वो मुसन्निफ़ (लेखक) उस शख़्स को महबूब होगा और उसके दिल में उस मुसन्निफ़ की जानिब झुकाव होगा, अब वही शख़्स इसी मुसन्निफ़ की किसी दूसरी तसनीफ़ को देखे जो पहली वाली से ज़्यादा बेहतर हो तो बिला शुबह उस शख़्स के दिल में मुसन्निफ़ की मुहब्बत दो गुनी हो जायेगी क्योंकि मुसन्निफ़ की मआ़र्फ़त उसके इल्म के बाइस दो गुनी होगी, यही हाल तमाम आमाल और सिनअ़तो-ह़रफ़त का है।

मसलन एक आमी (आम आदमी) जब सुनता है कि फ़लाँ मुसन्निफ़ की तस्नीफ़ बहुत अच्छी है, लेकिन वो आम आदमी ये नहीं जानता है कि इस मुसन्निफ़ की तस्नीफ़ात में क्या है? तो उसे मुसन्निफ़ की मआ़र्फत मुख़्तसिर हासिल होगी और उसकी जानिब उसकी मुहब्बत भी मुख़्तसिर होगी। मगर एक साहिबे बसीरत शख़्स जब इस मुसन्निफ़ की तालीफ़ (पुस्तक) में ग़ौरो फ़िक्र करके उन अजाइब पर बाख़बर होगा जिस पर किताब मुश्तमिल है तो बिला शको-शुबह मुसन्निफ़ से उसकी मुहब्बत में इज़ाफ़ा होगा, क्योंकि सिनअ़त के अजाइबो-ग़राइब बनाने वाले, पहुँचाने वाले कमाले सिफ़ात पर दलालत करते हैं, लिहाज़ा आलिम और आम आदमी दोनों रब्बे कायनात की कारीगरी को जानते हैं और इसका एतक़ाद भी रखते हैं, लेकिन साहिबे बसीरत आलिम कायनात में अल्लाह तआला की क़ुदरत के शाहकार को तफ़सीली तौर पर जानता है।

मोमिन को अल्लाह तआला की मुहब्बतो मआ़र्फ़त में इज़ाफ़ा व

ज़्यादती इसकी नेअ्मतों और तख़लीक़ (पैदा की हुई चीज़ों) में ग़ौरो-फ़िक्र के तरीक़ से हासिल होती है। मरवी है कि अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम पर वही भेजीः-

ऐ दाऊद! तू मुझसे मुहब्बत कर और मेरे महबूबों से मुहब्बत कर और मेरे बन्दों को मुझ से मुहब्बत करने वाला बना, हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया- ऐ परवर्दिगार! मैं तुझ से और तेरे महबूबों से मुहब्बत करता हूँ लेकिन मैं तेरे बन्दों को तेरा मुहिब्ब किस तरह बनाऊँ? तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया- उनको मेरी नेअ्मतें याद दिला।

बिला शुबह जब साहिबे बसीरत बन्दा-ए-मोमिन रब्बे कायनात की नेअ्मतों और उसकी मख़लूक़ के अजीब व ग़रीब चीज़ों में ग़ौरो-फ़िक्र करता है और इसके इसरारो-रुमूज़ (छिपी हुई बातों) में ग़ोता-ज़न (डूबा) रहता है तो अज़सरे नौ कुदरते इलाही की अज़्मतो-रिफ़अ़त का मुशाहिदा करता है और उसे इस बात का यक़ीन हो जाता है कि परवर्दिगारे आलम क़ुदरत, बक़ा, कमाल और वुजूद की सिफ़ात में यकता है और सिफ़ात इन्किसारी व आजिज़ी बन्दे के ख़वास में दाख़िल है, अल्लाह तआला की क़ुदरत के सामने बन्दा सबसे छोटे जानवर की तख़लीक़ (पैदा करने) से भी आजिज़ है क्योंकि वो हस्ती जिसकी इन्तिहा ख़ुद फ़ना है, वो किसी दूसरे की तख़लीक़ से यक़ीनन आजिज़ होगी। इसी तरीक़ा-ए-तफ़कीर के ज़रिये इन्सान मआ़र्फ़ते इलाही की राह पर चलने लगता है।

मआ़र्फ़त का बुलन्द तरीन मक़ाम ये है कि तू हर चीज़ और हर मौजूद को अल्लाह के वास्ते से पहचाने। किसी आरिफ़ बिल्लाह से पूछा गया कि मआ़र्फ़ते इलाही के हासिल करने का क्या तरीक़ा है? तो उन्होंने जवाब दिया कि परवर्दिगार को अशिया (चीज़ों) के वास्ते से नहीं

जाना जाये बल्कि अशिया को रब्बे कायनात के वास्ते से जाना जाये। हज़रत ज़ुन्नून मिसरी फ़रमाते हैंः-

तर्जुमा- मैंने अल्लाह को अल्लाह ही के ज़रिये पहचाना और दूसरी चीज़ों को अल्लाह के नूर से पहचाना।

शेख़ इब्ने अता उल्लाह स्कन्दरी अपनी एहतियाज इलल्लाह के साथ बारगाहे ख़ुदावन्दी में दुआ करते हैंः-

ऐ अल्लाह! जो चीज़ अपने वुजूद में तेरी मोहताज है उस से तेरी जानिब रहनुमाई कैसे हासिल की जा सकती है? क्या तेरे अलावा किसी को वो ज़हूर हासिल है जो तुझे नहीं? यहाँ तक कि वो तेरा मज़हर हो जाये? तू ग़ायब कहाँ है? (यानी ग़ाइब नहीं है) कि तुझ पर रहनुमाई करने के लिये किसी रहनुमा की ज़रूरत हो, तू कब दूर है? (यानी दूर नहीं है) कि तेरी जानिब पहुँचाने के लिये आसारो-अलामात की हाजत हो। ऐ मेरे माबूद! मैं तुझी से तेरा विसाल चाहता हूँ, मैं तेरे ज़रिये तुझ पर रहनुमाई चाहता हूँ, तू अपने नूर से अपनी जानिब मुझे हिदायत दे और मुझे अपने हुज़ूर मक़ामे अब्दियत पर क़ाइम रख।

इन्सान का अल्लाह तआला की नेअ्मतों में एक नज़र डालना और मौजूदाते इलाही में ग़ौरो-फ़िक्र करना अज़सरे नौ उसके दिल में ख़ालिक़ की अज़मतो कुदरत को साबित करता है, अब ख़्वाह ये तफ़कीर वो ख़ुद अपनी ज़ात में करे या आसमानो-ज़मीन में करे, या ज़मीन पर पैदा शुदा दरख़्तों, नहरों और जानवरों में करे।



अल्लाह को न पहचानने की वजह

हमारी अक़्लें नातवाँ व नाक़िस (कमज़ोर) हैं और बारगाहे इलाहिया का हुस्नो–जमाल इन्तहाई रौशन है, यहाँ तक कि आसमानों और ज़मीन की वुसअ्तों (फैलाव) में कोई ज़र्रा ज़हूरे ख़ुदावन्दी से ख़ाली नहीं है (हर ज़र्रे पर उसकी नूरानी किरनें पड़कर उसे चमका रही हैं) लिहाज़ा अल्लाह तआला का ज़हूर ही उसके ख़िफ़ा (पोशीदगी) का सबब बन गया। पाक है वो ज़ात जो अपने नूर की चमक की वजह से मख़फ़ी (पोशीदा) हो गई और अपने ज़हूर के सबब आँखों से पोशीदा हो गई और इस बात से आप हैरत का शिकार न हों कि अल्लाह तआला की ज़ात अपने ज़हूर की वजह से मख़फ़ी है क्योंकि चीज़ें अपने अज़दाद (मुख़ालिफ़) से ज़ाहिर होती हैं और जिस ज़ात का वुजूद बग़ैर किसी ज़िद के हो उसका समझ पाना इन्तहाई मुश्किल है। इसकी मिसाल वो सूरज का नूर है जो ज़मीन पर चमकता है, हम जानते हैं कि ये नूर एक अर्ज़ है जो ज़मीन पर ज़ाहिर होता है और आफ़ताब के ग़ायब होते ही वो नूर ख़त्म हो जाता है, अगर सूरज हमेशा चमकता रहे तो वो नूर ग़ायब नहीं होगा, लेकिन हम ये गुमान करते हैं कि जुमला जिस्मों में उनके ज़ाहिरी रंग मसलन स्याही, सफ़ेदी, सुर्ख़ी वग़ैरा के अलावा कोई हियत (ख़सलत) नहीं है, मगर जब सूरज ग़ायब होता है और सारे मक़ामात तारीक हो जाते हैं तो हमें दोनों हालतों के बीच फ़र्क़ समझ में आता है और हम इस बात को जान लेते हैं कि जिस्म किसी रौशनी के सबब रौशनो ताबनाक थे और किसी सिफ़त से वो ज़ाहिर थे, सूरज के ग़ुरूब होते ही वो रौशनी जुदा हो गई, लिहाज़ा हमने नूर के वुजूद और उसके अदम (ग़ायब) को पहचान लिया।

ख़ालिक़े कायनात की कोई ज़िद नहीं है, इसलिये कि वो ग़ायब नहीं होता, इसमें कोई तब्दीली व बदलाव नहीं होता, वरना आसमान और

ज़मीन मुन्हदिम (तबाह) होकर तहस नहस हो जाते और मुल्को-मल्कूती निज़ाम दरहम बरहम हो जाता। अल्लाह तआला का एक तरीक़े पर तमाम चीज़ों की रहनुमाई करना और तमाम हालतों में ख़ुद उसका दायमी वुजूद उसके न होने को मुहाल क़रार देता है, लिहाज़ा यक़ीनन उसके ज़हूर की शिद्दत ने ही उसमें पोशीदगी को पैदा किया है। अब मअ़ार्फ़ते इलाही में क़ुसूरे-फ़हम का ये ही वजह है और इस पर ये कि शहवत परस्ती में मशग़ूल रहना अनवारे मअ़ार्फ़त के नूर को हासिल करने में रुकावट है और दुनिया की ये मशग़ूलियत मअ़ार्फ़त के समन्दरों में सैरो-सयाहत के रास्तों को बन्द कर देता है।

लोग मअ़ार्फ़ते इलाही और उसकी तलब में उस मदहोश की मानिन्द हैं जो घड़ी बांधे हुए है और अक़्ल की ख़राबी की वजह से उसी घड़ी को तलाश कर रहा है।

लिहाज़ा तजल्लियातो अनवार जब मतलूब हो जाते हैं तो दुश्वार तरीन होते हैं और इसी के मुताल्लिक़ कहा गया-

> **तर्जुमा-** तू ऐसा ज़ाहिरो-बाहिर है कि सिर्फ़ तू उस नाबीना (अंधे) पर मख़फ़ी (पोशीदा) है जो चान्द को नहीं पहचानता। लेकिन तू अपने ज़हूर ही के सबब पोशीदा हो गया बस उस ज़ात की मअ़ार्फ़त कैसे हासिल हो सकती है जो मअ़ार्फ़त ही की वजह से छिप गई हो।



अल्लाह तआला का बन्दे से मुहब्बत करना और उस मुहब्बत का मतलब

अल्लामा अबुल क़ासिम क़ुशैयरी "रिसाला क़ुशैयरिया" में बन्दे से अल्लाह की मुहब्बत की तारीफ़ करते हुए फ़रमाते हैंः

> बन्दे की मुहब्बत ये है कि वो किसी ख़ूबी पर अल्लाह तआला की हम्दो-सना बयान करे और बन्दे से अल्लाह का मुहब्बत करना ये अल्लाह तआला की सिफ़ाते फ़ेअ्लिया में से है, इससे मुराद एहसाने मख़सूस है, जिसका इल्क़ा (ज़ाहिर) अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त बन्दे पर करता है और ये ऐसी हालते मख़सूसा है जिसकी जानिब बन्दा तरक़्क़ी करता है।

बहुत सी आयाते क़ुरआनिया और अहादीसे मुबारका में अल्लाह तआला ने इस बात की जानिब राहनुमाई फ़रमाई है कि वो बन्दे से मुहब्बत करता है। अल्लाह ने फ़रमायाः-

> **तर्जुमा-** अल्लाह बन्दों से मुहब्बत करता है और बन्दे उससे मुहब्बत करते हैं। (अल-मायदा : 54)

अल्लाह का ये कलाम इस बात को साबित कर रहा है कि अल्लाह की मुहब्बत बन्दों की मुहब्बत से पहले है और बन्दों की उससे मुहब्बत करना बाद में है और ये इसलिये कि अल्लाह का एहसानो-करम बन्दों पर पहले होता है। अल्लाह ने अपने मोमिन बन्दों से मुहब्बत के तबादले को साबित फ़रमाया है जैसा कि अल्लाह ने अपने कलाम- "*रज़ियल्लाहु अन्हुम व रज़ू अन्हु*" (अल्लाह इनसे राज़ी हो गया और वो अल्लाह से राज़ी हो गये) (अलमायदा : 119) में बन्दों और अपने दरम्यान एक दूसरे से राज़ी होने को साबित फ़रमाया है।

अल्लाह तआला ने नेक बन्दों के लिये अपनी मुहब्बत के वो वुजूहात

बयान किये जो बन्दों को अल्लाह से क़रीब करते हैं और इससे मुहब्बत की तरफ़ माइल करते हैं। इन वुजूहात में से कुछ दर्ज ज़ैल हैंः-

क़ुरआन करीम की तिलावत, अल्लाह के बन्दों पर एहसान करना, दिल का उसके सामने आजिज़ी व इन्किसारी को ज़ाहिर करना, मजालिसे सालिहीन में बैठना, राहे ख़ुदा में जिहाद करना, रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैरवी करना, अल्लाह के बाबरकत नामों और सिफ़ात का दिल से मुतालिआ करना, उसके एहसानो-इनआम का मुशाहिदा करना, हर हाल में उसका ज़िक्र करना, ज़ाहिरो-बातिन को साफ़ सुथरा रखना और इसके अलावा अल्लाह की रज़ा पाने के लिये दिल को मुतवज्जह और इबादाते ख़ासा अदा करना और ये तमाम चीज़ें बन्दे को ताईदे परवर्दिगार और ख़ुदा-ए-बरतर की नज़रे रहमत से हासिल होती है।



अल्लाह तआला की बन्दे से मुहब्बत की निशानियाँ

पहली निशानी- अल्लाह बन्दे के दिल में अपना उन्स और ग़ैर की वहशत डाल दे।

इमाम ग़ज़ाली अलैहिर्रहमा "उन्स" की तारीफ़ करते हुए फ़रमाते हैं कि "जब बन्दे पर क़ुर्बे इलाही और इस रब्बे बेनियाज़ का जमालो कमाल मुन्कशिफ़ (ज़ाहिर) होता है और इससे बन्दे के दिल को जो ख़ुशी व इंबिसात (लज़्ज़त) हासिल होता है इसी का नाम उन्स है।" बाज़ हज़रात ने कहा कि क़ुर्ब की हक़ीक़त ये है कि बन्दा चीज़ों को दिल से महसूस करे और उसका ज़मीर ख़ुदा-ए-बरतर से सुकूनो-इत्मीनान हासिल करे।

मख़लूक़ के उन्सो-वहशत के मआनी में बेशुमार अहादीस वारिद (आई) हुई हैं, कुछ हस्बे ज़ैल हैं:-

(1) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया-

जब अल्लाह तआला किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो उसे आज़माइशो इम्तिहान में डाल देता है और जब किसी बन्दे से इन्तिहाई शदीद (बहुत ज़्यादा) मुहब्बत फ़रमाता है तो उसे चुन लेता है। अर्ज़ किया गया या रसूलुल्लाह! बन्दे के चुनने का मतलब क्या है? तो हुज़ूर ने फ़रमाया- अल्लाह उस बन्दे के लिये न अहलो अयाल छोड़ता न किसी क़िस्म का माल।

(2) हदीस में है-

जब अल्लाह किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो उसकी आज़माइश करता है, अगर वो इस पर सब्र का दामन थामे रहता है तो उसे मक़ामे "इज्तिबा" पर फ़ाइज़ कर देता है

और अगर इस पर बन्दा राज़ी रहता है तो अल्लाह उसे मक़ामे "इस्तिफ़ा" अता फ़रमा देता है।

(3) हज़रत ज़ुन्नून मिसरी ने फ़रमाया–

मैं किसी जंगल में चल रहा था कि एक औरत ने मुझ से मुलाक़ात की, तो उसने कहा तुम कौन हो? मैंने कहा मैं एक अजनबी शख़्स हूँ, उसने कहा क्या अल्लाह की क़ुर्बत में भी अजनबियत पाई जाती है।

(4) हज़रत मोतरिफ़ बिन अब्दुल्लाह ने फ़रमाया–

अल्लाह के कुछ बन्दे वो हैं जो अल्लाह से उन्सियत पाते हैं और ये अपनी ख़लवतों में लोगों की कसरत के मुक़ाबले ज़्यादा उन्स (मुहब्बत) हासिल करने वाले होते हैं, लोग जिन चीज़ों से उन्स पाते हैं इन बन्दों को इससे वहशत होती है और जिन से लोगों को वहशत होती है उनसे इनको उन्स हासिल होता है।

उन्स बारगाहे ख़ुदावन्दी में हुज़ूरी और सुकूनो इत्मीनान पैदा करता है।

दूसरी निशानी- अल्लाह बन्दे को उसके ऐब और ख़ामियाँ दिखाये।

(1) सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः–

जब अल्लाह किसी बन्दे से मुहब्बत फ़रमाता है तो उसके नफ़्स में नसीहत करने वाला और उसके दिल को बेदार और आगाह करने वाला ज़मीर बना देता है, जो उसे अच्छाइयों का हुक्म देता है और बुराइयों से रोकता है।

(2) इमाम अली करमुल्लाह वज्ह ने फ़रमायाः–

जिसके लिये उसके नफ़्स की जानिब से कोई नसीहत करने वाला हुआ उस पर अल्लाह की जानिब से निगेहबान हो गया।

(3) सय्यिदी इब्ने अता उल्लाह स्कन्दरी ने फ़रमायाः–

तेरा अपने बातिनी ऐबों को इस्लाह की नज़र से देखना उन इसरारो ग़ुयूब (पोशीदा चीज़ों) को देखने से बेहतर है जो तुझ पर ज़ाहिर नहीं हैं, यानी बन्दे के लिये बातिनी ऐबों की इस्लाह के वास्ते कोशिश करना, ग़ैब के लिये मराक़बा करने से बेहतरो-अफ़ज़ल है।

(4) किसी आरिफ़ बिल्लाह का क़ौल हैः-

जब अल्लाह तआला बन्दे को नाफ़रमानी व गुनाह की ज़िल्लतो रुसवाई से इताअ्तो-फ़रमाँबरदारी की इज़्ज़त की तरफ़ मुन्तक़िल फ़रमाता है तो उसे तन्हाई व ख़ल्वत के साथ उन्स हासिल करने वाला बना देता है, क़नाअ्त की दौलत से उसे मालामाल कर देता है, उसे उसके नफ़्स के ऐब व कमियाँ दिखा देता है और जिसको ये चीज़ें अता कर दी गयीं उसे दुनिया व आख़िरत की ख़ैर बख़्श दी गई।

तीसरी निशानी-

अल्लाह अपने बन्दे के ज़ाहिरो-बातिन का निगेहबानो मुतवल्ली हो जाये, उसके मामलात का मुशीरो-मुदब्बिर हो जाये। उसके जिस्म के हिस्सों को इस्तेमाल करने वाला बन जाये, फिर उसे अपना मूनिस (मुहब्बत करने वाला) बना कर अपनी मअ़ार्फ़त अता कर देता है और अपनी बारगाहे आली में दाख़िल फ़रमा लेता है। ज़ाहिर की सफ़ाई व पाकीज़गी के मुताल्लिक़ कहा गया कि हर उस चीज़ को छोड़ देना जो बन्दे को अल्लाह की इताअ्तो-ताबेदारी से मुन्हरिफ़ (अलग) और बातिन की सफ़ाई ये है कि हर उस चीज़ को तर्क कर (छोड़) देना जो दिल को बारगाहे इलाही की हुज़ूरी से फेर दे, ज़ाहिरो-बातिन की सफ़ाई दिल और जिस्म का अल्लाह वह़दहू ला शरीक के लिये ख़ाली करना है।

❑ ❑ ❑

अल्लाह की मुलाक़ात का शौक़

इमाम अबुल क़ासिम अब्दुल करीम क़ुशैयरी "रिसाला क़ुशैयरिया" में शौक़ की तारीफ़ करते हुए फ़रमाते हैंः-

राहतो-आराम के साथ मौत से मुहब्बत करना शौक़ है।

इब्ने ख़फ़ेफ़ ने फ़रमाया वज्द में दिलों का राहत पाना, महबूब के क़ुर्ब और मुलाक़ात को पसन्द करने को शौक़ कहते हैं। शौक़ मुहब्बत का फल है क्योंकि बन्दा-ए-मोमिन के दिल में जब अल्लाह तआला की मुहब्बत जम जाती है तो ये मुहब्बत उसे रब के दीदार के शौक़ और उसके ज़िक्र से मुहब्बत की जानिब पहुँचा देती है, चुनांचे मक़ामे शौक़, मक़ामे मुहब्बत का ताबे है और ग़ुलाम का शौक़ अपने आक़ा के दीदार, उसके चेहरा-ए-पुर ज़िया के फ़ैज़ और उसके कलाम को सुनकर ही पूरा होता है।

अल्लाह की मुलाक़ात के शौक़ के सिलसिले में जो आयातो-अहादीस और आसारे सहाबा व ताबईन वारिद हुए हैं उनमें बाज़ ये हैंः-

(1) बाज़ एहले बसीरत अल्लाह के कलाम के मुताल्लिक़ फ़रमाते हैं-
(तर्जुमा) *"जो अल्लाह से मुलाक़ात की उम्मीद करता है तो अल्लाह का वादा आने वाला है"* (अ़नकबूत : 5)

आगे फ़रमाते हैं-

जब अल्लाह ने देखा कि उसके औलिया उससे मुलाक़ात का इन्तहाई शौक़ रखते हैं और उनके दिल बग़ैर दीदार के सुकून नहीं पायेंगे तो अल्लाह ने उनके लिये अपनी मुलाक़ात की एक मुद्दत मुक़र्रर फ़रमा दी ताकि उनके नफ़्स और दिल मुत्मइन हो जायें। मुतलक़ तौर से सब से उम्दा लज़्ज़त से पुर ज़िन्दगी मुहब्बत हासिल करने वालों की ज़िन्दगी है, दरहक़ीक़त उनकी ज़िन्दगी एक पाकीज़ा

ज़िन्दगी है, उनकी ज़िन्दगी से पाकीज़ा और क़ाबिले मुबारक ज़िन्दगी किसी बन्दे की नहीं।

(2) किसी अल्लाह वाले से फ़रमाने बारी तआला- (तर्जुमा) *"वो हंसाता है और रुलाता है"* (नजम : 43) के बारे में सवाल किया गया तो उसने जवाब दिया कि अल्लाह अपनी मआर्फत के सुरूर से आरिफ़ीन को हँसाता है और फ़ुरक़तो-हिज्र (जुदाई) के ख़ौफ़ से उन्हें रुलाता है, अपनी जुदाई की तलवार से जिसे चाहता है मारता है और अपने विसाल की तरो-ताज़गी से जिसे चाहता है ज़िन्दा फ़रमाता है ताकि तमाम मख़लूक़ जान ले कि उसकी सिफ़त "यानी जो चाहता है करता है"।

(3) रसूले मक़बूल अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने फ़रमाया कि- "मौत मोमिन के लिये तोहफ़ा है" (मुस्नद अहमद, तिबरानी, हाकिम) इसलिये कि मोमिन रब्बे कायनात की मुलाक़ात से बे इन्तहा इनआमो इकराम का मुशाहिदा करता है।

(4) हज़रत उवैस क़रनी रज़ि० से किसी ने पूछा कि आप किस हाल में सुबह करते हैं ? आपने इरशाद फ़रमाया कि वो शख़्स किस तरह सुबह कर सकता है जिसे शाम होने की ख़्वाहिश न हो और जब शाम हो जाये तो सुबह होने की आरज़ू और तमन्ना न हो और उसका शौक़ अपने दिल की आरज़ू और तमन्ना पाने के लिये तवील (लम्बा) हो जाये।

(5) हज़रत अबू दर्दा रज़ि० ने फ़रमाया कि अल्लाह के कुछ बन्दे ऐसे हैं जिनके दिल अल्लाह के शौक़ में इस रफ़्तार से उड़ते हैं कि उन्हें उचकने वाली बिजली भी नहीं पा सकती।

(6) हज़रत अबू यज़ीद का क़ौल है कि साहिबे इरफ़ान के दिलों के लिये रात की तारीकी में ऐसी शराब होती है जिससे उनके दिल ख़ुदा की मुहब्बतो-शौक़ में परवाज़ करते हैं, फिर वो महबूब के अलावा ग़ैर को नहीं देखते हैं और दुनिया-ओ-आख़िरत की सिद्क़ो सफ़ा को हासिल

कर लेते हैं।

(7) याहया बिन मआज़ रज़ि० फ़रमाते थे कि ऐ मेरे माबूद! मेरे दिल में सबसे मीठा अतिया तेरी उम्मीदो रज़ा है, मेरी ज़बान के लिये सबसे शीरीं (मीठा) कलाम तेरी तारीफ़ है, मेरे नज़्दीक सबसे महबूब व पसन्दीदा घड़ी (वक़्त) वो है जिसमें तुझ से मुलाक़ात हो।

(8) किसी नेक शख़्स ने फ़रमाया कि मुहिब्ब के लिये महबूब के दीदार से ज़्यादा अज़ीज़ो पसन्दीदा चीज़ कोई नहीं, अगर वो औक़ातो मुद्दतें न होतीं जिनको परवर्दिगारे आलम ने मुश्ताक़ीन (शौक़ रखने वाले) के वास्ते मुक़र्ररो मुतअय्यन फ़रमा दिया है तो उनकी रूहें शिद्दते इश्तियाक़ (मिलने के शौक़) की वजह से उनके जिस्मों में मर जाती हैं।

(9) किसी अल्लाह वाले का क़ौल है कि दीदारे परवर्दिगार का शौक़ रखने वाले मौत के वक़्त हलावतो चाश्नी महसूस करते हैं, इसलिये कि उन पर विसाल की लज़्ज़तो ताज़गी ज़ाहिर हो जाती है जो शहद से ज़्यादा मीठी है।

(10) हदीस पाक में है-

> अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को वही (ख़ुदाई सन्देश) फ़रमाई कि ऐ दाऊद! मुझसे मुँह मोड़ने वाले अगर जान लेते कि मैं किस तरह उनका मुन्तज़िर हूँ और अपने ऊपर मेरी नर्मी व मेहरबानी से वाक़िफ़ होते और अगर उनको इसका इल्म होता कि मैं उनके गुनाहों को छोड़ने का कितना मुश्ताक़ हूँ तो वो मेरे शौक़ में मर जाते और मेरी मुहब्बत की वजह से उनके आज़ा (जिस्म के हिस्से) टुकड़े-टुकड़े हो जाते। ऐ दाऊद! मेरी ये इरादत उन लोगों के साथ है जो मुझसे मुँह मोड़ते हैं तो मेरी इरादत का आलम उन लोगों के साथ क्या होगा जो मेरी तरफ़ मुतवज्जह होते हैं। ऐ दाऊद! सब से मोहताजो

फ़क़ीर वो बन्दा है जिससे मैं बेपरवाह हो जाऊँ और मेरे रहम का सबसे ज़्यादा हक़दार मेरा वो बन्दा है जो मेरे मुताल्लिक़ ग़ौरो-फ़िक्र करे और मेरे नज़्दीक सबसे मुअज़्ज़िज़ (इज़्ज़त वाला) वो बन्दा है जो मेरी तरफ़ रुजू (वापसी) करता है।

(11) हज़रत अबू दर्दा ने हज़रत काअ्ब रज़ि० से कहा कि मुझे तोरैत की किसी ख़ास आयत के मुताल्लिक़ बताइये, तो आपने फ़रमाया, अल्लाह तआला फ़रमाता हैः-

मेरे दीदार के लिये नेक लोगों का इश्तियाक़ दराज़ (लंबा) हो गया और बेशक मैं उनकी मुलाक़ात का उनसे ज़्यादा मुश्ताक़ हूँ, हज़रत काअ्ब ने कहा और तोरात में ये भी लिखा हुआ है कि "अल्लाह ने फ़रमाया- जिसने मुझे तलब किया उसने मुझे पा लिया और जिसने मेरे अलावा किसी और की तलब व जुस्तजू की उसने मुझे नहीं पाया", हज़रत अबू दर्दा ने फ़रमाया "मैं गवाही देता हूँ कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इसी के मिस्ल फ़रमाते सुना।"

(12) हज़रत इब्राहीम बिन अधम अलैहिर्रहमा दीदारे इलाही के मुश्ताक़ों में से हैं, आपसे मरवी है कि आपने एक दिन (परवर्दिगारे आलम की बारगाह में) अर्ज़ कियाः

ऐ मेरे रब! अगर तूने अपनी मुलाक़ात से पहले किसी मुहब्बत करने वाले को वो चीज़ अता की हो जिससे उसके दिल को सुकूनो इत्मीनान हासिल हो जाये तो वो चीज़ मुझे भी अता फ़रमा क्योंकि बेचैनी ने मुझे बहुत नुक़सान पहुँचाया। हज़रत इब्राहीम बिन अधम कहते हैं कि मैंने ख़्वाब में देखा गोया कि अल्लाह ने मुझे सामने खड़ा किया

और फ़रमाया- ऐ इब्राहीम! क्या तुम्हें मुझसे ये सवाल करते हुए शर्म नहीं आई कि मैं तुम्हारे दिल को अपने दीदार से पहले इत्मीनानो सुकून अता कर दूँ? क्या किसी मुश्ताक़ का दिल अपने महबूब की मुलाक़ात से पहले पुरसुकून होता है? तो मैंने अर्ज़ किया- ऐ रब! मैं तेरी मुहब्बत में मदहोश हो गया मुझे नहीं मालूम कि मैं क्या कह रहा हूँ? तू मुझे मुआ़फ़ करदे और मुझे मुद्दआ अर्ज़ करने का सलीक़ा सिखा दे। तो रब्बे बेनियाज़ ने फ़रमाया "तुम ये कहो कि ऐ अल्लाह! तू मुझे अपने फ़ैसलों पर राज़ी फ़रमा और अपनी आज़माइशों पर मुझे सब्र अता कर और अपनी नेअ्मतों पर मुझे शुक्रगुज़ारी की तौफ़ीक़ अता कर।"

ऐ बिरादरे मोमिन! हमने देखा कि मुहब्बत करने वाले की ख़ुशी, इंबिसात, उसकी आँखों की ठण्डक और उसकी आरज़ुओं की इन्तहा ये सिर्फ़ और सिर्फ़ अपने मुहिब्ब से मुलाक़ात का शौक़ और उसके दीदार की तड़प है, इसी से उसका दिल ख़ुशी पाता है, उसकी रूह मुत्मइन होती और उसके शौक़ की आग सर्द (ठंडी) होती है।



बन्दे की अल्लाह तआला से मुहब्बत करने की निशानियाँ

इमाम ग़ज़ाली रह० अपनी मशहूर किताब "ऐह्याउल उलूम" में फ़रमाते हैंः-

बन्दे का अल्लाह तआला से मुहब्बत करना उस पाकीज़ा दरख़्त की तरह है जिसकी जड़ मज़बूत है और उसकी शाख़ें आसमान में हैं और उसका फल दिल, ज़बान और आज़ा (जिस्म के हिस्सों) पर ज़ाहिर होता है।

मुहब्बत की निशानियाँ दर्ज ज़ैल हैं-

मुहब्बत की पहली निशानी-

मुहब्बत की पहली अलामत यह है कि मुहिब्ब महबूब से मुलाक़ात चाहे।

(1) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया-

जो अल्लाह से मुलाक़ात को पसन्द करता है अल्लाह उसकी मुलाक़ात पसन्द फ़रमाता है और जो अल्लाह की मुलाक़ात को नापसन्द करता है अल्लाह उसकी मुलाक़ात को नापसन्द करता है। (बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, मुअत्ता)

(2) हज़रत सुफ़यान सौरी और हज़रत बशरहाफ़ी अलै० फ़रमाते हैं-

मौत को सिर्फ़ शको-शुबह में गिरफ़्तार शख़्स ही नापसन्द करता है, इसलिये कि मुहिब्ब किसी भी हाल में महबूब की मुलाक़ात को नापसन्द नहीं करता।

(3) इमाम वकीअ् ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० से बाब-उज़-ज़ुहद में रिवायत किया-

ईमान वाले को बग़ैर अपने रब की मुलाक़ात के राहतो आराम हासिल नहीं होता है।

मुहब्बत की दूसरी निशानी-

मुहब्बत की दूसरी निशानी यह है कि बन्दा अल्लाह के ज़िक्र में इन्तहाई मसरूफ़ रहे, ज़िक्रे इलाही कभी उससे जुदा न हो, इसलिये कि जो किसी भी चीज़ से मुहब्बत करता है कसरत से उसका ज़िक्र करता है और मुहिब्ब हर उस चीज़ से मुहब्बत करता है, जिसका ताल्लुक़ महबूब से हो। लिहाज़ा अल्लाह से मुहब्बत की अलामत (निशानी) बन्दे का उसके ज़िक्र से मुहब्बत करना, उसके कलाम की तिलावत करना, उसके मुहिब्बीन अंबिया-ए-किराम व औलिया-ए-इज़ाम से उल्फ़तो मुहब्बत करना और हर उस चीज़ को अज़ीज़ रखना जो महबूब को पसन्द हो।

(1) अल्लाह तआला हदीसे क़ुदसी में फ़रमाता है-

> मैं अपने बन्दे के साथ होता हूँ जब वो मेरा ज़िक्र करता है और उसके लब मेरे ज़िक्र में जुंबिश (हिलते) करते हैं।

(2) हज़रत अली करमुल्लाह वज्ह सहाबा किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम की ख़ूबी बयान करते हुए फ़रमाते हैं-

> जब वो अल्लाह का ज़िक्र करते थे तो ऐसे लरज़ते काँपते थे जैसे दरख़्त तेज़ हवा में लहराता है।

(3) हज़रत अबू जाफ़र महोली फ़रमाते हैं-

> मुहिब्ब का दिल कभी अपने रब के ज़िक्र से ख़ाली नहीं होता है और वो कभी अपने आक़ा की ख़िदमत से मलूल व रंजीदा नहीं होता है।

(4) तिलावते कलामुल्लाह मुहब्बत की अलामत है। इमाम तिर्मिज़ी ने हज़रत अबू उमामा रज़ि० से मरफ़ूअ़न रिवायत किया है कि बन्दे को अल्लाह का क़ुर्ब उसके मिस्ल हासिल होता है जो उससे निकलता है यानी क़ुरआन (यानी जो बन्दा अल्लाह से जिस क़दर मुहब्बत करता है उसी क़दर उसके कलामे अज़ीम की तिलावत में मशग़ूल रहता है)।

मुहब्बत करने वालों के नज़दीक महबूब के कलाम से मीठी कोई चीज़ नहीं है क्योंकि ये दिल की लज़्ज़त और रूह का सुरूर है।

(5) किसी आरिफ़ बिल्लाह ने मुरीद से कहा कि क्या तुझे क़ुरआन याद है? उसने जवाब दिया- नहीं, तो आपने अफ़सोस का इज़हार करते हुए फ़रमाया क्या हाल है ऐसे मुरीद का जो क़ुरआन याद नहीं करता है, वो किस चीज़ से लुत्फ़ो-सुरूर पायेगा? क्या चीज़ गुनगुनाएगा? किस चीज़ के ज़रिये अपने रब से सरगोशी करेगा?

(6) हज़रत उसमान रज़ि० ने फ़रमाया अगर तुम्हारे दिल पाक होते तो तुम अपने रब के कलाम से सैर होते।

(7) बन्दे की अल्लाह से मुहब्बत करने की अलामत (निशानी) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुहब्बत करना और आपके तरीक़े की इत्तिबा करना है, अल्लाह तआला ने फ़रमाया-

> ऐ हबीब! आप फ़रमा दीजिये, अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो मेरी इत्तिबा (फ़रमाँबरदारी) करो, अल्लाह तुम से मुहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाहों को बख़्श देगा, अल्लाह बख़्शिश करने वाला रहीम है। (आले इमरान : 31)

मुहब्बत की तीसरी निशानी-

अल्लाह तआला से मुहब्बत की तीसरी अलामत ये है कि बन्दा ख़लवतो-तन्हाई और उससे दुआ व मुनाजात में रब से मुहब्बत हासिल करे, तिलावते क़ुरआने करीम से रातों को मामूर करे और बन्दा अपने बातिन को अल्लाह से मुनाजात और उससे फ़हमो-फ़िरासत के हासिल करने में मसरूफ़ रखे और इसी अलामतो-कैफ़ियत के मुताल्लिक़ हज़रत सय्यदा राबिया अदविया रह० फ़रमाती हैं-

> **तर्जुमा-** (ऐ महबूबे हक़ीक़ी) तुझे दिल में मैंने अपना हमनशीं (साथी) बना लिया है और मैंने अपना जिस्म उन

लोगों के लिये रख छोड़ा है जो मेरी हमनशीनी चाहते हैं, लिहाज़ा मेरा जिस्म साथ बैठने वाले से मानूस है और मेरे दिल का महबूब दिल में अनीस बन कर बैठा है।

लिहाज़ा रूह, दिल और बातिन महबूब की हमनशीनी से मानूस होता है और ज़ाहिरन जिस्म दीगर लोगों के साथ उठता बैठता है।

(1) एक सालेह बुज़ुर्ग शख़्स का क़ौल है जब मुरीद उज़लत और गोशा नशीनी को तरजीह दे तो उसे मख़लूक़ से जुदाई व अलैहिद्गी पर ये एतक़ादो-यक़ीन रखना चाहिये कि लोग उसके शर से सलामत रहेंगे, वो ये क़सद न करे कि वो लोगों के शर से महफ़ूज़ो मामून रहेगा।

(2) हज़रत अबू तालिब मक्की फ़रमाते हैं कि मुरीद सच्चा उस वक़्त माना जायेगा जबकि वो अपनी ख़ल्वतो-तन्हाई में वो हलावतो चाश्नी, फ़रहतो-निशात (ख़ुशी) और क़ुव्वतो-ताक़त पाये जो उसे अपनी मजलिस और लोगों की हमनशीनी में हासिल न हो, यहाँ तक कि वो तन्हाई व गोशा नशीनी में ज़्यादा उन्स हासिल करे, पोशीदा तौर पर नेक अमल करे।

(3) किसी आरिफ़ बिल्लाह का क़ौल है कि ख़ल्वत (तन्हाई) एहले सफ़ा (सूफ़ियों) की सिफ़त है और सबसे अलैहिदगी विसाले यार की निशानियों में से एक निशानी है।

(4) याहया बिन मुआज़ ने फ़रमाया कि ख़ल्वतो-तन्हाई दो दोस्तों की हमनशीन है।

(5) हदीस में आया है कि अल्लाह तआला ने मख़लूक़ को पैदा किया फिर फ़रमायाः

(ऐ मेरे बन्दो!) तुम मुझ से सरगोशी (बातें) करो, अगर तुम ये नहीं कर सकते तो मेरी जानिब देखो, अगर तुम इसकी ताक़तो-क़ुव्वत नहीं रखते तो मेरे कलाम को सुनो, अगर तुम्हारे लिये ये भी मुमकिन नहीं तो मेरे दर पर

आओ अगर तुम इसकी भी ताक़त नहीं रखते तो अपनी ज़रूरतें मेरे सामने पेश करो।

(6) किसी आरिफ़े कामिल का क़ौल है कि इबादत एक पेशा है जिसकी दुकान तन्हाई और कम खाना है।

मुहब्बत की चौथी निशानी-

मुहब्बते इलाही की चौथी निशानी ये है कि बन्दा किसी गुमशुदा चीज़ पर अफ़सोसो-हसरत न करे और हर वो लम्हा जो अल्लाह के ज़िक्र, उसकी इताअ्तो-फ़रमाँबरदारी और उसके क़ुर्ब से ख़ाली हो, इस पर बहुत ज़्यादा अफ़सोसन करे, ग़फ़लतों के वक़्त अल्लाह तआला से लुत्फ़ो-करम और तौबा तलब करते हुए बार बार रब तआला की बारगाह में रुजू (लौटे/वापसी) करे।

(1) किसी आरिफ़ बिल्लाह का क़ौल है कि अल्लाह के कुछ ऐसे बन्दे हैं जिन्होंने अल्लाह से मुहब्बत की, उससे सुकूनो-इत्मीनान हासिल किया, तो उनसे गुमशुदा चीज़ पर अफ़सोसो पशेमानी (पछतावा) जाती रही और वो नफ़सानी लज़्ज़तों में मशग़ूल नहीं हुए और जब उन पर बादशाह की मिल्कियत मुकम्मल हो गई तो जो उसने चाहा वही हुआ, तो जो चीज़ इन बन्दों को अता हुई वह उन तक पहुँचने वाली थी और जो उनसे जुदा हो गई तो ये उसी बादशाह की हुस्ने तदबीर से उनके लिये हुआ।

(2) दिल के मुर्दा और बेजान होने की निशानी ये है कि ताआत के ख़त्म होने पर तुझे ग़म न हो, गुनाह हो जाने के बाद तुझे नदामतो- शर्मिन्दगी न हो, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया-

जिसको अपनी नेकी से ख़ुशी व मसर्रत हो और अपने गुनाह उसे बुरे लगें तो वो साहिबे ईमान है।

(तबरानी, इब्ने हिब्बान अ़न अबी उमामा)

(3) हज़रत इमाम हसन बसरी रज़ि० ने फ़रमाया-

तू काहिली व सुस्ती और टाल मटोल करने से अपने आपको बचा क्योंकि आज तेरा अपना है, तो तू कल भी आज की तरह टाल मटोल करेगा और अगर आने वाला कल तेरा नहीं है तो आज जो तूने गुनाह किये हैं उन पर शर्मिन्दगी व निदामत का मुँह देखेगा।

मुहब्बत की पाँचवीं निशानी-

मुहब्बते-परवर्दिगार की पाँचवीं निशानी ये है कि बन्दा इताअ़तो-ताबेदारी से राहत (सुकून) हासिल करे और उसे बोझ व जुर्माना न शुमार करे, इस तरीक़े से हुक्मों को पूरा करने में थकन व तकलीफ़ का एहसास जाता रहे बल्कि इन मशक़्क़तों और तकलीफ़ों में उसे लज़्ज़त हासिल हो।

(1) एक अल्लाह वाले का क़ौल है कि मैंने बीस साल तक रात में तकालीफ़ व मशक़्क़तें बर्दाश्त कीं, फिर बीस साल तक नेअ़मतों की लज़्ज़त हासिल की, लिहाज़ा जिसका महबूब उसके नज़्दीक काहिली और सुस्ती से ज़्यादा पसन्दीदा है, उसने उसकी फ़रमाँबरदारी में सुस्ती को तर्क कर दिया और जिसका मुहिब्ब उसके नज़्दीक माल से ज़्यादा महबूब है, उसने उसकी मुहब्बत में माल को छोड़ दिया।

(2) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने किसी सहाबी से इरशाद फ़रमायाः-

रात में ज़्यादा मत सो, क्योंकि रात में नींद की कसरत नींद वाले को बरोज़ क़यामत फ़क़ीर और तहीदस्त (ख़ाली हाथ) बनाकर छोड़ेगी।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बुलन्दो-बाला इरादा व हिम्मत के बावजूद इताअ़तों पर सुस्ती व काहिली से ख़ुदा-ए-बरतर की पनाह तलब करते थे।

(3) हज़रत लुक़मान ने अपने बेटे को नसीहत फ़रमाईः-

ऐ प्यारे बेटे! हरगिज़ मुर्ग़ (परिन्दा) दानाई और समझदारी में तुझसे आगे न बढ़ जाये, वो अलस्सुबाह (बहुत सवेरे) निदा (तस्बीह पढ़े) करे और तू सोता रहे।

(4) हज़रत जुनैद बग़दादी अलैहिर्रहमा के मुताल्लिक़ बयान किया जाता है कि आपके किसी मुरीद ने आपको वफ़ात के बाद ख़्वाब में देखा तो अर्ज़ किया कि "अल्लाह ने आपके साथ क्या मामला किया?" तो आपने जवाब दिया-

"इशारात हवा हो गये, इबारात ग़ायब हो गईं, उलूमो-फ़ुनून तबाह हो गये, लिखा हुआ बरबाद हो गया, मुझे सिर्फ़ उन चन्द रकअ्तों ने फ़ायदा पहुँचाया जो रात की तारीकियों में पढ़ा करता था।"

ये साबिक़ा तमाम बयानकर्दा चीज़ें कि काहिली व सुस्ती को छोड़कर अल्लाह तआला की राह में ख़िदमतो-इताअ्त का फ़र्श बिछाया जाये क्योंकि इबादातो-इताअत के ज़रिये लज़्ज़तो-फ़रहत हासिल करना मोमिन की निशानी है और इताअ्त को बोझ व जुर्माना समझना मुनाफ़िक़ की निशानी है (अल-अयाज़ बिल्लाह)

मुहब्बत की छटी निशानी-

बन्दे की माबूद से मुहब्बत की छटी निशानी ये है कि वो अल्लाह के तमाम बन्दों पर शफ़क़तो मेहरबानी करने वाला हो, दुशमनाने ख़ुदा पर सख़्त हो और हर उस शख़्स पर सख़्त हो जो हुदूदुल्लाह की ख़िलाफ़वर्ज़ी करता है, जैसा कि अल्लाह ने एहले ईमान के बारे में फ़रमाया-

तर्जुमा- अहले ईमान कुफ़्फ़ार पर इन्तहाई सख़्त हैं और आपस में बहुत मुश्फ़िक़ो मेहरबान हैं। (अलफ़तह : 29)

मुहब्बत की इस अलामत के सिलसिले में बाज़ अक़वाल पेशे ख़िदमत हैं-

(1) हज़रत लुक़मान ने अपने नूरे-नज़र को चार नसीहतें फ़रमाईं, इन

नसीहतों को आपने अपनी हिकमतों में से मुन्तख़ब किया, आपने फ़रमाया-

ऐ बेटे! तू दो चीज़ों को याद रख और दो चीज़ों को भूल जा। वो दो चीज़ें जिन्हें आपने याद रखने की वसियत फ़रमाई वो गुनाह और मौत है, और वो दो चीज़ें जिन्हें आपने अपने बेटे को भूल जाने की वसियत की, उनमें से एक वो एहसान है जो उनके साहबज़ादे ने लोगों पर किया, दूसरी वो बुराई जो लोगों ने उनके बेटे के साथ की।

(2) सय्यदना यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से किसी ने मालूम किया-

आप क्यों भूख की तकलीफ़ बरदाश्त करते हैं हालांकि आपके हाथों में ज़मीन के ख़ज़ाने हैं। आपने फ़रमाया- इस बात का ख़ौफ़ करता हूँ कि कहीं ऐसा न हो कि मैं शिकमसेर होकर (पेट भरकर) किसी भूखे को फ़रामोश कर (भुला) दूँ।

(3) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हुक़ूक़ुल मुस्लिमीन के एहतराम और एहसान की ताकीद बयान करते हुए फ़रमाया-

तुम आपस में हसद न करो, एक दूसरे से बुग़्ज़ो-कीना न रखो। एक दूसरे की जड़ न काटो, तुम में से कोई दूसरे के भाव पर भाव न करे। ऐ अल्लाह के बन्दो! तुम भाई-भाई हो जाओ। मुसलमान मुसलमान का भाई है लिहाज़ा वो किसी मुसलमान पर ज़ुल्म न करे, उसे ज़लीलो-रुस्वा न करे, उसे झूठा और हक़ीर न समझे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सीना-ए-मुबारक की तरफ़ इशारा किया कि तक़वा यहाँ है और फ़रमाया आदमी के लिये अज़रूए शर-ओ-फ़साद ये ही काफ़ी है कि वो अपने मुसलमान भाई को हक़ीर (कमतर) जाने, एक मुसलमान

पर दूसरे मुसलमान का ख़ून, उसका माल, उसकी इज़्ज़तो आबरू हराम है। (बुख़ारी, मुस्लिम, अबूदाऊद, मुस्नदे अहमद)

(4) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया–

जो तुम से अल्लाह के वसीले से पनाह तलब करे उसे पनाह दे दो, जो तुम से अल्लाह के नाम से माँगे उसे अता कर दो, जो तुम्हारे साथ भलाई करे उसे बदला दो और अगर तुम उसका बदला न पाओ तो उसके लिये दुआ करो। (अबू–दाऊद, इब्ने हिब्बान)

मुहब्बत की सातवीं निशानी-

बन्दे की रब्बे कायनात से मुहब्बत की सातवीं अलामतो-निशानी ये है कि बन्दा अपने रब से ख़ौफ़ करे, उसकी हैबत और ताज़ीम का ख़्याल रखे और दिन रात अपने महबूब की तलब में गुज़ारे, इमाम ग़िज़ाली इस ख़ौफ़ की तारीफ़ के बारे में फ़रमाते हैंः-

ख़ौफ़ नाम है सिफ़ाते उलूहियत के मुशाहिदे का और सिफ़ात के ताल्लुक़ को मुलाहिज़ा करने को ख़ौफ़ कहते हैं कि बग़ैर किसी ज़रिये और अमले साबिक़ के मुक़र्रब बना देता है, या रान्दा–ए–दरगाह (अपने फ़ज़्ल से दूर) कर देता है, ख़ुशबख़्त बना देता है या बदनसीब करता है। जबकि बस्त नाम है इन्शिराहे सद्र का और जज़्बा–ए–विसाल (दीदारे–शौक़) के ज़रिये राहे हिदायत का उसके लिये खुल जाने का।

किसी साहिबे नज़र का इरशादे आली है कि बन्दे पर दो हालतें तारी होती हैं- 1. घबराहट में डालने वाला ख़ौफ़, 2. बेचैनो–बेक़रार करना वाला शौक़।

साहिबुल-'इरशाद' अपनी किताब में सुलूक के उन मराहिल की शरह करते हुए फ़रमाते हैं जिन पर बन्दा चलता है कि-

जब बन्दा अल्लाह तआला पर ईमान लाता है और उसका ईमान मुस्तहकम (मज़बूत) हो जाता है तो उसे ख़ौफ़े ख़ुदा लाहक़ होता है और जब वो ख़ुदा-ए-बरतर से डरने लगता है तो उस ख़ौफ़ से हैबते परवर्दिगार पैदा होती है और जब हैबत का जोशो-ग़ल्बा सुकून इख़्तियार करता है तो अल्लाह की इताअ्तो-फ़रमाँबरदारी में मज़बूती आती है और जब वो अल्लाह की फ़रमाँबरदारी करने लगता है तो इस इताअ्तो-ताबेदारी (फ़रमाँबरदारी) से उम्मीद जन्म लेती है और जब उम्मीद का दर्जा व मर्तबा दिल में क़ाइम हो जाता है तो इस उम्मीद से मुहब्बत पैदा होती है और जब दिल में मुहब्बत जम जाती है तो बन्दे के दिल में मक़ामे शौक़ क़ाइम होता है और जब इश्तियाक़ उसे लाहक़ होता है तो यही शौक़ो-इश्तियाक़ उसे अल्लाह से मुहब्बत हासिल करने की तरफ़ ले जाता है और जब उसे अल्लाह तआला से उन्स हासिल होने लगता है तो उसे अल्लाह की बारगाह की तरफ़ इत्मीनानो-सुकून हासिल होता है और जब रब से उस बन्दे को इत्मीनान की दौलत नसीब हो जाती है तो उसका दिन भी ऐशो-इशरत में गुज़रता है, रात भी चैन से बसर होती है, ज़ाहिरो-बातिन अयाँ व निहाँ (ढका-छुपा) सब ख़ुशहाली में गुज़रते हैं।

मुहब्बत की आठवीं निशानी-

मुहब्बते इलाही की आठवीं अलामत ये है कि वो शख़्स मुहब्बत में मुख़लिस हो और इस मुहब्बत को ख़ाना-ए-दिल में छुपा के रखे, दावा-ए-मुहब्बत से बचता रहे।

(1) अल्लाह तआला ने फ़रमाया-

तर्जुमा- अहले बादिया (गाँव वालों) ने कहा हम ईमान ले आये (ऐ रसूल) आप फ़रमा दीजिये तुम ईमान नहीं लाये हो, लेकिन कहो हम इस्लाम ले आये अभी ईमान तुम्हारे दिलों में दाख़िल नहीं हुआ। (अलहुजरात : 14)

इस आयते मुक़द्दिसा में अल्लाह आलिमुल ग़ैब की जानिब से हर उस शख़्स की फ़ज़ीहतो-रुसवाई है जो बग़ैर मुहब्बत हासिल किये मुहब्बत का दावा करे, इसलिये कि ईमान तो सिर्फ़- "अल्लाह के लिये किसी से मुहब्बत करने और अल्लाह ही के लिये किसी से बुग़्ज़ रखने" का नाम है।

(2) अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है-

तर्जुमा- (ऐ रसूल) फ़रमा दीजिये कि ऐ यहूदियो! अगर तुम ये गुमान करते हो कि तुम अल्लाह के दोस्त हो और दीगर लोग नहीं, तो तुम मौत की आरज़ू करो अगर तुम सच्चे हो और वो (यहूदी) हरगिज़ मौत की तमन्ना नहीं करेंगे। (अल-जुमाः 6)

इस आयते करीमा में हक़ तबारक व तआला इन यहूदियों के दिलों में छुपी बुराइयों को ज़ाहिर फ़रमा रहा है जो मुहब्बते इलाही का दावा करते हैं, अल्लाह इनसे फ़रमाता है अगर तुम्हें दावा-ए-मुहब्बत है तो उस ज़ात से मुलाक़ात की आरज़ू करो जिसकी मुहब्बत का तुम दावा करते हो क्योंकि हर मुहब्बत करने वाला अपने महबूब के लिये सख़्तियाँ बरदाश्त करता है और उससे मुलाक़ात की राह में आने वाली सभी परेशानियों और दुश्वारियों का सामना करता है और अल्लाह से मुलाक़ात बग़ैर मौत के हो नहीं सकती तो यहूद पर लाज़िम है कि अपने जिस्मों के फ़ना होने की आरज़ू करें और अपनी ख़्वाहिशात के जुदा होने की तमन्ना करें ताकि इस फ़िक्र की तस्दीक़ हो सके जिसका ये दावा

करते हैं।

(3) सय्यदी इब्ने अरबी मुहब्बत की सदाक़त को बयान करते हुए तहरीर करते हैं-

> मुहब्बत फ़क़त दावा-ए-ज़बानी और ख़याली तसव्वुर नहीं बल्कि मुहब्बत के लिये कुछ शर्तें और निशानियाँ हुआ करती हैं, लिहाज़ा मुहब्बत मुहिब्ब से इस बात का तक़ाज़ा करती है कि मुहब्बत करने वाले के कान सिवाये कलामे महबूब के हर किसी के कलाम से बहरे हो जायें। मुहिब्ब की आँखें चेहरा-ए-महबूब के अलावा हर मन्ज़र के लिये अंधी हो जायें, मुहिब्ब की ज़बान ज़िक्रे महबूब के सिवा हर कलाम से गूँगी हो जाये, लिहाज़ा मुहब्बत करने वाला महबूब को सुने और महबूब के लिये सुने, महबूब को देखे और उसके लिये देखे, महबूब से कलाम करे और उसके लिये कलाम करे।

मुहब्बत की नवीं निशानी-

अल्लाह तआला से मुहब्बत की नवीं अलामत ये है कि बन्दे को परवर्दिगार की ज़ात से मुहब्बत हासिल हो और उसकी रज़ा में राज़ी हो और मख़लूक़ से वहशत हो।

(1) मुहब्बत के मुताल्लिक़ कहा गया है कि बन्दा अल्लाह से कैफ़ियते उन्स पाये और इस ज़ाते आली के अलावा बदनी बीमारियों, दिल के ख़तरों से वहशतज़दा रहे।

(2) हज़रत शेअ्बी से उन्स के बारे में पूछा गया तो आपने इरशाद फ़रमाया कि उन्स ये है कि तू अपनी ज़ात, अपने नफ़्स और कायनात से वहशत करने लगे।

(3) रिवायत है कि नबी करीम अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने सहाबा के गिरोह (जमाअ्त) से दरयाफ़्त फ़रमाया-

(ऐ सहाबा) तुम कौन हो? उन्होंने अर्ज़ किया– "हम साहिब ईमान हैं।" आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया– "तुम्हारे ईमान की निशानी क्या है?" सहाबा ने अर्ज़ किया– "हम आज़माइशों और मसाइबो–आलाम पर सब्र करते हैं और आसानियों पर शुक्र अदा करते हैं और क़ज़ा–ए–इलाही पर राज़ी रहते हैं", तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया– "रब्बे काबा की क़सम! तुम हक़ीक़तन ईमान वाले हो।" (हुलिय्यतुल औलिया लि–अबी नईम, किताबुज़्ज़ुहद, तारीख़े बग़दादे ख़तीब)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से मरवी है– बरोज़ क़यामत सब से पहले जिन हज़रात को जन्नत की तरफ़ बुलाया जायेगा ये वो लोग होंगे जो हर हाल में अल्लाह तआला की हम्दो–सना बयान करते होंगे।

तर्जुमा– ऐ अल्लाह! तू हमें अपनी क़ज़ा–ओ–क़द्र पर राज़ी रख और जो तूने हमारे नसीब में रखा है उस पर हमें आफ़ियत अता फ़रमा यहाँ तक कि हम तेरी ताख़ीर कर्दा चीज़ में उजलत और जल्दी न चाहें और तेरी जल्द पहुँचने वाली चीज़ में ताख़ीर तलब न करें।



आख़िरत में अल्लाह तआला की मुहब्बत का फल

जन्नत में अपने रब की मआर्फ़त रखने वाले कामिल मोमिनीन जो सबसे अज़ीमो बरतर करामतो इज़्ज़त पायेंगे, वो अल्लाह तआला का दीदारे पुरनूर है और ये दीदारे इलाही वो लिज़्ज़त है कि कोई लिज़्ज़त इसके बराबर नहीं, दीदारे रब वो अज़ीम नेअ्मत है जिसके मुक़ाबले में हर उम्मीद हेच (बेकार) है, अल्लाह तआला इसी नेअ्मत को बयान करते हुए फ़रमाता है-

तर्जुमा- बहुत से चेहरे रोज़े महशर तरो-ताज़ा अपने रब की तरफ़ देखने वाले होंगे। (अल-क़ियामा : 22, 23)

अल्लाह तआला ने मोमिनीन के चेहरों की तरो-ताज़गी को अपने वज्ह करीम के दीदार से मुत्तसिल बयान किया क्योंकि जब मुसलमान जन्नत की नेअ्मतों, उसके गुलो-रेहान के दीदार में मशग़ूल होंगे तो दफ़अ्तन उनका रब्बे बेनियाज़ अपनी तजल्ली फ़रमायेगा और उनसे उनके अहवालो-क्वाइफ़ (हालात) दरियाफ़्त फ़रमायेगा। तो मोमिन बन्दे उसकी हम्दो सना और उसकी पाकी बयान करके अर्ज़ करेंगे कि ऐ अल्लाह! तूने ही हमारे चेहरों को रौशनो-मुनव्वर किया और हमें जहन्नुम से बचाकर जन्नत में दाख़िल किया। फिर अल्लाह तआला अपने वज्ह करीम से (जैसा कि उसकी शान के लाइक़ है) हिजाबात (पर्दे) उठायेगा और अपने नूरानी हुस्नो-जमाल की तजल्ली उन पर फ़रमायेगा तो इन बन्दों की नज़रें ख़ैरा हो जायेंगी और इस अज़ीमतर जमाले बेनज़ीर के अनवारो तजल्लियात में उनकी रूहें हैरान रह जायेंगी और वो मोमिन बन्दे परवर्दिगार के दीदार पुर-अनवार की लज़्ज़त के सामने हर लज़्ज़तो- सुरूर भूल जायेंगे और इसी नेअ्मते दीदार के मुताल्लिक़ हक़ तआला अपनी पाक किताब क़ुरआन अज़ीम में इरशाद फ़रमाता है-

तर्जुमा- जिन लोगों ने नेकी की उनके लिये नेकी और भलाई है और उसके अलावा मज़ीद भी है।

"ज़्यादा" से मुराद रब का दीदार है जैसा कि हज़रत सुहैब रज़ि० से मरवी रिवायत में है कि "ज़्यादा" से मुराद जन्नत में हक़ तआला का दीदार करना है।

हज़रत जरीर रज़ि० ने रिवायत किया है-

हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में हाज़िर थे कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चौधवीं रात के चान्द की जानिब निगाह उठाई और फ़रमाया यक़ीनन तुम अपने रब को इस तरह वाज़ेह और ज़ाहिर देखोगे जैसा कि तुम चौधवीं रात के चान्द को देखते हो और उसके देखने में तुम्हें कोई दुश्वारी महसूस नहीं होती।

इस हदीस को इमाम बुख़ारी, इमाम मुस्लिम, तिर्मिज़ी और अबू दाऊद ने अपनी किताबों में नक़ल किया है।

इब्ने क़य्यिम जोज़िया दीदारे ख़ुदा के सिलसिल में तहरीर करते हैं-

जानना चाहिये कि आख़िरत की सबसे अज़ीमतर लिज़्ज़तो नेअ्मत अल्लाह तआला का दीदार करना, उसके कलामे मुबारक को सुनना और उसका क़ुर्ब है, जैसा कि सही हदीस से साबित है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम! अल्लाह ने मोमिन बन्दों को दीदारे इलाही से ज़्यादा कोई महबूबो पसन्दीदा चीज़ अता नहीं की और एक दूसरी हदीस में मरवी है कि जब रब तआला तजल्ली फ़रमायेगा तो जन्नती जन्नत की हर नेअ्मत को भूल जायेंगे।

नसाई और मुस्नदे अहमद बिन हंबल में हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० से मरवी है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी

दुआ में अर्ज़ करते थे-

तर्जुमा- ऐ अल्लाह! मैं तुझ से तेरे वज्ह करीम के दीदार की लिज़्ज़त और तेरी मुलाक़ात का शौक़ तलब करता हूँ।

अब्दुल्लाह बिन अहमद बिन हंबल की किताब "किताबुस्सन्नह" में मरफ़ूअन मरवी है किः-

लोगों ने बराहे रास्त अल्लाह तआला से क़ुरआने करीम नहीं सुना, लेकिन क़यामत के दिन जब वो बराहे रास्त परवर्दिगारे आलम से क़ुरआने अज़ीम को समाअ्त करेंगे तो उन्हें महसूस होगा गोया कि इससे पहले उन्होंने क़ुरआन करीम सुना ही नहीं।

बेशक दुनिया की अज़ीमतर और सबसे पाकीज़ा लिज़्ज़त अल्लाह की मअ़ार्फ़त और उसकी मुहब्बत है और जन्नत में सबसे उम्दा लिज़्ज़त दीदारे रब्बे कायनात है, लिहाज़ा अल्लाह की मुहब्बतो-मअ़ार्फ़त और उसके मुशाहिदात में डूबा होना, आँखों की ठण्डक, रूहों की लिज़्ज़त और दिलों का सुरूर है।

आरिफ़ बिल्लाह हज़रत ज़ुन्नून मिस्री फ़रमाते हैंः-

दुनिया अल्लाह के ज़िक्र की वजह से अच्छी है और आख़िरत ख़ुदा-ए-बरतर के मुआफ़ कर देने के सबब ही बेहतर है और जन्नत दीदारे इलाही के बाइस ही क़ाबिले दीद है।

इमाम इब्ने माजह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस रिवायत करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया-

जन्नती जन्नत की लिज़्ज़तों में मशग़ूल होंगे कि नागाह एक नूर उनके लिये ज़ाहिर होगा जब वो अपने सरों को उठाकर देखेंगे तो उन्हें नज़र आयेगा कि अल्लाह तआला उन पर तजल्ली फ़रमाये हुए है और हक़ तआला कलाम

फ़रमा रहा है कि ऐ जन्नतियो! तुम पर सलमती हो और ये अल्लाह का वही कलाम है जो क़ुरआने अज़ीम में नाज़िल हुआ कि "*सलामुन क़ौलम मिर-रब्बि रहीम*" पस अहले जन्नत जिस वक़्त दीदारे इलाही में मश्ग़ूल होंगे तो जन्नत की किसी नेअ्मत की तरफ़ इल्तिफ़ात नहीं करेंगे जब तक कि परवर्दिगारे आलम उनसे हिजाब फ़रमा ले।

एक तवील हदीस में वारिद हुआ है जिसको जलीलुल क़द्र सहाबी हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० ने रिवायत कियाः-

जन्नत में जुमे के दिन का नाम "यौमुल मज़ीद" रखा है क्योंकि इस दिन अल्लाह तआला अपने वज्ह करीम से नक़ाब उठायेगा और जन्नती उसके जमाल को देखेंगे, लिहाज़ा दीदारे बारी तआला ही "ज़्यादा" है यानी क़ुरआन करीम में ज़्यादा से मुराद दीदारे रब है।

दीदारे बारी तआला बरोज़ क़यामत माथे की आँखों से होगी लेकिन इसकी कोई कैफ़ियत व हद बयान नहीं की गयी है। हज़रत इमाम अली करमुल्लाह वज्ह से दरियाफ़्त किया गया कि "क्या आपने अपने परवर्दिगार का दीदार किया है?" तो आपने जवाबन इरशाद फ़रमाया- "मैं इसकी इबादत किस तरह कर सकता हूँ जिसका दीदार न करूँ", तो लोगों ने अर्ज़ किया कि "आप दीदारे इलाही की कैफ़ियत बयान कीजिये" तो हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया-

अगरचे ज़ाहिरी आँखें उस ज़ाते पुर-अनवार को नहीं देखतीं मगर यक़ीनन दिल उस रब तआला को ईमान की हक़ीक़त से देखते हैं।

हज़रत जुनैद बग़दादी अलैहिर्रहमा से दरयाफ़्त किया गया कि ऐ अबुल क़ासिम! जिस वक़्त तुम अपने रब की इबादत करते हो तो क्या उसे देखते हो या फ़क़त दिल से वस्ले इलाही का यक़ीन रखते हो? तो

हज़रत जुनैद बग़दादी ने फ़रमाया- ऐ साइल (सवाल करने वाले)! हम उस रब की इबादतो परिस्तश (पूजा) नहीं करते जिसका दीदार न करें और हम उस ज़ात की भी इबादत नहीं करते जिसको आँखें देखें फिर हम उसे किस चीज़ से तशबीह दें और न हम उसकी इबादत करते हैं जिससे जाहिल हों और जहालत की बिना पर उसकी पाकी बयान करें, तो साइल ने आपसे अर्ज़ किया- तो आप किस तरह अपने रब का दीदार करते हैं? हज़रत जुनैद बग़दादी ने फ़रमाया कि "देखने की कैफ़ियत इन्सान के मुताल्लिक़ तो मालूम है लेकिन रब्बे कायनात को देखने की कैफ़ियत मजहूल है, आँखें उसे दुनियवी घर में ज़ाहिरन हरगिज़ नहीं देख सकतीं बल्कि दिल ईमान की हक़ीक़तों के ज़रिये रब को पहचानते हैं फिर नूरे इम्तिनान के मुशाहिदे के ज़रिये मआ़र्फ़त से दीदार की जानिब तरक़्क़ी करते हैं।"

किसी अहलुल्लाह (अल्लाह वाले) का क़ौल है कि मुहब्बत करने वालों के दिल अल्लाह के ज़िक्र से इत्मिनान पाते हैं और मुश्ताक़ों की रूहें अल्लाह के दीदार से सुकून पाती हैं।

ऐ अल्लाह! क़ुर्ब के बाद तेरी दूरी से हम पनाह तलब करते हैं, शहूद (एहले तसव्वुफ़ की इस्तिलाह में वो दर्जा जिसमें जल्वा-ए-हक़ बल्कि हर शय ऐने हक़ नज़र आये) के बाद तेरे हिजाब से, रौशनी के बाद ज़ुल्मत से हम तेरी पनाह तलब करते हैं, ऐ अल्लाह! तू हमें और हमारे मशाइख़ो एहबाब को अपनी मआ़र्फ़तो-मुशाहिदे और अपने वज्ह करीम का दीदार अता फ़रमाए, आमीन।



शेख़ जलाल उद्दीन रूमी की दावते-मुहब्बत

बेशक मुहब्बत कड़वे को मीठा, मिट्टी को सोना, कदूरतो-गन्दगी को साफ़ो-शफ़्फ़ाफ़, दर्दो-अलम को सिहतो-शिफ़ा, क़ैदख़ाने को जन्नती क्यारी, बीमारी को नेअ्मत और क़हरो-ग़ज़ब को रहमत बनाने वाली चीज़ है। ये मुहब्बत ही है जो लोहे को नर्म कर देती है और पत्थर को पिघलने पर मजबूर कर देती है, मुर्दा जिस्म को उठाकर उसमें ज़िन्दगी की रूह फूँक देती है। ये मुहब्बत ऐसी शय है जिसके ज़रिये माद्दी व सक़ील (भारी) इन्सान फ़िज़ाओं (हवाओं) में उड़ता है और ज़मीन की पस्तियों से आसमान की बुलन्दियों में पहुँच जाता है। जब ये मुहब्बत मज़बूत पहाड़ों में असर करती है तो पहाड़ भी काँपने लगते और वज्दो-सुरूर की मस्ती में रक़्स करने लगते हैं।

अल्लाह तआला फ़रमाता है-

> **तर्जुमा-** तो जब उसके रब ने पहाड़ पर तजल्ली फ़रमाई तो पहाड़ लरज़ गया, और (हज़रत) मूसा बेहोश हो कर गिर गये। (अल-आराफ़ : 143)

मुहब्बत ऐसी बेनियाज़ो-बेपरवा शय (चीज़) है जो हुक्मरानो-शहिन्शाहाने वक़्त की भी ज़र्रा बराबर परवाह नहीं करती, जिसने एक मर्तबा मुहब्बत की चाश्नी चख ली फिर उसके बाद उसे किसी शराब की ज़रूरत नहीं होती, सूफ़ी शायर सय्यदी जलाल उद्दीन रूमी मुहब्बत के सिलसिले में फ़रमाते हैं-

> मुहब्बत सारे आलम से बेनियाज़ होती है अगर महबूब से शग़फ़ (बे इन्तिहा मुहब्बत) रखना और उसके ग़ैर को (दिल से) निकालने का नाम जुनूनो-दीवानगी है। तो मुहब्बत तमाम मजानीन (आशिक़ों) की सरदार है, मुहब्बत

बादशाहों की बादशाह है जिसके सामने सलातीनो-शहिन्शाह के गिरोह (जमाअत) और उनके ताज झुके हुए हैं और बादशाह ग़ुलामों की तरह मुहब्बत के ख़ादिम (सेवक) बने हुए हैं। मुहब्बत आग के मिस्ल छुपी हुई शय (चीज़) है लेकिन हैरानी ज़ाहिर है, मुहब्बत निहायत नर्मो-लतीफ़ शय है मगर जानों पर हुकूमत करने वाले बादशाहों के दिल ख़ुद उसके सामने सलामी पेश कर रहे हैं।

हज़राते सूफ़िया किराम इस बात पर फ़ख़्र करते हैं कि वो अल्लाह के मोहताज हैं और अल्लाह व रसूल और औलिया अल्लाह से मुहब्बत करते हैं और जब वो इस फ़क़ीर और ग़ैरियत वाली मुहब्बत को याद करते हैं तो तर्बो-वज्द (बेख़ुदी) के आलम में रक़्स करते हैं, इसी फ़ुक़्रो-मुहब्बत के बारे में जलाल उद्दीन रूमी फ़रमाते हैंः-

अल्लाह माद्दा व जिस्म परस्त लोगों की मिल्को-अमवाल (दौलत) में बरकत दे, उनसे दुनियवी मताअ् (दौलत) से कोई चीज़ न छीने लेकिन हम मुहब्बत की दौलतो-सरवत के क़ैदी हैं जो कभी ज़ाए (बरबाद) नहीं होगी, तमाम मरीज़ अपने मर्ज़ से सेहतयाबी की आरज़ू करते हैं मगर मुहब्बत के मरीज़ मर्ज़े-मुहब्बत में इज़ाफ़ा व ज़्यादती माँगते हैं और अपने दर्दो-अलम में तरक़्क़ी चाहते हैं, किसी भी शरबत को मैंने मुहब्बत से ज़्यादा मीठा नहीं पाया और किसी सेहत को मैंने मुहब्बत की बीमारी से अफ़ज़ल (बढ़कर) नहीं देखा।

इसी तरह सूफ़ी शायर मौलाना रूम हज़राते सूफ़िया किराम की मुहब्बते इलाही को लोगों की इस्तिलाहात से मुज़य्यन करते हुए बयान करते हैं-

मुहब्बत एक बीमारी है मगर ऐसी बीमारी है कि इसके बाद हर बीमारी से ख़लासी (शिफ़ा) व छुटकारा हासिल हो

जाता है, जिसे मुहब्बत की बीमारी लग जाती है उसे फिर कोई मर्ज़ नहीं होता, इसलिये कि मुहब्बत रूह की सेहत है बल्कि सेहत की रूह है। अहले जन्नत ये आरज़ू करेंगे कि इस रूहे सेहत को अपनी जन्नत के बदले में ख़रीद लें।

हाँ ऐ बिरादरे मोमिन! जब तू रिज़्क़ व मख़लूक़ के ग़म से शिफ़ायाब होने का क़सद करे तो अपने हबीब की पनाह में चला जा, इससे मुनाजात (दुआ) कर और मदद तलब कर, यक़ीनन तू अपनी बीमारियों से शिफ़ायाब हो जायेगा दरहक़ीक़त जिसको अल्लाह तआला ने अपनी और अपने महबूबों की मुहब्बत अता फ़रमा दी तो उसे रूह सेहतबख़्श दी और हर मर्ज़ से आफ़ियत (शिफ़ा) अता कर दी।

तर्जुमा- ऐ अल्लाह हम तुझ से तेरी मुहब्बत का सवाल करते हैं और उन हज़रात की मुहब्बत मांगते हैं जो तुझ से मुहब्बत करते हैं।

सुल्तानुल आशिक़ीन सय्यदी इब्नुल फ़ारिज़ उसके बारे में फ़रमाते हैं-

तर्जुमा- अपनी फ़र्ते मुहब्बत में मुझे मज़ीद हैरानी दीजिये और एक ऐसे दिल पर रहम फ़रमाइये जो आपके इश्क़ में जल कर राख हो गया।

हर ज़माने में कुछ लोग ऐसे पाये जाते हैं जो नूरे बसीरत से महरूमी की बिना पर हज़राते सूफ़िया किराम पर नुक्ताचीनी (उंग्लियाँ उठाना) करते हैं, उन पर तोहमतें लगाते हैं और दीन में उन पर ताअ्‌ना-ज़नी करते हैं, तो ऐसे मुन्किरीन पर मौलाना जलाल उद्दीन रूमी मुहब्बत की हिमायत और इन महबूबाने परवर्दिगार के दिफ़ाअ् (बचाव) में रद्द करते हुए फ़रमाते हैं जो मुहब्बत के ऐसे मक़ामो-मर्तबे पर फ़ाइज़ हो चुके हैं कि बग़ैर इताअ्‌तो-फ़रमाँबरदारी और दिल को अल्लाह के ग़ैर की मुहब्बत से ख़ाली किये बग़ैर उन मक़ामात पर पहुँचना नामुमकिन है, फ़रमाते हैं-

मैं मुहब्बत से अफ़ज़लो-आला किसी इताअ्तो-फ़रमाँबरदारी को नहीं समझता, वो साल जो मुहब्बत के बग़ैर गुज़र जायें मुहब्बत की एक घड़ी के बराबर नहीं हो सकते।

फिर मौलाना रूम उन इल्मो-फ़िक्क़ह के मुद्दइयों (दावा करने वाले) की ख़बर लेते हैं जो सिर्फ़ हुरूफ़ को मज़बूती से पकड़े हुए हैं और आयाते-कुरआनी के मआनी की उस रूह तक पहुँचने से क़ासिर हैं जो इन आयाते क़ुरआनी को ज़िन्दगी बख़्शते हैं, आप फ़रमाते हैं-

शहीदों के ख़ून पाकीज़ा पानी से अफ़ज़ल हैं।

फिर मौलाना रूम जमाअ्ते मुहिब्बीन का दिफ़ाअ् (बचाव) करते हुए तहरीर करते हैंः-

मुहब्बत करने वालों की वो जमाअ्त है जिसने अपनी रूहो-मग़ज़ को ख़र्च कर दिया, अपने दिलों को इश्क़ की भट्टी में जलाकर फ़ना कर दिया, अब उन पर क़वानीने आम्मा नाफ़िज़ (लागू) नहीं होते हैं और वो किसी भी आम निज़ाम की ताबेदारी नहीं करते हैं क्योंकि वो महबूब की ज़ात में फ़ना हो चुके हैं जिस्म की ख़्वाहिशातो-लज़्ज़त से छुटकारा पा चुके हैं, अब वो उसी चीज़ से मुहब्बत करते हैं जिससे उनका महबूब रब्बे कायनात मुहब्बत फ़रमाता है।

मौलाना रूम सूफ़िया के गिरोह को उस उजड़े हुए गाँव से तश्बीह देते हैं जिससे ख़िराजो-जिज़्या (टैक्स) वुसूल नहीं किया जाता क्योंकि वो वीरानो-उजड़ा हुआ गाँव है, इसलिये आप फ़रमाते हैं तबाहशुदा आबादी पर ख़िराजो-जिज़िया (टैक्स) मुक़र्रर नहीं किया जाता है।

मौलाना जलाल उद्दीन रूमी इस जमाअ्त को मुख़ातिब करते हुए फ़रमाते हैं जो मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पनाह और आपके नायब उलमा-ए-आमिलीन के झण्डे के नीचे आये हुए

बग़ैर, सिर्फ़ अक़्लो-ख़िरद के ज़रिये मआ़र्फ़ते इलाही तक पहुँचना चाहते हैं, मौलाना रूम उलमा-ए-ख़ैर के गिरोह (जमाअ़त) को सफ़ीना-ए-नूह से तश्बीह देते हुए फ़रमाते हैंः-

> मुहब्बत हमारे जद्दे आला (दादा) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की मीरास (जायदाद) है और चालाकी व फ़रेब (धोखा-धड़ी) शैतान का हथियार है। चालाक व फ़रेबी हकीम अपनी अक़्लो-दानाई पर एतमाद करता है जबकि मुहब्बत ख़ुदसुपुर्दगी और सरे-तसलीम ख़म करने (झुकाने) का नाम है। अक़्ल तैराक है, उसका सवार कभी इसके ज़रिये साहिल (किनारे) से हमकनार हो जाता है (और कभी दरिया के बीच में डूब जाता है) जबकि मुहब्बत नूह अलैहिस्सलाम की किश्ती की तरह है और सफ़ीना-ए-नूह के सवारों को ग़र्क़ होने (डूबने) का कोई ख़ौफ़ नहीं होता।

जो शख़्स रब तआला की मआ़र्फ़त, अल्लाह व रसूल और अहले ईमान की मुहब्बत को तलाश और उसे हासिल करने का इरादा रखता है ऐसे शख़्स को मौलाना रूम नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं कि उसे अपने पीरो-मुर्शिद की इत्तिबा और उनकी सोहबते जलीला इख़्तियार करना चाहिये वरना वो ज़िन्दगी के इस मुज़्तरब समन्दर में डूब हो जायेगा जिसमें अन्धेरी रात की मानिन्द (तरह) फ़ितने उठते हैं।

मौलाना रूम फ़रमाते हैं-

> मैंने बहुत से लोगों को जो अच्छी तैराकी जानते थे उस ज़िन्दगी के समन्दर की गहराइयों में ग़र्क़ होते (डूबते) देखा है जबकि मुहब्बतो-ईमान की किश्ती को कभी मैंने डूबते नहीं देखा।

शेख़ रूमी मुहब्बत करने वाली जमाअ़त को इल्मो-हिकमत के ग़ोता ख़ोरों (तैरने वालों) पर फ़ज़ीलतो-बरतरी देते हैं क्योंकि इल्मो-हिकमत

क़यासो-ज़न है जबकि मुहब्बत मुशाहिदा-ए-इरफ़ान है।

जब तू महबूब न हो सके तो मुहब्बत करने वाला हो जा-

शेख़ जलाल उद्दीन रूमी रह० इन्सान की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाते हैं किः-

> हर इन्सान के लिये महबूब बनना मुमकिन नहीं क्योंकि महबूब बनने के लिये कुछ सिफ़तों और फ़ज़ीलतों की ज़रूरत होती है और वो सिफ़ातो-फ़ज़ाइल हर इन्सान को अता नहीं होते लेकिन हर इन्सान के लिये ये मुमकिन है कि वो मुहब्बत से अपना हिस्सा ले ले और उससे नेअ्मतें हासिल कर ले, लिहाज़ा जब तुझ से महबूब बनने का हिस्सा फ़ौत (ख़त्म) हो जाये तो तू मुहब्बत करने वाला हो जा, अगर तू यूसुफ़ नहीं बन सकता तो तुझे याक़ूब बनने से किसने रोका है?

मुहब्बत का हक़दार कौन है?

इस मुहब्बत का कौन हक़दार है जो ज़िन्दगी का नूर और इबादतो-रियाज़त का मग़ज़ है? यही मुहब्बत इन्सान को फ़रिश्तों की सफ़ में ला कर खड़ा कर देती है बल्कि इससे भी आगे पहुँचा देती है। क्या इस मुहब्बत का हक़दार कोई फ़ानी और हलाक (ख़त्म) होने वाली शय (चीज़) हो सकती है? जिसका अंजाम मौत हो या इस मुहब्बत की हक़दार वो ज़िन्दा-ए- जावेद रहने वाली ज़ात है जिसे कभी मौत नहीं आना है, उसी के मुताल्लिक़ शेख़ रूमी फ़रमाते हैं-

> ज़िन्दा-ए-जावेद रहने वाली मुहब्बत उसी ज़ात के लिये सज़ावार है जो ज़िन्दा-ए-जावेद रहे और जिस शय के लिये फ़ना (ख़त्म) व ग़ुरूब (डूबना) लिख दिया गया है उसे ये मुहब्बते दायमी (हमेशा रहने वाली) हुस्न आरा (सँवार) नहीं कर सकती। ये मुहब्बत उस ज़िन्दा-ए-जावेद

का हक़ है जो कभी मौत से हमकनार न हो और ये वही ज़ात है जिसका हर मौजूद पर फ़ैज़ान है।

शेख़ रूमी हमें हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के क़िस्से के ज़रिये नसीहत फ़रमा रहे हैं जिस वक़्त उन्होंने अपनी क़ौम पर हुज्जत क़ाइम की कि उनके बुत इबादत के हक़दार नहीं हैं क्योंकि उन्हें फ़ना व हलाक होना है जैसा कि अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम के क़ौल की हिकायत बयान की कि "मैं ग़ुरूब (ख़त्म) होने वालों को पसन्द नहीं करता।"

शेख़ रूमी आगे फ़रमाते हैं-

यक़ीनन मुहब्बत साहिबे मुहब्बत की रगों में ख़ून बनकर दौड़ती है, अगर मुहब्बत अपने महल में हो और अपने अहल को पा ले तो दरहक़ीक़त मुहब्बत वो आफ़ताब है जो कभी डूब नहीं सकता और ऐसी तरो-ताज़गी-ओ-शादाबी है जिसको उदासी तबाह नहीं कर सकती, लिहाज़ा इस अबदी (हमेशा रहने वाली) मुहब्बत को मज़बूती के साथ थाम ले, बक़िया हर चीज़ जो तेरे इर्द-गिर्द जामों में घूम रही है और तेरी तिश्नाकामी (प्यास) को सैराब कर रही है, अनक़रीब (बहुत जल्द) फ़ना का जाम पी कर ख़त्म हो जायेगी। तो इसी मुहब्बत को लाज़िम पकड़ ले जिसके ज़रिये अंबिया-ए-किराम ने सरदारी फ़रमाई।

मुहब्बत करने वाली जमाअ़त (यानी हज़रात सूफ़िया किराम) न मायूस होते हैं और न ही मुहब्बत की बुलन्दी और उसके सारे जहाँ से बेपरवा होने के सबब गिला व शिकवा और उज़्र बयान करते हैं, इसलिये कि अल्लाह तआला उसकी रहमत से मायूस होने वालों और उसके दीदार से नाउम्मीद होने वालों को पसन्द नहीं फ़रमाता है जैसा कि उसका इरशादे आली है- *"अपने रब की रहमत से सिर्फ़ राहे-रास्त से भटके हुए ही नाउम्मीद होते हैं।"* (अल-हजर : 56) अल्लाह तआला तो उस

शख़्स के लिये रुश्दोहिदायत की राह खोल देता है जो सच्चे दिल से अल्लाह तआला की तरफ़ झुकता है, जैसा कि हदीसे क़ुदसी में हैः-

(ऐ बन्दे!) अगर तू मेरी जानिब पा प्यादा (पैदल) चलता हुआ आयेगा तो मैं तेरे पास दौड़ता हुआ आऊँगा।

मौलाना रूम सैर इलल्लाह को अपने क़ौल के ज़रिये बयान करते हैं-

महबूबे हक़ीक़ी वो ज़ाते अक़दस है जो इस बात को पसन्द करे कि उससे मुहब्बत की जाये और वो अपनी जानिब उस शख़्स को खींच लेता है जो उसकी तरफ़ जज़्ब का इरादा करता है।

शेख़ रूमी अल्लाह के इस क़ौल से शहादत लेते हैं- *"अल्लाह अपने लिये मुन्तख़ब कर लेता है जिसको चाहता है और अपनी जानिब उसी को राह दिखाता है जो रुजूअ् (लौटने) का इरादा करता है।* (अश्शूरा : 13)" फिर मौलाना रूम बड़े जुर्रअ्तमन्दाना लहजे (बहादुराना अंदाज़) में फ़रमाते हैं-

तुम ये मत कहो कि मैं एक ज़लीलो-कमतर बन्दा हूँ, जलीलुल क़द्र बादशाहे बेनियाज़ की बारगाह तक रसाई की क़ुदरत नहीं रखता क्योंकि वो करीम बादशाह ख़ुद अपने बन्दे को दावत देता है और राह को आसान फ़रमा देता है।

मौलाना रूम फ़रमाते हैंः-

जो मुहब्बत का इरादा करेगा और राहे महबूबियत पर चलेगा तो जल्द ही वो हमेशगी व मदावमत और परेशानियों को बरदाश्त करके मन्ज़िले मक़सूद को हासिल कर लेगा बज़ाहिर मुहब्बत बीमारी और तकलीफ़दह चीज़ नज़र आती है मगर बातिन में वो हर बीमारी की दवा है। देखने वाले के लिये वो ऐसा मर्ज़ है जिसका इलाज दुश्वार

(नामुमकिन) है और साहिबे मुहब्बत सख़्तियों और मशक़्क़तों (परेशानियों) में है लेकिन जब मुहिब्ब इन तकलीफ़ों को बरदाश्त करता है और इस पर साबित क़दम रहता है तो वो अबदी हक़ीक़त तक पहुँच जाता है।

मुहब्बत के रहने की जगह मुख़लिस व ज़ख़्मी दिल है। ये ऐसा मर्ज़ है जिसके बराबर कोई मर्ज़ नहीं। मुहब्बत की बीमारी हर बीमारी से जुदा होती है इसलिये कि ये मुहब्बत अल्लाह तआला के इसरारो-रुमूज़ (राज़) के हासिल करने में मुईनो-मददगार होती है।

मौलाना रूम फ़रमाते हैं-

मुहब्बत अगरचे एक नफ़्सी बीमारी है लेकिन ये इमराज़े नफ़सानिया और ख़िल्क़ी बीमारियों के लिये शिफ़ा है, वो इमराज़ जिनसे अतिब्बा (हकीम) आजिज़ आ गये और जिन से सेहतयाबी दुश्वार हो गई और चारागरों ने इस मर्ज़ के ठीक होने की उम्मीद ख़त्म कर ली, ऐसे इमराज़ मुहब्बत के ज़रा से शहद से दूर हो जाते हैं और वो बीमार जो अपनी बीमारी से मायूस हो चुका था जब सेहतयाब हो जाता है तो सुरूरो-तर्ब में पुकारता है- "ऐ मुहब्बते बे नियाज़, ऐ मेरे मर्ज़ो-बीमारी के तबीब, ऐ मेरे नफ़्सो-जिगर की दवा, ऐ मेरे ग़म का मदावा, अल्लाह तुझे आबादो ज़िन्दा रखे।"

मुहब्बत और तौहीद-

इसमें कोई शको-शुबह नहीं कि हज़राते सूफ़िया किराम की सैर का मक़सद हक़ीक़ी ख़ुदा की मुहब्बत में डूब कर तौहीदे ख़ालिस हासिल करना है, यहाँ तक कि उनके दिलों में सिवाये अल्लाह के किसी शय की मुहब्बत नहीं रहती, उनके दिल सिर्फ़ माबूदे हक़ीक़ी के लिये धड़कते हैं, लिहाज़ा ज़िक्र (यानी ज़िक्रे इलाही) दिल को अग़ियार (ग़ैरों) से पाक कर

देता है और ये हज़रात दिल में सिवाय अल्लाह के किसी महबूब के वुजूद को ऐसी बीमारी तसव्वुर करते हैं जो लाइलाज है और ग़ैर की मुहब्बत को हिजाब (पर्दा) समझते हैं जो मआर्फ़ते हक़ से दूर रखती है। लिहाज़ा सख़्त दिल वो है जिस पर दुनिया की मुहब्बत, मालो-सरवत, औरतों और जाहो-हशम (मनसब) की तमन्नाओं के पर्दे पड़े हों, ज़िक्रे इलाही दिल की जिला (ज़िन्दगी) है जो दिल से ग़मों को ख़त्म कर देता है। इसी माअ़नी में सय्यद शेख़ मुहम्मद हाशमी रह० ने फ़रमायाः-

तर्जुमा- जब दिल अग़ियार (ग़ैरों) की वजह से सख़्त हो जाये तो ज़िक्र (अल्लाह) कर ताकि बारी तआला के सिवा (दिल में) कोई चीज़ बाक़ी न रहे।

किसी सूफ़ी शायर ने फ़रमायाः-

तर्जुमा- अगर दिल अनवारे इलाही (अल्लाह के नूर से) से ख़ाली हो तो ज़िक्र अग़ियार (ग़ैरों) की ज़ुल्मतों और तारीकियों (अंधेरों) को दूर कर देता है।

इसी माअ़ना के सिलसिले में मौलाना रूम फ़रमाते हैंः-

मुहब्बत एक शोला है जब वो भड़कता है तो महबूब के सिवा हर चीज़ को जलाकर ख़ाक कर देता है तो किब्रो-तकब्बुर (घमंड), बुज़दिली, बुख़्ल (कंजूसी), ख़ौफ़ो हिरास, हुज़्नो-मलाल (ग़म), हसदो-बुग़्ज़ में से कोई चीज़ बाक़ी नहीं रहती है, यक़ीनन मुहब्बत एक शोला है जो महबूब के अलावा हर चीज़ को जलाकर राख कर देता है और इसी को मुहब्बत में तौहीद कहते हैं। फिर मुहिब्ब महबूब के सिवा किसी की जानिब मुतवज्जह नहीं होता है। फ़रमाने ख़ुदावन्दी है- "आगाह हो जाइये दीन ख़ालिस अल्लाह के लिये है। (अज़्ज़ुम्र : 3)" लिहाज़ा तौहीद एक तलवार है कि जब साहिबे तोहीद इसे (म्यान से) बाहर निकालता है

तो सिवाय ज़ाते परवर्दिगार के हर चीज़ को काट देता है। फिर आख़िर में आरिफ़े कामिल शेख़ जलाल उद्दीन रूमी मुहब्बते इलाही के मआ़नी के समझने में कमी का एतराफ़ करते हुए फ़रमाते हैंः-

बेशक हिकायते मुहब्बत की कोई इन्तहा नहीं, दुनिया फ़ना हो जायेगी मगर मुहब्बत के अजायबात ख़त्म नहीं होंगे, इसलिये कि दुनिया की इन्तहा और ह़द है मगर मुहब्बत उस ज़ाते अक़्दस का वस्फ़ (ख़ूबी, बड़ाई) जो कभी फ़ना (ख़त्म) नहीं होगी और उस पर कभी मौत तारी नहीं हो सकती।

मुहब्बत का रास्ता-

मुहब्बत की राह (रास्ता) अक़्ल है या दिल ? हज़राते सूफ़िया किराम मुहब्बत का रास्ता उस बेदार दिल को मानते हैं जो ह़रारत (गर्म जोशी) और निशातो-फ़रहत (ताज़गी व ठण्डक) से भरा हो, ये बेदार दिल इतना बड़ा होता है जिसकी हुदूद को नहीं पाया जा सकता। ये दिल जन्नत के मिस्ल है जिसके बारे में इरशादे ख़ुदावन्दी है- (तर्जुमा) "*जन्नती फ़ल दायमी (हमेशा के लिये) हैं और उनका साया हमेशा है* (राअ्द : 35)" जन्नती नेअ्मत कभी ख़त्म नहीं होगी और जन्नती नहरों का पानी कभी ख़त्म नहीं होगा। (तर्जुमा) "*जन्नती बाग़ात अपने रब के हुक्म से हर वक़्त फल देते हैं* (इब्राहीम : 25)" दुनियवी बाग़ात तबाही-ओ-बरबादी का शिकार हो जाते हैं, जिस्म का बाग़ीचा घास-फूस बन जाता है, इसको हवायें उड़ा देती हैं और बाग़ वाला अपनी मेहनतो-लागत पर कफ़े अफ़सोस मलता है- (तर्जुमा) "*काश मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं करता* (कहफ़ : 42)" बहरकैफ़ दिल का बाग़ीचा हमेशा सरसब्ज़ो-शादाब (हरा-भरा) और फलदार रहता है और साहिबे दिल कहता है- (तर्जुमा) "*काश मेरी क़ौम जान लेती कि मेरे रब ने मेरी बख़्शिश फ़रमा दी और मुझे मुकर्रम बना दिया* (यासीन

: 26, 27)"।

मौलाना जलाल उद्दीन रूमी तहरीर करते हैंः-

> तू दिल की हिफ़ाज़त कर यहाँ तक कि तू ऐसा क़वी (ताक़तवर) नौजवान हो जाये जिसके चेहरे में नूर की शुआयें (किरनें) रक़्स करें तो चेहरा चमकने लगे, तू दिल की निगहबानी करता रह ताकि तरो-ताज़ा मुस्कुराते हुए फूल की मानिन्द तेरी ज़िंदगी का सरमाया बाक़ी रहे।

लेकिन इन सिफ़ाते जलीला का हामिल दिल कहाँ है?

ऐ भाई! लफ़्ज़े क़ल्ब (दिल) तुझे फ़रेब में मुब्तिला न कर दे क्योंकि दिल ख़्वाहिशात, हिरसो-तमअ् (लालच) की आमाजगाह (रहने की जगह) है, सख़्त दिल मुहब्बत के माअ़ना से आशना नहीं हो सकता, बल्कि अज़आनो-तैक़न के माअ़ना से नावाक़िफ़ रहेगा, सख़्तो-दरुश्त दिल यहूदी की क़ब्र की मानिन्द तंगो-तारीक है, जिसके वास्ते मुल्के-वहाब की जानिब से ख़ैर का कोई हिस्सा नहीं है, ऐसे दिल में न इन्शिराह पैदा हो सकता है न वो किसी को रौशनी दे सकता है और न ही ख़ुद उसमें ज़िन्दगी पैदा हो सकती है।

वो दिल जो हक़ीक़ी इश्क़ो-मुहब्बत से ख़ाली है और दुनियवी मालो-दौलत, फ़ानी जाहो-मन्सब की मुहब्बत से भरा है, ऐसा दिल यहूदी की क़ब्र की मानिन्द है जो बाहर से ख़ूबसूरत व सजी है और अन्दर से अंधेरों का घर है जिसमें चन्द बोसीदा हड्डियाँ और ग़िलाज़तो-बदबू पड़ी हुई है। मुर्दा दिल और ज़िन्दा दिल दोनों में फ़क़त लफ़्ज़ी इश्तिराक और जिस्मी तशाबह पाया जाता है, जैसा कि एक पानी है जो साफ़ो-शफ़्फ़ाफ़ चश्मों से जारी हो जाता है और छोटी बड़ी नहरों से गुज़रता हुआ बहता है और दूसरा वो पानी है जो कीचड़, गन्दगी-ओ-ग़िलाज़त से भरा हुआ है, दोनों को पानी कहा जाता है लेकिन दोनों पानी जौहरी एतबार से मुख़्तलिफ़ हैं, अगरचे नामो-मज़हर में एक नज़र आते हैं, इसलिये कि

अव्वल तो साफ़ पानी से प्यासा अपनी प्यास बुझाता है, वो पानी कपड़े पाको-साफ़ करता है, इसके ज़रिये तहारत हासिल की जाती है, इसका इस्तेमाल खाना पकाने में किया जाता है। दूसरा यह कि गन्दा पानी जिस्म व कपड़े वग़ैरा को नापाक कर देता है ओर इमराज़ (बीमारियों) और वबाओं के फैलाने की वजह बनता है।

शेख़ जलाल उद्दीन रूमी इसके मुताल्लिक़ फ़रमाते हैंः-

तू कहता है मेरा दिल! क्या तू इस बात से वाक़िफ़ है कि दिल आसमानी अमानत है, इसमें कोई शक नहीं कि वो दिल (ख़ून की शक्ल में) पानी से भरा है लेकिन क्या तू ऐसे पानी में अपने हाथ धोना पसन्द करेगा जो कीचड़ और गन्दगी से आलूदा हो, लिहाज़ा वो चीज़ जो तुम्हारे सीने में धड़क रही है उसे दिल मत कहो क्योंकि हक़ीक़ी दिल तो वो है जो बुलन्दो बाला आसमानों के निज़ामे मलकूत की तरफ़ मैलान (झुकाव) रखता है और इस शान का दिल तो अंबिया व मुर्सिलीन और औलिया-ए-कामिलीन का हुआ करता है।



हज़राते सूफ़िया की नज़र में इन्सान का मर्तबा

मौजूदा मुआशरे में इन्सान की क़दरो-मन्ज़िलत पैहम इन्हितातो-पसमान्दगी का शिकार हो रही है, उसकी इस हालत पर कफ़े अफ़सोस मलना पड़ रहा है, जब इन्सान को अपनी तबाही व बरबादी का पता चलाता है तो उसके आसाब इज़्तिराबो बेचैनी की कैफ़ियत से दो चार होकर टूट जाते हैं, यहाँ तक कि इन्सान जानवरों की आज़ादी और जमादात की पुरसुकूनो-सलामती वाली ज़िन्दगी वाली ज़िन्दगी पर रश्क करने लगता है, इसलिए कि मुआ़शरा इन्सानियत का क़द्र शनास नहीं रहा और न ही मुआ़शरे को इन्सान की क़दरो-मन्ज़िलत का एतराफ़ है। ये मुआ़शरा पसमान्दगी के समन्दर में ग़ोता-ज़न होकर (डूबकर) इस फ़ितरते सलीमा से मुन्हरिफ़ (अलग) हो चुका है जिस पर अल्लाह तआला ने उसकी तख़लीक़ (पैदाइश) फ़रमाई थी और उसने नफ़्से इन्सानी में वो मुफ़सिद माद्दा पैदा कर दिया जिसके सबब इन्सान अपने आग़ाज़ के इन्कार पर तुला है और अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलातो वस्सलाम के तरीक़ पर चलने से मुँह मोड़ रहा है।

ऐ बिरादरे मोमिन! तुम हर ज़माने में सूफ़िया किराम की राह के सालिकीन को पाओगे कि वो इस कजरवी (टेढ़ेपन) और बे राह-रवी (भटकाव) को दुरुस्त करने के लिये खड़े होते हैं और दुरुस्तो सही इस्लाम पेश करते हैं जो हर क़िस्म की ख़ुराफ़ात और इस टेढ़ और कजी से ख़ाली होता है जो गुमराह क़ौमों और गिरोह ने इसमें पैदा कर दी हैं, ये राहे तरीक़त के मुजाहिदीन इन्सान को उसकी करामतो बुज़ुर्गी का अज़सरे नौ ताज पहनाते हैं और मआ़शरे के इफ़्कारो-नज़रियात को दुरुस्त करते हैं। इन्हीं सालिकीन में मौलाना जलालउद्दीन रूमी की ज़ात भी नुमायाँ नज़र आती है जो अहले तसव्वुफ़ की ज़बान बोलते हैं,

इन्सान की करामतो-फ़ज़ीलत का तराना गाते हैं और सारी मख़लूक़ को उसकी शराफ़तो-बुज़ुर्गी की याद दिलाते हैं और बारी तआला का फ़रमान- *"बेशक हमने इन्सान को बेहतरीन सूरत पर पैदा किया।* (अत्तीन : 4)", *"और हमने आदम की औलाद को बुज़ुर्गी दी"* इन्सानियत को बार बार सुनाते हैं।

शेख़ रूमी उस इन्सान को मुख़ातब करते हुए फ़रमाते हैं जो अपनी क़दरो-मन्ज़िलत को हल्का जानता है और अपने मर्तबा व मक़ाम से नावाक़िफ़ हैः

> ऐ ग़ाफ़िल इन्सान! अल्लाह तआला ने तुझे ताजे करामत पहनाया और अपने फ़रमान *"वलक़द कर्मना बनी आदम* (अल-असरा : 70)" से ख़ुसूसियत अता की और तुझे एक ख़ास इनआम बख़शा यानी उसने फ़रमाया- *"अअ़तैनाक* (हमने तुझे अता किया)" लफ़्ज़ *अअ़तैनाक* का कल्मा अल्लाह ने तुझ से पहले किसी के लिये इरशाद नहीं फ़रमाया।

मौलाना रूम आगे फ़रमाते हैं-

> यक़ीनन इस कायनात का ख़ुलासा और आलम की तमाम ख़ूबियों का मग़ज़ इन्सान है, इस छोटे से जिस्म में वो तमाम भलाइयाँ, ख़ज़ाने और अजीबो-ग़रीब चीज़ें मौजूद हैं जो आलम में पाये जाते हैं, ये एक ऐसा छोटा ज़र्रा है जिसमें आफ़ताब की शुआएँ (किरणें) पड़ती हैं और जब आफ़ताब (सूरज) निकलता है तो कोई सितारा ज़ाहिर नहीं होता। इंसना एक ऐसा छोटा सा क़तरा है जिसमें इल्मो-हिकमत का समन्दर ठाठें मार रहा है, तीन गज़ के जिस्म में पूरा आलम सिमटा हुआ है।
>
> **तर्जुमा-** क्या तू ये गुमान करता है कि तू एक छोटा सा

जिस्म है हालांकि तेरे अन्दर आलमे अकबर समाया हुआ है।

इन्सान इस मख़लूक़ की ग़रज़ है, इसी लिये अल्लाह तआला ने आलम का कारख़ाना ईजाद (पैदा) किया, इन्सान वह कुतुब है जिसके इर्द-गिर्द कायनात की चक्की घूम रही है।

शेख़ रूमी आगे फ़रमाते हैंः-

इन्सान जौहर है और फ़लक अर्ज़ है (ऐ इन्सान) तेरे सिवा हर चीज़ फ़ना होने वाली है तो मक़सूदो मुराद है, तेरी ख़िदमत करना तमाम मख़लूक़ पर लाज़िम क़रार दिया गया, ये शर्मिन्दगी की बात है कि एक जौहर किसी अर्ज़ के सामने झुके और उसके आगे सज्दा रेज़ हो, इरशादे बारी है कि "अल्लाह ने आसमानो ज़मीन की तमाम चीज़ें तेरे क़ाबू में और ताबेदार की हैं। (अल-जाशिया : 13)"

शेख़ साअ्दी शीराज़ी फ़रमाते हैंः-

चाँद व सूरज, सितारे, बारिश, हवायें, हमवार ज़मीन और पहाड़ तमाम अपने पैदा करने वाले के इताअ्त गुज़ार व फ़रमाँबरदार हैं और (ऐ इन्सान!) तेरी ख़िदमत के लिये हर वक़्त तय्यार हैं लेकिन ये इन्साफ़ो दयानत की बात नहीं है कि तू अपने ख़ालिक़ का फ़रमाँबरदार न हो।

मौलाना रूम फ़रमाते हैंः-

बेशक इन्सान सिफ़ाते इलाहिया का मज़हर है, वो एक ऐसा सच्चा आईना है जिसमें रब्बे बेनियाज़ की निशानियाँ जलवागर होती हैं।

मौलाना रूम इन्सान का अज़ीमुश्शान जलीलुल क़द्र मर्तबा-ओ-मक़ाम बयान करने के बाद सवाल करते हैंः-

क्या कोई जुर्रअ्त कर सकता है कि इस महंगे इन्सान की

क़ीमत लगाये और उसे अपने नफ़्स के बेचने की आरज़ू दिलाये? क्या ये बात जायज़ है कि जिसकी इतनी आ़ला क़ीमत हो वो अपनी ज़ात को बेच दे।

फिर मौलाना रूम इन्सान से ख़िताब करते हुए फ़रमाते हैंः-

बेशक अल्लाह तआला ने हमें ख़रीद लिया है और क़यामत तक हमें भाव और क़ीमत लगाने से ख़लासी अता कर दी और कोई चीज़ दो मर्तबा बेची नहीं जाती। अल्लाह तआला फ़रमाता है- (तर्जुमा) "अल्लाह ने मोमिनीन से उनकी जानो-माल जन्नत के बदले में ख़रीद लिये। (तौबाः 111)"

फिर मौलाना रूम इन्सान को ग़ौरो-फ़िक्र करने पर उभारते हैं ताकि वो अपनी क़ीमत पहचाने और सबसे अकरमो आज़म मुश्तरी (ख़रीदने वाला) के सिवा किसी के हाथ पर बिकने पर राज़ी न हो और वो अज़ीम मुश्तरी अल्लाह तआला की ज़ाते मुबारक है। मौलाना रूम फ़रमाते हैंः-

अगर तू तलाशो-जुस्तजू करने वाला है तो अपने इस ख़रीदने वाले की तलाश में निकल जा, जिसे तेरी तलब है और जो तुझे तलाश कर रहा है, इसी मुश्तरी से तेरी इब्तिदा है और उसी की जानिब तेरी इन्तिहा है।



आख़िरी बात

ऐ बिरादरे मोमिन! हम मुहब्बत परवर्दिगारे आलम को एक अज़ीम मक़सद समझते हैं जिसे हासिल करने के लिये साहिबे ईमान को कोशिश करना चाहिये ताकि उसका ईमान पुख़्ता (मज़बूत) हो और तकमील को पहुँचे और वो बारी तआला की रज़ा-ओ-मआ़र्फत और क़ुर्ब पाकर दायमी कामयाबी से हमकनार हो, इसके लिये हमें सूफ़िया किराम की अज़ीम जमाअ्त नज़र आती है जिनको अल्लाह ने ये बुलन्दो-बाला मक़ाम अता फ़रमाया और जब उनके दिल में सिद्क़ो-सफ़ा और सिर्फ़ अल्लाह की मुहब्बत पैदा हुई तो उनकी रूहें मुहब्बते इलाही के जाम से मदहोश हो गईं और उनके दिलों में ख़ालिक़े कायनात से मुलाक़ात का जज़्बा उभरा तो हक़ तबारक व तआला ने उन्हें क़ुर्बो-विसाल की बशारत (ख़ुशख़बरी) से नवाज़ा। इसी ज़ौक़ो-जज़्बे ने हज़राते सूफ़िया किराम को महबूबे इलाही के साये में इत्मीनानो-रज़ा की मन्ज़िल पर पहुँचा दिया और उन्होंने रूहानी लज़्ज़तों का मज़ा चख लिया कि दुनियवी लज़्ज़तें उनके सामने बेकार हैं, वो रब्बे कायनात की मअ़इयत (हमराही) में ख़ुश होते हैं, उसके क़ुर्ब से लुत्फ़- अन्दोज़ होते हैं, उसके ज़िक्र से उन्स हासिल करते हैं और अल्लाह तआला की जूदो-सख़ा को महसूस करते हैं, फिर अल्लाह उनसे राज़ी हो गया और वो अपने रब से राज़ी हो गये, ख़ल्लाक़े आलम उनसे मुहब्बत करता है और वो उस से मुहब्बत किया करते हैं। जब अल्लाह ने उनको अपना महबूब बना लिया और उनसे राज़ी हो गया तो इन बन्दों को अपने लिये मुन्तख़ब कर लिया, यही औलिया-ए-किराम अल्लाह की कुल मख़लूक़ का ख़ुलासा हैं और उसके मुहिब्बीन में भी ख़ास हैं। इन हज़राते सूफ़िया के सिलसिले में कहे गये अश'आर का तर्जुमा पेश कर रहे हैं-

तर्जुमा- अल्लाह के कुछ वो बन्दे हैं जिन्होंने उससे ख़ूब मुहब्बत की तो अल्लाह तबारक व तआला ने ख़ादिम की हैसियत से उन्हें मुन्तख़ब कर लिया और उनसे राज़ी हो गया।

तर्जुमा- ये अल्लाह वालों का वो गिरोह (टोली) है कि जब रात की तारीकी (अंधेरा) उन पर छा जाती है तो उन्हें सज्दा-रेज़ और इबादत में मशग़ूल देखा जाता है।

तर्जुमा- ये अपनी रातों में ज़िक्रे इलाही से लुत्फ़-अन्दोज़ होते हैं और दिन में रोज़ा रख कर तकलीफ़ बरदाश्त करते हैं।

तर्जुमा- ये हज़रात दुनियवी दुल्हनों के बदले में उख़रवी (आख़िरत) हूरों से नवाज़े जायेंगे और जन्नती ख़ेमों (महलों) को अपना ठिकाना बनायेंगे।

तर्जुमा- और इनकी आँखें उस चीज़ से ठंडी होंगी जो उनके वास्ते मख़फ़ी (पोशीदा) रखी गयी है और रब्बे जलील से सलामती का पैग़ाम सुनेंगे।

व सल्लल्लाहु अ़ला ख़ैरि ख़लक़िही व नूरि अर्शिही मुहम्मदिंव व आलिही व असहाबिही अजमईन.

व आख़िरु दअ़वाना अनिल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन.

